स्वाधीनता आन्दोलन और महिला सहभागिता:
एक विवेचनात्मक अध्ययन
(सन्दर्भ जनपद हमीरपुर एवं महोबा, उ.प्र.,1920-1947)
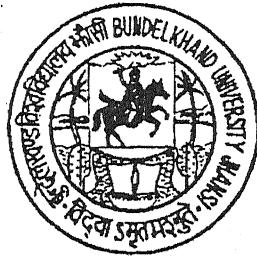
राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच०डी० उपाधि हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ,झांसी में प्रस्तुत
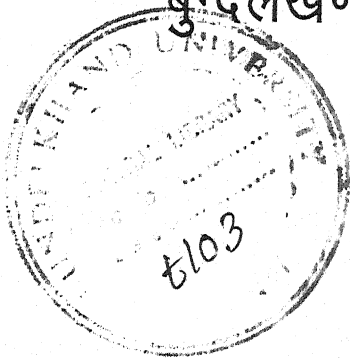
2002

शोध निर्देशक
डॉ० भवानीदीन
रीडर-राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर, उ०प्र०

गवेषक :
सत्यप्रकाश गुप्ता
नेशनल चौराहा रोड,
मौदहा, हमीरपुर, उ०प्र०

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झांसी

डॉ० भवानीदीन
रीडर— राजनीतिविज्ञान

☎ (05282), 22367 (0) 43118 (R)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर, उ०प्र०
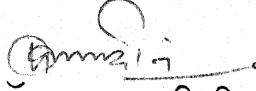
प्रमाण—पत्र

प्रमाणित किया जाता कि श्री **सत्यप्रकाश गुप्ता** निवासी मौदहा, हमीरपुर ने पी.—एच.डी. उपाधि हेतु शोध—कार्य मेरे निर्देशन में किया है, इनका शोध—प्रबन्ध **''स्वाधीनता आन्दोलन और महिला सहभागिता'' एक विवेचनात्मक अध्ययन (सन्दर्भ जनपद हमीरपुर एवं महोबा, उ०प्र०)** मेरी दृष्टि में मौलिक तथा पी.—एच.डी. की उपाधि हेतु पूर्णतः उपयुक्त है ।

वर्ष २००२

डॉ० भवानीदीन
शोध—निदेशक

आमुख

अन्दरूनी कलह, आपसी रागद्वेष तथा स्वार्थपरता किसी भी राष्ट्र की आजादी के अवसान के अपकारक होते हैं, लगभग दो सदियों तक इन्ही कलुष कारणों के फलस्वरूप भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहा। अनीति एवं अधर्म से दमित, त्रसित एवं थकित जनता गुलामी के बंधन से मुक्त होने के लिए स्वाधीनता संग्राम का ताना–बाना बुनने लगी। स्वातन्त्र्य चेतना के इसी उद्‌भूत भाव ने भारत के भावी संघर्ष के लिए पूर्वपीठिका बनायी। कुछ समय बाद सारा देश संघर्षी भावना से भर उठा।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष का स्वरूप भिन्न–भिन्न रहा है, स्वाधीनता के सामरिक संचलन ने कई सोपानों को पार किया है, किन्तु उसे गंतव्य की उपलब्धि गांधी–काल में हुई, क्योंकि स्वतन्त्रता के वैश्विक संघर्ष के फलक में गांधी तकनीक के आरेख का कोई सानी नहीं रहा। गांधी–आन्दोलन दुनिया के सांग्रामिक इतिहास में अपने ढंग का लड़ा जाने वाला एक अहिंसक संग्राम था । स्वतन्त्रता प्राप्ति की यह प्रयोगधर्मिता गांधी जी का अनोखा अन्वेषण था। भारत के मुक्ति संग्राम में देश के हर क्षेत्र ने यथा सामर्थ्य अपना–अपना क्षात्रधर्म निभाया था। देश के प्रान्तों में जहाँ उत्तर प्रदेश ने स्वाधीनता आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभायी, वहीं इसी प्रान्त के बुन्देलक्षेत्र (उ०प्र०) ने भी संघर्षी शंखनाद करने में कोई कोर–कसर नही छोड़ी।

सत्तावनी हुँकार के पहले जैतपुर, हमीरपुर (अब महोबा) ने १८४२ में ही आजादी का बिगुल फूँक दिया था, तत्पश्चात १८५७ में बुन्देलखण्ड के स्वातन्त्र्यधर्मी अनुदाय से कौन अपरिचित है? इस तरह बुन्देलखण्ड आन्दोलन के हर काल में अपनी अग्नि धर्मा अगुवाई को अंकित कराता कई पड़ावों को पार करता हुआ जब गांधी काल में पहुँचा तो उसे इस नर रत्न प्रसूता धरती से अनेक ऐसे पुरोधा मिले, जिन्होंने यहाँ की संघर्षी सहभागिता को नया आयाम प्रदान किया।

भारतीय आजादी के सांग्रामिक इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य सुस्पष्ट हो जाता है कि पुरोधत्वधर्म मात्र मनुष्यों का ही मोहताज नहीं रहा, इतिहास गवाह है कि समर भूमि में केवल पुरुषों ने ही अपने पुरुषार्थ का प्रकाशन नहीं किया है अपितु रणरांगण में रणचण्डी बन महिलाओं ने भी अद्भुत रणकौशल दिखाया है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा भले ही अविकसित एवं पिछड़े हुए जनपद हो किन्तु संघर्षी अवदान के क्षेत्र में इनका गौरव–ग्राफ काफी ऊँचा रहा है। अध्ययनों के तुलनात्मक निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि बुन्देलखण्ड में महिलाओं की स्वातन्त्र्यधर्मी सहभागिता से सम्बंधित अध्ययनों का अभी भी अभाव है, जहाँ तक हमीरपुर एवं महोबा जनपदों की महिलाओं के स्वाधीनता आन्दोलन में प्रतिभागिता के उल्लेख का प्रश्न है तो वह

नगण्य है। ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र की महिलाओं की आन्दोलनात्मक अगुवाई के अध्ययन की अतीव आवश्यकता है। यह शोध–प्रबन्ध इसी अभाव की पूर्ति का एक प्रयास है।

बुन्देलखण्ड के हमीरपुर तथा महोबा जनपदों के पुरुष सेनानियों ने ही सामरिक हुँकार नहीं भरी थी अपितु यहाँ बुन्देलखण्ड केसरिणी रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी, कान्ती देवी, भुवनेश्वरी देवी, सरयूदेवी एवं मनोरमा देवी तुल्य अनेक महिलाओं ने पूरी सिद्दत के साथ आजादी का अलख जगाया है किन्तु इन वीर महिलाओं के संघर्षी पहचान के अछूते, अनजाने एवं अज्ञात तथ्यों की ओर किसी शोधार्थी का अभी ध्यान नहीं गया, यद्यपि स्फुट रूप में यत्र–तत्र कुछ तथ्य इन वीरांगनाओं के सम्बन्ध में अवश्य मिल जाते है किन्तु प्रामाणिकता के अभाव में वे जनजीवन के विश्वनीय तथा प्रेरणा के स्रोत नहीं बन सके हैं। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए मैनें अपने शोध का विषय– ''स्वाधीनता आन्दोलन और महिला सहभागिता'' एक विवेचनात्मक अध्ययन (सन्दर्भ जनपद हमीरपुर एवं महोबा, उ०प्र०, १९२०–१९४७) चयन किया है।

शोध–प्रबंध के अध्ययन में मौलिक रचनाओं एवं सहायक ग्रंथों के अध्ययन का सहारा लिया गया है। इसमें तत्कालीन तथा अर्वाचीन जर्नल्स, पत्रिकाओं एवं समाचारपत्रों का भी अध्ययन कर सन्दर्भ दिये गये है । यह शोध–प्रबन्ध

साक्षात्कार एवं पुस्तकालय अध्ययन—पद्धति पर आधारित है । पूरे शोध—प्रबंध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

प्रथम अध्याय मे गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन में हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिलाओं ने सामरिक क्षेत्र में वीरोचित धर्म को निभाते हुए शानदार भूमिका निभायी। बुन्देलखण्ड के महान स्वातन्त्र्य सेनानी दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी ने पर्दा प्रथा त्यागकर स्वातन्त्र्य समर में तरस्विता के तल्ख़ तेवर दिखाकर हम्मीरी एवं महोबवी महिलाओं के सामरिक सहयोग को एक नया आयाम प्रदान किया। किशोरी देवी, कान्ती देवी, भुवनेश्वरी देवी, सरयूदेवी, तथा उर्मिला देवी जैसी कई वीर महिलाओं ने सत्याग्रह आन्दोलन में आयुधी अगुवाई की।

दूसरे अध्याय में झण्डा सत्याग्रह में हमीरपुर एवं महोबा की महिला सेनानियों की सहभागिता का उल्लेख है। झण्डा सत्याग्रह के अन्तर्गत इन जनपदों की महिलाओं ने जिस उत्साह एवं ऊर्जा के साथ झण्डा आन्दोलन मे भाग लेकर जेलयात्रा की, उतनी संख्या में शायद ही प्रान्त के किसी अन्य जनपद की महिलाये जेल गयी हों। रानी राजेन्द्र कुमारी के यहाँ की लगभग पचास महिला सेनानी जेल सेवी बनी थीं ।

तीसरे अध्याय में कांग्रेस के अधिवेशनों में इन जनपदों की महिला सेनानियों की प्रतिभागिता का उल्लेख है। गया कांग्रेस में रानी राजेन्द्र कुमारी ने भाग लेकर बुन्देल क्षेत्र से महिला– प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में प्रभावी उपस्थित दर्ज करायी थी। उन्हें वहाँ पर देश की चोटी की महिला सेनानियों का सानिध्य मिला था, जिससे उनके राजनैतिक चिन्तन को नई दिशा मिली थी। उन्हें महिला सम्मेलनों तथा सभाओं में हमीरपुर की किशोरी देवी, राजाबेटी, सरस्वती देवी तथा मनोरमा देवी जैसी अनेक महिलाओं का भरपूर साथ मिला ।

चौथे अध्याय में हमीरपुर एवं महोबा जनपद के राजनैतिक सम्मेलनों का विवेचन है। इन सम्मेलनों में गहरौली तथा जराखर का राजनैतिक सम्मेलन महत्वपूर्ण था। दोनो ही राजनैतिक सम्मेलनों के साफल्य मे रानी राजेन्द्र कुमारी तथा उनकी सहयोगी महिलाओं में किशोरी देवी, शान्ती देवी, कस्तूरी देवी, भुवनेश्वरी देवी तथा सरयू देवी सरीखी महिलाओं की स्मरणीय भूमिका रही।

पाँचवें अध्याय में हमीरपुर एवं महोबा जनपद के अन्तर्गत गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के स्वरूप का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में कुलपहाड़ (महोबा) आन्दोलन का बुन्देलक्षेत्र के सत्याग्रह आन्दोलनो में एक

अलग स्थान है । यह अपने ढंग का एक अनोखा आन्दोलन था। इस आन्दोलन में रानी राजेन्द्र कुमारी की भूमिका शीर्ष रही। कुलपहाड़ आन्दोलन मे किशोरी देवी, भुवनेश्वरी देवी, सरयू देवी, उर्मिला देवी जैसी अनेक अन्य महिला सेनानियों ने भी बढ़—चढ़कर भाग लिया।

छठवें अध्याय में इन जनपदों में भारत छोड़ों आन्दोलन में सहभागी महिलाओं के सन्दर्भ में विवेचन किया गया है। इसमें कोई दोराय नही है कि अगस्त क्रांति में यहाँ की महिलायें पीछे नहीं रहीं है। करमालती देवी, भुवनेश्वरी देवी, सरयू देवी, गिरजा देवी, जमुना देवी सहित अनेक महिला सेनानियों ने १९४२ के लोक युद्ध में अग्रणी भूमिका निभायी । रानी राजेन्द्र कुमारी का नेतृत्व तो इस आन्दोलन में प्रमुख था ही।

सातवें अध्याय में निष्कर्ष रूप में हमीरपुर तथा महोबा की महिलाओं के स्वातन्त्र्य संघर्ष में सहभागी होने के बाद उनके माहात्म्य को रेखांकित किया गया है । इस तरह यहाँ की महिलाओं का गांधी आन्दोलन में १९२० से १९४७ तक के सत्ताइस वर्षो के अन्तर्गत सामरिक सहयोग का लेखा—जोखा सिलसिलेवार स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबंध के सम्पूर्ण कलेवर तथा पूर्णता के लिए मै सर्वप्रथम अपने

शोध निदेशक, डा० भवानीदीन, रीडर —राजनीतिविज्ञान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर का हृदयानवत हूँ, जिनके सुलभ, समुचित एवं गुणात्मक निर्देशन में यह शोधकार्य पूर्ण हुआ, तत्पश्चात मै अपने पिता श्री शिवचरन लाल गुप्ता तथा माँ श्रीमती कलावती गुप्ता का कृतज्ञ हूँ, जिनके शुभाशीष का सम्बल सदैव मेरे साथ रहा।

मै अपने गुरु, पूर्व विधायक एवं वर्तमान प्रबंधक श्री लक्ष्मीनारायण आनन्द, मौदहा, गुरु एवं पूर्व प्रधानाचार्य मेजर श्री परशुराम श्रीवास, तथा गुरु डा० स्वामीप्रसाद गुप्ता, प्रवक्ता समाज शास्त्र, रा०म०वि० हमीरपुर, श्री जयप्रकाश त्रिपाठी, प्रवक्ता—जीव विज्ञान ने०इं०का० मौदहा, के प्रति उपकृत हूँ, जिन्होंने मुझे शोध—कार्य के लिए सदैव प्रोत्साहित किया। मैं अपने सहोदरों में श्री ओमप्रकाश गुप्ता, मैनेजर भारतीय रिजर्व बैंक मुम्बई, श्री विजयशंकर गुप्ता, इंजीनियर, कानपुर, डा० अशोक कुमार गुप्ता, इंजीनियर, खड़गपुर, प० बंगाल, हरीशंकर गुप्ता, पत्रकार हिन्दुस्तान, मौदहा, के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने शोध—कार्य के प्रति सततावधानी बने रहने के लिए उत्प्रेरित किया।

मैं अपने मित्रों में श्री सन्दीप सिंह वर्मा, बु०वि०वि०, झाँसी, श्री लालचन्द्र अनुरागी, प्रवक्ता—राजनीतिविज्ञान, रा०म०वि०, महोबा, श्रीमती स्नेहलता गुप्ता, प्रवक्ता—इतिहास, रा०म०वि०, मौदहा, कुँ० अमिता निगम, मौदहा, श्री के०पी०सिंह

स्वास्थ्य विभाग, हमीरपुर, श्री शत्रुघ्नलाल गुप्ता प्रबंध समिति सदस्य भा० रे०सो० हमीरपुर, श्री हरीप्रकाश गुप्ता, श्री राजेश विश्वकर्मा, श्री ऋषि सिंह चौहान, श्री रामलखन गिहार, मौदहा, श्री पवन कुमार मिश्रा स्वास्थ्य विभाग, हमीरपुर, के प्रति आभार व्यक्त न करना मित्र धर्म के प्रति असहिष्णु रुख होगा। इन मित्रों के सतत् सहयोग से मेरा शोधकार्य पूर्ण हुआ।

अन्त में मैं राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, उ०प्र० राज्य अभिलेखागार लखनऊ, शहीद शोध संस्थान, लखनऊ एवं हिन्दी भवन के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं अन्य सहकर्मियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे शोध—सामग्री के अध्ययन की सुविधा प्राप्त करायी।

Satya Prakash Gupta

वर्ष २००२

सत्यप्रकाश गुप्ता
नेशनल चौराहा, मौदहा
जनपद—हमीरपुर, उ०प्र०
पिन २१०५०७

अनुक्रम

प्रथम अध्याय

सत्याग्रह आन्दोलन और महिलायें

सत्याग्रह आन्दोलन और महिलायें

विश्व के स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में सांग्रामिक उपादानों की बहुआयामी भूमिका रही है किन्तु वैश्विक संघर्षी फलक में गांधी तकनीक का जो ग्राफ रहा है, उसका कोई सानी नहीं है। गांधी का सत्याग्रह आन्दोलन दुनिया के स्वाधीनता संघर्षों में अपने ढंग का लड़ा जाने वाला एक अहिंसक संग्राम था। यह हिंसा विहीन युद्ध था।[१]

स्वाधीनता प्राप्ति की यह प्रयोगधर्मिता गांधी जी का अनूठा आविष्कार था। इसके पूर्व १८५७ से १९१८ तक का राष्ट्रीय आन्दोलन उदारवाद, उग्रवाद एवं कुछ क्रांतिवाद सहित तीन चरणों की यात्रा तय कर चुका था। ऐसा भी नहीं था कि इन अवस्थाओं के आन्दोलन अर्थहीन रहे हो, देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार इस तरह की आन्दोलनात्मक अगुवाई ने संघर्षी अवधारणा के लिए आवश्यक जमीन अवश्य तैयार की थी किन्तु इस काल का संग्राम लोकयुद्ध नहीं बन सका ।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधी प्रवेश आन्दोलन की जनप्रवेशिका बन गया। सत्य और अहिंसा पर आधारित उनका सामरिक नूतन निनाद लोकानुगामी हो गया । उनके सत्याग्रह आन्दोलन में असहयोग, सविनय अवज्ञा, व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा कर नाफरमानी जैसे अहिंसक साधन समाहित थे।

---

१. के०एल० श्रीधरानी, बिना हिंसा के युद्ध, मुंबई, भारतीय विद्या भवन, १९६२, पृष्ठ संख्या– १६ ।

गांधी जी सत्याग्रह को सत्य के सर्वोत्तम आदर्श पर आधारित मानते थे। उनके अनुसार अन्याय, उत्पीड़न और दमन के विरुद्ध शुद्धतम रूप में आत्मबल का प्रयोग ही सत्याग्रह है।[१] गांधी जी इसे न केवल अत्याचार एवं प्रतिकार का अस्त्र मात्र मानते थे अपितु उनकी दृष्टि में यह एक जीवन पद्वति भी है ।[२]

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) की सतत् सहभागिता रही है; संघर्षी स्वरूप चाहे हिंसक रहा हो या अहिंसक, दोनो ही प्रकार के रणाह्वानों में यहाँ के रणबाँकुरों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर के प्रारम्भिक तरस्वी तेवर हिंसात्मक रहे है। स्वाधीनता आन्दोलन में हमीरपुर एवं महोबा की महिलाओं की सामरिक सहभागिता के विवेचन के साथ–साथ यहाँ के पुरुषपुरोधाओं के उल्लेख के बिना प्रस्तुत शोध की अर्थवत्ता अधूरी रहेगी, इसलिए यहाँ के रणवीरों का संक्षिप्त प्रतिपादन करना प्रांसगिक होगा। परमानंद यहाँ के एक ऐसे पुरोधा रहे हैं, जिन्होंने न केवल हम्मीर धरा के समरांगण में क्रांति निनाद किया अपितु उन्होंने विदेशों में भी जाकर अपने पौरुष का परचम फहराया ।

आर्य समाजोत्सव और पं० परमानंद

१९१२ में राठ में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ, जिसमें श्रीपति सहाय रावत को पं० परमानंद एवं उनके भाइयों के दर्शन हुए। तत्कालीन आर्य समाज के आयोजनों में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारों से सम्बन्धित आख्यान होते थे ।[३] उस सम्मेलन में पं० परमानंद का भी भाषण हुआ, जिसे श्रीपति सहाय रावत

---

१. प्रभात कुमार, स्वतंत्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि० हिन्दी मा०का०निदेशालय, २०००, पृ०सं०—०९

२. वही, पृ०सं०—१०

३. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—२२

तथा उनके तरुण मित्रो ने श्रवण किया । परमानंद जी ने उस समय के आंग्ल अत्याचारों तथा कुटिल व्यवहार का खुलासा किया । उनका भाषण श्री भाई तथा उनके साथियों के अन्दर घर कर गया, इस तरह पं० परमानंद ने हमीरपुर के तरुण वीरों की मनो— भूमि में संघर्षी सोच का बीज बो दिया ।[१]

इसी के साथ दीवान शत्रुघ्न सिंह को भी पं० परमानंद का सानिध्य प्राप्त हुआ, जहाँ इनके हृदयाँगन में कुँवर मनोहर सिंह ने बारूदी बीज बोया तो; वहीं पं० परमानंद ने उसे अपने सामीप्य सलिल का सिंचन प्रदान कर अंकुरित किया ।[२] इस तरह हमीरपुर जनपद में १९१२ से लेकर १९१८ तक दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्री पति सहाय रावत तथा उनके तरुण मण्डल ने क्रांतिकारी आन्दोलन को अग्रसारित किया।

जनपदीय आन्दोलन हिंसा से अहिंसा के क्षेत्र में

१९२० के कलकत्ता तथा नागपुर के कांग्रेस अधिवेशनों में असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव पारित होने के बाद देश की आँखे गांधी जी पर केन्द्रित हो गयी थीं। देश के सुशिक्षित युवा गांधी अनुगमन के लिए तैयार हो गये थे । बुन्देली धरती के राष्ट्रधर्मी लोग भी गांधी जी की तरफ आकर्षित हुए। बुन्देलखण्ड के जनपदों में झांसी के आत्माराम गोविन्द खरे, रघुनाथ विनायक धुलेकर, उरई के पं० मन्नीलाल पाण्डेय, बेनी माधव तिवारी, कोंच के कृष्ण गोपाल शर्मा, बाँदा के कुँवर हरप्रसाद सिंह, महोबा

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—२३।
२. श्यामसुन्दर (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंथ, जी०आर०वी०इं० कालेज राठ, १९६९, पृ०सं०—११।

के चुन्नीलाल जैन, शंकरलाल जैन, बैजनाथ तिवारी और मो० बख्श कांग्रेस में शामिल हो गये । मगरौठ से उरई निकट होने के कारण दीवान साहब का उरई के पाण्डेय बंधुओं तथा बेनी माधव तिवारी से सम्पर्क हुआ; जिससे वे कांग्रेस की कार्य संस्कृति से प्रभावित हुए ।[१] दीवान शत्रुघ्न सिंह ने मगरौठ में युवा हुआ क्रांतिवीरों की एक बैठक आहूत की, जिसमें कांग्रेस की सदस्यता पर विचार विमर्श किया। इस बैठक में उग्र बहस के बाद यह निर्णय हुआ कि दोनो मार्गो में से किसी भी मार्ग में सम्मिलित होने के लिए युवा वर्ग स्वतंत्र है।

दीवान साहब १११९ में कांग्रेस में शामिल हो गये ।[२] जिले में प्रारम्भ में पं० हरिदास, ठाकुरलाल सिंह एवं दीवान शत्रुघ्न सिंह ही कांग्रेस के प्रचार प्रसार में लगे थे। श्रीभाई भी कुछ दिनो बाद कांग्रेस में सम्मिलित हो गये, इस तरह हमीरपुर जनपद में भी कांग्रेस के कार्यक्रम विधिवत चलाये जाने लगे । फलतः जनपद का हिंसा से अहिंसा के क्षेत्र में स्थानान्तरण हो गया।

दीवान शत्रुघ्न सिंह किशोर काल में ही क्रांति के क्षेत्र में कूद पड़े थे। उन्होंने १९१६ में युवाओं के एक क्रांतिदल का गठन कर लिया था। क्रांतिकारी दल के माध्यम से दीवान साहब आजादी के संघर्ष में दुर्धर्ष भूमिका निभाते रहे। तदन्तर महोबा, हमीरपुर, बांदा एवं उरई के नेताओं के कांग्रेस में शामिल होने साथ ही कांग्रेसी प्रणाली से प्रभावित होने के बाद ये भी कांग्रेस में प्रवेश कर गये ।

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—२६।
२. वही, पृ०सं०—२८।

कांग्रेस में सहभागी होने के बाद दीवान साहब ने अनुभव किया कि जिले में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का बहुत अभाव है । जनपद में कांग्रेस के दो कार्यकर्ता थे —पं० हरिदास तथा ठा०लाल सिंह ।[१]

बेगार प्रथा का विरोध

दीवान साहब ने कांग्रेस में सम्मिलित होने के बाद अपने को पूरी तरह कांग्रेसी बना लिया । दीवान शत्रुघ्न सिंह के कांग्रेसीकरण को उनकी माँ राव रानी दुलैया तथा बहन ने प्रोत्साहित कियाा। इन्होंने कांग्रेसी होने के साथ ही सबसे पहले उसकी शर्तो को शिरोधार्य किया। दीवान साहब तथा उनके साथियों ने खद्दर वेशभूषा को अपनाया। इन्होंने मगरौठ से आकर सिकरौधा में बेगार के विरोध में पहली सभा की। दीवान साहब ने हरिजनो से कहा कि वे बेगार न करें, साथ ही जमीदारों के समक्ष बेगार न लेने का प्रस्ताव भी रखा।

कांग्रेसियों ने राठ तहसील के गाँवों में घूम—घूमकर बेगार प्रथा की खिलाफत की, मेला तथा बाजारों में इस सामन्ती प्रथा के विरोध का प्रचार किया गया । खादी के पर्चे छपवाकर उन्हे ग्रामीणों में बाँटा गया।[२]

राठ के निकट सरसई तथा बड़ेगांव के बीच हर वर्ष श्यामला देवी का बड़ा प्रसिद्व

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—२९।
२.वही, पृ०सं०—२९।

मेला लगता है । इस मेले में कांग्रेस के बैनर तले दीवान साहब तथा इनके साथियों ने पेयजल व्यवस्था के रूप में लोक सेवा का एक अच्छा उदाहरण रखा।

छुआछूत के उस घनघोर काल में दीवान साहब ने एक हरिजन महिला तथा उसके बच्चों को लोटा में जल देकर अस्पृश्यता हटाओ का तत्कालीन एक पहला उदाहरण भी पेश किया । उसके बाद कांग्रेस के झण्डे तले उन्होंने कई जनोपयोगी एवं सरकार विरोधी कार्य किए।[१] हिन्दू—मुस्लिम एकता, राठ के मुहर्रम, अटगांव के अग्निकाण्ड तथा टोला खंगारन के सती केस की पैरवी में दीवान साहब तथा इनके साथियों की सराहनीय भूमिका रही।

राजेन्द्र कुमारी और पर्दा प्रथा

१९२० में दीवान साहब ने मगरौठ में अवस्थित अपने आवास के बगल वाले मकान में यज्ञ आयोजित की। उन्होंने उस आयोजन में अपने मित्रों को भी बुलाया। उस यज्ञोत्सव में सहभागी होने वालो में मगरौठ के प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त ठा०लालसिंह, श्रीपति सहाय रावत, पं० भगीरथ और पं० बैजनाथ जैसे प्रतिष्ठित लोगों के नाम उल्लेखनीय रहे । उस यज्ञ में मगरौठ की बहुत सी महिलाओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी । पं० बैजनाथ यज्ञ के प्रभारी थे । यज्ञारम्भ होने पर

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी श्याम बिहारी चौबे की पत्नी श्रीमती सावित्री देवी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

आहुतियां दी जाने लगीं, दीवान साहब तथा रानी राजेन्द्र कुमारी ने भी आहुतियाँ दी। यज्ञ के बाद रानी राजेन्द्र कुमारी ने पर्दा प्रथा को दर किनार करते हुए सभी के सामने भाषण किया ।[१] रानी द्वारा उस काल में उठाया गया यह कदम, जब आम व्यक्ति तो क्या जमीदारों के घर की बहू भी पर्दा जैसी प्रथा के विरूद्ध बगावत के सम्बन्ध में स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी, लौह साहस से कम नहीं था।

रानी राजेन्द्र कुमारी का प्रथम उद्बोधन

यज्ञोपरान्त रानी राजेन्द्र कुमारी ने यज्ञ में उपस्थित लोगो के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आदरणीय दीवान साहब, बुजुर्गों, बहनों और भाइयो, पूज्यवर दीवान साहब की अनुमति और इच्छा के बाद ही मैंने अपने परिवार की पर्दे वाली पुरानी प्रथा को छोड़ा है। आज का जो परिवेश और पुकार है, उसके सामने यह दकियानूस दृष्टिकोण एक दीवार सा परिलक्षित हो रहा था। इसी कारण मैने पर्दा प्रथा का परित्याग किया है। हमारे वंशजो ने किन्हीं कारणों से इस प्रथा को अंगीकार किया होगा, मुझे उस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना । आज समय की माँग है कि महिलायें अपने को पुरातन प्राचीर से परे कर वर्तमान की नब्ज टटोलें और समय के साथ कदमताल करें । मैं जब अपने अतीत को निहारतीं हूँ तो मुझे आदर्श के रूप में सीता, अनुसुइया, सावित्री, दमयन्ती, सारन्धा, दुर्गावती और रानीलक्ष्मीबाई दृष्टिगत होती हैं।[२]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—३५।

२. रानी राजेन्द्र कुमारी की पुत्र वधू अमिता क्षत्रिय, करगवां से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर ।

ये महिला रत्न भारत की आदर्शी आरेख हैं, यदि इसे भारतीय इतिहास से अलग कर दिया जाय तो वह विवेचन महिला जौहरहीन हो जायेगा; [१] साथ ही नारी सहभागिता के अभाव में सुखद भविष्य का निर्माण नहीं हो पायेगा । इसलिए मै अपने बुजुर्गों से यह प्रार्थना करती हूँ कि अवसर एवं माँग के अनुसार प्रथाओ में भी परिवर्तन होता है, इस कारण मेरे द्वारा पर्दा परित्याग के लिए उठाये गये कदम के प्रति उनका सहयोग प्राप्त होगा, ऐसी मुझे आशा है; साथ ही मेरे परिवारीजन इसे अन्यथा नहीं लेगें।

दीवान साहब के पर्दा प्रथा पर विचार

दीवान साहब की सम्मति और सहमति पर रानी साहिबा द्वारा पर्दा प्रथा त्यागने के बाद दीवान शत्रुघ्न सिंह ने मगरौठ वासियों के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे पूज्यप्रवर बाबा गुरू बख्श सिंह तथा मगरौठ के भाइयों तथा बहनों, रानी राजेन्द्र कुमारी ने आज जिस रूढ़ि को खत्म किया है, उसके पीछे मेरी ही इच्छा थी । उन्होंने इस परिपाटी से नाता तोड़ने के बाद ही आज आप सबसे मुखातिब हुई हुैं । रानी का यह कदम आज के समय की प्रबलतम आवश्यकता के अनुकूल हैं। इसे आप सब स्वयं अनुभव कर सकतें है। वर्तमान परिवर्तन की माँग कर रहा था, हमें उन परम्पराओं को छोड़ देना चाहिए जो आज के विकास में अवरोधक हैं । महात्मा 'गांधी जैसे राष्ट्रीय नेता भी महिलाओं की आजादी के पक्षधर है। वे महिलाओं को

---

१ . रानी राजेन्द्र कुमारी के पुत्र कर्नल प्रेम प्रताप से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

पुरुषों की अर्द्धांगिनीं कहते हैं। उनकी दृष्टि में आधा अंग विकसित हो और आधा कुंठित हो तो वह पक्षाघात कहलाता है ।[१] ऐसा पुरुष जीवन के समर में कुछ भी नहीं कर सकता । स्त्री पुरुष की सहयोगिनी है, उसके सहयोग के बिना पुरुष अपाहिज होता है । वह पुरुष के बहुआयामी विकास का एक प्रमुख आधार होती है । स्त्री के बिना पुरुष अधूरा होता है यथा— सीता के बिना राम, राधा के बिना कृष्ण, पार्वती के बिना शिव तथा कस्तूरबा के बिना गांधी अपूर्ण माने गये। इस तरह दीवान साहब ने महिला महत्ता तथा कुरीतियों पर प्रभावी विचार व्यक्त किए।

रानी राजेन्द्र कुमारी का स्वाधीनता आन्दोलन में प्रवेश और तत्कालीन परिवेश

जिस समय रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपने पति दीवान शत्रुघ्न सिंह के मिशन स्वातन्त्र्य संघर्ष में सहधर्मिणी होने के नाते संघर्षी क्षेत्र मे प्रवेश किया, उस समय का परिवेश दबाव और दमन के दौर का था, दीवान साहब ने १९१९ में राठ के शाही दरबार में जिलाधीश के समक्ष चन्दा न देने की घोषणा कर आँग्ल विरोधी पहली परीक्षा दी थी। दीवान साहब के इस कदम को सारे राठ का पुरजोर समर्थन मिला। राठ निवासी मूलचन्द्र शर्मा ने दीवान शत्रुघ्न सिंह की मुक्त कंठ से प्रशंसा की । अंग्रेजों की इस चन्दा नीति के विरोध के बाद दीवान साहब सारे जिले के नेता हो गये । उनका

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—३६।

राठ में अभूतपूर्व स्वागत किया गया। उन्होने राठ के स्वागत समारोह में आजन्म राष्ट्रनिष्ठ रहने का एलान किया। इसके साथ उन्होने यह भी कहा कि मै अपने पूर्वजों की ब्रिटिश प्रदत्त समस्त उपाधियाँ भी वापस कर दूँगा। [१]

०१ जुलाई १९२१ को राठ में तहसील के सामने धारा १४४ को तोड़ने की दृष्टि से एक सभा की गयी, जिसमे दीवान साहब, रावत जी, पं० हरीदास, बाबू बैजनाथ, मातादीन बुधौलिया, मूलचन्द्र शर्मा, सेठ गजाधर तथा ग्यासीलाल सहभागी हुए। इन सत्याग्रहियों ने उस सभा में उपस्थिति हजारों की भीड़ का उत्साहवर्धन किया और उनसे कांग्रेसी सदस्य होने का आह्वान किया । गोरी सरकार ने कांग्रेस संस्था को अवैध घोषित कर हर स्थान पर धारा १४४ लगा दी, सत्याग्रहियों को गिरफ्तार करने की धमकी दी । सत्याग्रह करते समय दीवान साहब सहित अनेक कांग्रेसियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

दीवान साहब को उनके साथियों सहित हमीरपुर जेल में बंद कर दिया। उनके कैद किए जाने का समाचार सारे बुन्देलखण्ड में विद्युत वेग की तरह फैल गया। इसे जनपद का प्रथम राजनीतिक अभियोग करार दिया गया। दीवान साहब से भेंट करने हेतु हमीरपुर में जन सैलाब उमड़ पड़ा, जिस दिन न्यायालय में राजनीतिक अभियोग की सुनवाई का दिन था, अगस्त माह था, साथ ही भारी वर्षा हो रही थी, फिर भी

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—३९

कचहरी मैदान में जनता ठसाठस भरी थी ।[१] कलेक्टर ने बेतवा में नौका चालन बंद करा दिया था, फिर भी बहुत भीड़ थी । इस तरह रानी राजेन्द्र कुमारी जिस समय स्वातंत्रय समर में कूदीं, उस समय के राजनीतिक वातावरण में गोरों के दखल और दमन को स्पष्ट देखा जा सकता था।

रानी राजेन्द्र कुमारी की जेल में दीवान साहब सें भेंट

दीवान शत्रुघ्न सिंह जब हमीरपुर के कारागार में बंद थे, उस समय रानी राजेन्द्र कुमारी श्रीपति सहाय रावत के साथ दीवान साहब से जेल में मुलाकात करने गयीं। जेलर उन्हें अपने साथ दीवान साहब के पास ले गया । दीवान साहब जिस बैरक में थे, उसमें न्यूनतम सुविधाओं का भी तोड़ा था। उन्होंने रानी साहिबा से भेंट के दौरान कहा कि मेरे जेल का समय अनिश्चित है, पता नहीं मुझे जेल में कब तक रहना पड़े। मेरी अनुपस्थिति में तुम कांग्रेस के बैनर तले स्वातन्त्रय संघर्ष का संचालन करना।[२] श्री पति सहाय रावत तथा अन्य साथी तुम्हारा सहयोग करेंगें। रानी राजेन्द्र कुमारी को दीवान शत्रुघ्न सिंह ने जेल में ही संघर्षी दायित्व तथा नेतृत्व की कमान सौंपी। इस तरह रानी अपने पति की अनुमति पाकर आन्दोलन में कूद पड़ी।

१. दीवान शत्रुघ्न सिंह के भान्जे, कुँवर रणविजय सिंह, हमीरपुर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

२. वही ।

रानी राजेन्द्र कुमारी के आभूषण और कांग्रेस

रानी ने दीवान साहब से भेंट करने के बाद अपने मँहगें गहने श्री भाई को दे दिए। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने रावत जी से कहा कि मैने इनके सोने के ये आभूषण कांगेस को दान में दे दिए हैं । आप इन जेवरातों को कांग्रेस के मंत्री को दे दीजिएगा । ये सब गहने कांग्रेस के लिए आन्दोलनात्मक, कार्यवाही हेतु आर्थिक आधार बनेगें । रानी साहिबा तथा दीवान साहब के इस आर्थिक अनुदाय ने जनपदीय संघर्षी अभियान को एक नई दिशा दी।[१]

रानी राजेन्द्र कुमारी द्वारा धारा १४४ का उल्लंघन

दीवान साहब को जेल से जब न्यायालय ले जाया जा रहा था तो उनके स्वागतार्थ महिलायें जेल के फाटक से लेकर न्यायालय तक कतारबद्ध खड़ी थीं । दीवान साहब को तागें पर बैठाकर न्यायालय ले जाया गया । महिलाओं ने उनके तांगे पर मांगलिक पदार्थो की तब तक वर्षा की, जब तक वे न्यायालय नहीं पहुँच गये । जेल से न्यायालय तक का मार्ग सुसज्जित हो गया था। मजिस्ट्रेट ने दीवान साहब तथा मूलचन्द्र शर्मा को डेढ़ –दो वर्ष की सजा सुनायी और उनके शेष साथियों कों तीन–तीन हफ्तों की सजा दी ।[२] दीवान साहब तथा शर्मा जी को हमीरपुर जेल से आगरा जेल स्थानान्तरित कर दिया गया। उस जेल में पं० नेहरू सहित प्रान्त के अन्य

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीभाई के पुत्र डा० श्रीकान्त, जराखर से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

प्रमुख नेता भी बंद थे।

दीवान साहब को जिस दिन सजा सुनायी गयी थी, उस दिन हमीरपुर में अपार भीड़ थी, जिलाधीश ने घबराकर उस तिथि को नगर में धारा १४४ लगा दी थी । इस धारा का अर्थ था कि स्वाधीनता आन्दोलनकारी किसी भी प्रकार की कार्यवाही न कर सकें। रानी राजेन्द्र कुमारी उस दिन कार्यकर्ताओं के साथ रमेड़ी में रुकी थीं।[१]

उन्होंने उसी दिन एक स्वयं सेवक द्वारा रमेड़ी में मुनादी करवा दी कि धारा १४४का उल्लंघन किया जायेगा । उस सूचना में यह भी कहा गया कि उस दिन रानी साहिबा का उद्‌बोधन होगा, साथ ही उनका अन्य कांग्रेसी आन्दोलनकारी साथ देंगें । रमेड़ी की जनता से अपील की गई कि सायं सात बजे रमेड़ी के गौशाला मैदान में एकत्रित होकर रानी साहब का भाषण सुने और राष्ट्रीय मुक्ति मिशन में भाग लेने का श्रेय प्राप्त करें।

सायं सात बजे रमेड़ी गौशाला के मैदान मे आशातीत भीड़ जुटी । उस सभा के सभापतित्व का दायित्व एक वयोवृद्ध ब्राह्मण को सौंपा गया । रानी राजेन्द्र कुमारी धारा १४४ के खिलाफ जमकर बोली, उन्होंने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस आजादी के संघर्ष की एक अग्रणी और प्रमुख संस्था है, इसलिए हर भारतीय का धर्म है कि वह कांग्रेस का सदस्य बनकर उसके पवित्र मिशन में सहभागी होकर पुण्य

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रामानुज सिंह चंदेल, हमीरपुर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

अर्जित करे । रानी ने धारा १४४ को धता बताकर गोरी सरकार को चुनौती दी कि वह मुझे कैद कर जेल भेजे । रानी ने कहा कि मै धारा १४४ को जानबूझ कर तोड़ती हूँ।[१]

रानी के बाद बुन्देला अजीत सिंह ने धारा १४४ को भंग किया और जनता को कांगेस की सदस्यता के लिए प्रेरित किया, साथ ही ब्रिटिश सरकार से कहा कि वह मुझे गिरफ्तार कर जो सजा देना चाहे, दे। मैं उसके लिए तैयार हूँ। तत्पश्चात पं० हरिदास, ठा० उग्रसिंह तथा लालसिंह ने भी धारा १४४ का उल्लंघन किया, किन्तु आँग्ल सरकार ने इन्हे कैद नहीं किया।

रानी राजेन्द्र कुमारी को अनुसमर्थन

रानी साहिबा द्वारा उठाये गये इस कदम का न केवल पुरुष स्वातंत्र्य सेनानियों ने सराहना की अपितु अनेक महिलाओ ने भी उनके द्वारा इस अभियान की मुक्तकंठ से प्रशंसा की, साथ ही उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चली भी । अनेक महिलाओं ने धारा १४४ के तोड़ने में उनके साथ सिरकत की ।[२]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४३।
२. स्वातन्त्र्य सेनानी रामानुज सिंह चंदेल, हमीरपुर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

रानी राजेन्द्र कुमारी द्वारा जिले का भ्रमण

दीवान शत्रुघ्न सिंह और उनके साथी मूलचन्द्र शर्मा को हमीरपुर से आगरा की केन्द्रीय जेल स्थानान्तरित किए जाने के बाद हमीरपुर जेल में गजाधर प्रसाद, हरप्रसाद, ग्यासी, कालीचरन, मातादीन बुधौलिया तथा सेठ गरीबदास ने डेढ़ माह की सजा काटी। उसके बाद रानी ने श्रीपति सहाय रावत, लालसिंह तथा पं० हरीदास के साथ कांग्रेस के संगठन तथा आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। वे पूरे जनपद में आन्दोलन के जनाह्वान हेतु सघन भ्रमण किया । वे अपने दौरे के क्रम में कुछेछा, कुड़ौरा, भरूवा सुमेरपुर, इंगोहटा, पाटनपुर, मकरांव तथा विदोखर में जनसभायें कीं। रानी एक घोड़ी में तथा शेष साथी ऊँटनी में सवार होकर घूमें। रानी के इस आन्दोलनात्मक अभियान में जगह–जगह महिलाओं की सहभागिता सराहनीय रही।[१]

मौदहा-प्रवास

स्वातंत्र्य धर्मी क्षेत्र में मौदहा ने भी अपनी एक अलग भूमिका निभायी, रानी मौदहा में अपने सहयोगियों के साथ एक मुसलमान दर्जी के यहाँ ठहरी । उसने उनके भोजनादि की व्यवस्था की। रानी का नाम सुनकर काफी जनता एकत्रित हो गयी। रानी ने मौदहा मे एक जन सभा की, जिसमें अपेक्षा से कहीं अधिक जनरुझान समझ में

---

१ .स्वातन्त्र्य सेनानी रामगोपाल गुप्त के भाई लक्ष्मीनारायण आनन्द, मौदहा से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

आया। उनके भाषण का वहाँ के उपस्थित लोगों में प्रभावी असर हुआ । उनके सहयोगियों ने बाद मे कांग्रेस का प्रचार करते हुए सायर, न्यूरिया, बिहुनी, मुस्करा, ध नौरी और इमिलिया होते हुए राठ की राह पकड़ी।[१]

कांग्रेस की अध्यक्षा

दीवान शत्रुघ्न सिंह अपनी राष्ट्रनिष्ठ सोच के कारण जिला ही नहीं वरन पूरे बुन्देलखण्ड में एक कर्मठ एवं जुझारू स्वातंत्र्य शूर के रूप में विश्रुत हो चुके थे, ऐसे मे उनकी हमराह भला पीछे कैसे रहती ? रानी ने अपने शूरमा सौहर से आन्दोलनात्मक अनुमति पाने के बाद कभी पीछे मुड़कर नही देखा। उस समय महोबा में जिला कांग्रेस समिति का प्रधान कार्यालय था। महोबा में कांगेस समिति की बैठक हुई; जिसमें रानी को सर्वसम्मति से जिला कांग्रेस समिति का अध्यक्ष चुन लिया गया । रानी जिला कांग्रेस का अध्यक्ष पद धारण करने के बाद और भी अधिक सक्रिय हो गयी।[२]

साहस की साक्षी: राजेन्द्र कुमारी

रानी राजेन्द्र कुमारी को स्वातंत्र्य संघर्ष काल में जिन सहयोगियों ने सतत् सहयोग प्रदान किया, उनमें ठाकुर लाल सिंह, पं०हरीदास और श्रीपति सहाय रावत का नाम सर्वोपरि रूप मे लिया जा सकता है । रानी एक श्रेष्ठ सेनापति की भूमिका निभाती थी।

---

१. रानी राजेन्द्र कुमारी के पौत्र हंस प्रताप सिंह एडवोकट, राठ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

रानी साहिबा का जिले में जहाँ कहीं भी भाषण होता था, वहाँ पर पुलिस अवश्य रहती थी। वे अपने हर भाषण में आंग्ल शासन की पुलिस द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों को लक्ष्य बनाती थी। पुलिस उनके भाषण को नोट करती थी। उनका उद्‌बोधन इतना असरदार होता था कि जनता आँग्ल शासन के प्रति आक्रोशित हो उठती थी। रानी के उद्‌गार को सुनकर आँग्ल अधिकारी आश्चर्य चकित हो जाते थे।[१] उन्होने कई बार पुलिस इंस्पेक्टरों को फटकारा था। वे कष्ट सहिष्णु थी। वे नदी—नालों को पार करने में जरा भी परवाह नहीं करती थी, उनमें स्वातंत्र्य आंदोलन के प्रति अमिट निष्ठा थी। वे समष्टिगत सोच की थी, व्यष्टिगत की नहीं ।

जब पुत्र शोक भी रानी की दृढ़ता को दबा नहीं सका

जिस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह आगरा जेल में बंद थे, उस समय रानी जिले के स्वातंत्र्य संघर्ष का संचालन कर रही थी, उसी काल मे रानी की गोद का एक मात्र दुलारा पुत्र नहीं रहा। उस समय दीवान साहब की माँ मौजूद थीं । वे दोहरी मार झेल गयीं, एक ओर उनके पुत्र दीवान साहब जेल में थें तो दूसरी ओर ईश्वर ने उनके पौत्र को रानी की गोद से उठा लिया; अब ऐसे कठिन काल तथा वृद्धावस्था में उनकी हृदय वेदना को शान्त करने के लिए एक मात्र रानी का सहारा था। उस समय रानी

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४३

राजेन्द्र कुमारी भी कई प्रकार की मनोव्यथा झेल रही थीं। यथा—दीवान सहब का जेल जीवन, माँ का बुढ़ापा तथा पुत्र का गोद से उठना। पुत्र शोक का समाचार पाकर दीवान साहब के अनेक शुभ चिन्तक रानी साहिबा को धैर्य दिलाने उनके आवास पर पहुँचे, जहाँ पर रानी की धीरता को देखकर सभी आश्चर्य चकित हो गये ।[१] वे इस तरह शान्त थीं कि जैसे भगवान आसुतोष विषपायी बनकर शान्त रहे थे । इतना सब कुछ होने के बाद भी वे कांग्रेस का नेतृत्व करती रहीं। वे सचमुच दृढ़ता की प्रतीक थीं।

महोबा का कजली उत्सव और रानी का भाषण

रानी जिले के भ्रमण क्रम में महोबा के कजली उत्सव में सहभागी हुई और उस लोक पर्व में जनता के सामने अपने उद्गार में कहा —बहनों और भाइयो — शौर्य के क्षेत्र में महोबा की एक अपनी अलग पहचान है । आल्हा—ऊदल की वीरगाथा से कौन अनजान है, जिसे सुनकर कौन ऐसा होगा? जिसकी भुजायें न फड़कती हों । कविवर जगनिक ने महोबवी भाषा में आल्हारासौ की रचना की है, उसकी लिपि देवनागरी है। महोबा के वीरों की शौर्यगाथा किसी परिचय की मोहताज नहीं है, यह जनपर्व उन्हीं की स्मृतियों की याद दिलाता है । रानी ने विचारों के क्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि मैंने देवलदेवी तथा मल्हना रानी की पीड़ाओं को पढ़ा है, उन्ही का संदर्भ देकर आपसे कहती हूँ कि आप माँ भारती के रक्षार्थ हेतु आगे आयें । गुलाम देश के मूल्य

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

पशुओं के चारागाह के मूल्य के समान भी नहीं होता । आज भारत की सड़के भारतीयों के लिए न होकर गोरों की होकर रह गयीं हैं, जिन पर उनके दम्भ को खुला देखा जा सकता है। आँग्ल अधिकारी अपनी पत्नियों के साथ कारों पर कुत्तों को बैठाकर यात्रा करते हैं, उन्हे कुत्ते प्रिय है किन्तु भारतीय नहीं । उन्होंने हमारी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर दिया है। आल्हा—ऊदल के पराक्रम की याद दिलाकर आप लोगो का अवाह्वान करती हूँ कि आप स्वातंत्र्य समर में कूदें और देश को मुक्त करायें, स्वाधीनता के मिशन मे कांग्रेस का सहयोग करे ।[१]

मौदहा के कंस मेला में रानी का उद्बोधन

मौदहा में भादौं की पूर्णिमा को कंस मेला आयोजित होता है, १९२१ में रानी राजेन्द्र कुमारी ने मौदहा के कंस मेला में जनता के सामने अपने विचारों को रखते हुए कहा कि भाइयों, बहनो यह लोक पर्व गंगा जमुनी संस्कृति का महान पर्व है। यह पर्व हिन्दू—मुस्लिम के भाईचारे का अनूठा उदाहरण है, जैसा ज्ञातव्य है कि कंस एक निरंकुश तथा अत्याचारी शासक था । उसका लोक लगाव से दूर—दूर तक का रिश्ता नहीं था। अत्याचार एवं दमन ही उसका धर्म था । उसने अपनी बहन तथा बहनोई को बंदी बना रखा था। उसके विरूद्ध विशद जनाक्रोश था।[२] उसका शासन जनता को

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी रामगोपाल गुप्त के भाई लक्ष्मी नारायण आनन्द, मौदहा से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

पसंद नहीं था।

ब्रजवासी अवसर की खोज में थे, उनके विरुद्ध बगावत की बागडोर सम्हालने वाला कोई वीर शिरोमणि नहीं मिल रहा था कि तभी ब्रज लोगों की चिरप्रतीक्षित साध पूरी हुई, कृष्ण ने जन्म लिया, कृष्ण शोषण के शत्रु थे। वे यावतजीवन मानवतावादी रहे । कंस कृष्ण विरोधी थे। उसने कृष्ण के विरुद्ध कई षडयन्त्र रचे किन्तु वह सफल नहीं रहा। अन्तत:कंस को कृष्ण ने मारकर जनता को त्राण दिलाया । आज यहाँ आँग्ल शासन कंस शासन का ही प्रतिरूप है । आप लोग इस क्रूर शासन को समाप्त करने के लिए गांधी जी का सहयोग करिये, यही मेरी आपसे अन्तिम अपील है।[१]

राठ की राम लीला और रानी राजेन्द्र कुमारी

राठ में रामलीला के मंचन की परम्परा दीर्घ कालिक रही है । रानी राजेन्द्र कुमारी ने रामलीला के शुभ अवसर पर राठ में महिला सभा का आयोजन किया । रानी ने उस सभा में अपने विचारों को रखते हुए कहा कि भाइयो, बहनों हमें अपने कर्तव्यों पर विचार करना है। नारी का संसार में एक अलग स्थान है, उसके सहयोग के बिना संसार चल नहीं सकता।[२] यदि यह कहा जाय कि नारी ही संसार की रचना करती

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४४।

२. स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह यादव, राठ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नारी के विचार और संकल्प ही देव और दैत्यों के जन्म में अन्तर करतें है । नारी ही नर की खान होती है । उसने अनेक पुरोध ााओं को जन्म दिया है। इसलिए आज हम सभी बहनों को आज के कर्तव्यों के सदुपयोग पर विचार करना है, आप सभी को तो ज्ञात ही है कि अंग्रेजों ने साजिशों का ताना—बाना बुनकर हमारे देश में अधिकार कर लिया है और यहाँ की सभ्यता, संस्कति, इतिहास, कला, उद्योग, कृषि और शिक्षा का दिन प्रतिदिन पतन हो रहा है। इसलिए यदि हममें राजनीतिक चेतना का विकास न हुआ तो देश पतन के गर्त में चला जायेगा ।[१]

गांधी हमारे देश के सर्वमान्य नेता है, उन्होंने काग्रेस के बैनर तले आंग्ल विरोधी अहिंसक संग्राम छेड़ दिया है। हम सभी भाग्यशाली है कि हमें गांधी जी जैसा नेता मिला है । इसलिए हम सब का यह धर्म बनता है कि हम आजादी के लिए उनके द्वारा अपनाये गये कार्यक्रम में पूरे मनोयोग से साथ दे तभी देश आजाद हो सकेगा । वे यदि स्वातन्त्रय संघर्ष हेतु कांग्रेस की सदस्यता एवं स्वयं सेवको के रूप में हमसे अपने पति, पुत्र, भाई एवं भतीजों की माँग करें तो हमें उन्हें सहर्ष भेजना चाहिए, यदि आवश्यकता पड़े तो हम सब बहनों को आजादी के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार रहना चाहिए, यथा—हम सभी को जेल जाने, लाठी —डण्डा की मार और यहाँ तक कि गोली खाने को उद्यत रहना चाहिए ।[२] आप सब विदेशीवस्त्रों की

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह यादव, राठ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—४५।

दुकानों पर धरना दें, ग्राहकों को बताये कि देशी खद्दर को खरीदकर पहनें, उन्हें स्वदेशी की उपयोगिता से अवगत करायें, साथ ही मादक पदार्थो के सेवन से उत्पन्न होने वाले खतरों से उन्हें आगाह करें। गांधी जी ब्रिटिश कूटनीति से अच्छी तरह अवगत हैं, इसलिए उन्होंने देश को आजाद कराने का संकल्प लिया है । अन्ततः मैं आप सब बहनो से अनुरोध करती हूँ कि आप लोग स्वतन्त्रता संग्राम से सक्रिय रूप से जुड़ें।

इस तरह रानी ने महोबा, मौदहा तथा राठ के अपने दौरों में जनाह्वान का एक शानदार अभियान छेड़ा, जिसका प्रभाव कालान्तर में जिले के आंदोलन के लिए एक जुटता के रूप में दिखायी पड़ा।[१]

रानी राजेन्द्र कुमारी और उनकी कुछ सहयोगी महिलायें

रानी राजेन्द्र कुमारी ने हमीरपुर जनपद के स्वातन्त्र्य आन्दोलन की बागडोर उस काल मे सम्हाली जब स्वातन्त्र्य चेता दीवान साहब कारागार में कैद थे । वे अपने पति से आंदोलनात्मक अनुमति प्राप्त कर यहाँ के नारी शौर्य को एक नया सोपान प्रदान किया । रानी ने सम्पूर्ण जनपद का सघन भ्रमण कर महिला चेतना को नई दिशा दी, उनका सुनियोजित संघर्षी अलख कालान्तर में रंग लाया ।[२] उनके प्रयासों से हमीरपुर की महिलाओं के सामरिक सहयोग का कोई सानी नहीं रहा, जिस संख्या में यहाँ की

१.क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२.वही।

महिला सेनानियों ने स्वातंत्र्यधर्मी भूमिका निभायी, उतनी शायद ही प्रान्त के किसी अन्य जनपद की रही हो। रानी की कुछ सहयोगी महिला सेनानी इस प्रकार थीं।—

किशोरी देवी

सांस्कृतिक नगरी काशी के सप्त सागर मोहल्ले में पं० बंशीधर बाजपेयी के घर किशोरी का जन्म १९०८ में हुआ था।[१] किशोरी पाँच भाइयों के बीच में अकेली बहन थी। इनकी पाँच वर्ष की उम्र में शिक्षा प्रारम्भ हुई । ये बचपन से ही चपल एवं शरारती थी; किन्तु माता पिता का इन्हें भरपूर प्यार एवं दुलार नसीब रहा । बचपन से ही उनमें चंचलता थी। उनका पढ़ाई की तुलना में खेलकूद में अधिक मन लगता था। दो— तीन वर्षो बाद उनका मन अध्ययन में लगा और वह क्रम कक्षा आठ तक चलता रहा। वंशीधर बाजपेयी जमीदार थे; साथ ही कर्मकाण्ड एवं पाण्डित्य में कम नहीं थे। किशोरी देवी ने अपने परिवारिक परिवेश से बहुत कुछ सीखा । किशोरी ने जहाँ अपने मामा रामनाथ रावत जी के कारण शिक्षा का सानिध्य प्राप्त किया, वहीं उन्हे अपने पिता से भाषण तथा कर्मठता का मूलमंत्र मिला, जिसे उन्होंने अपने जीवन में उतारा। किशोरी देवी को पिता ने गार्हस्थ ज्ञान कराया । बाजपेयी परिवार मूलत: बुन्देलखण्ड के जिला हमीरपुर के कैथी गाँव का था ।

---

१. पं० हरिकेश मिश्र (संम्पादक), अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०सं०—७५।

१९२६ में किशारी देवी का भगवान दास बालेन्दु जी से विवाह हुआ, उन्हें काशी तथा कुलपहाड़ के वातावरण में जमीन—आसमान का अंतर दिखायी पड़ा, कहाँ वाराणसी का सुख वैभव और कहाँ कुलपहाड़ में असुविधाओं का बाहुल्य, किन्तु किशारी देवी में अद्‌भुत सामजस्य की क्षमता थी । उन्होंने कुलपहाड़ की आदर्श वधू की भूमिका निभायी ।१९२९— ३० में उनकी कीमती साड़ियों को, जब बालेन्दु जी ने ये विदेशी हैं; कहकर जलाया तो किशोरी देवी ने सिर्फ इतना कहा कि इन्हें जलाइये नहीं, ये दूसरी स्त्रियां के पहनने के लिए हो जायेगीं। इसके अलावा उन्होंने कुछ नही कहा। किशोरी देवी एक सफलकामा गृहणी थीं । उन्होंने ससुराल में आकर जिस तरह यहाँ के घर को सजाया —सवांरा, उसे सम्पन्ता का जामा पहनाया, बालेन्दु जी को धूम्रपान की लत से मुक्त कराया, वह सचमुच अरजरिया परिवार के लिए उनका महत्व पूर्ण योगदान था। किशोरी देवी ने वैषम्य के साथ तादातम्य स्थापित कर यह दिखा दिया कि उनमें अपार धैर्य की क्षमता है।[१]

पति की अनुमति पाकर वे स्वातन्त्र्य समर में जब कूदीं तो फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

स्वाधीनता आन्दोलन और किशोरी देवी

जलियावाला काण्ड की स्मृति में गांधी जी ने ०६ अप्रैल से १३ अप्रैल को

---

१. किशोरी देवी के छोटे पुत्र शरदेन्दु अरजरिया, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

प्रतिवर्ष राष्ट्रीय सप्ताह के रूप में मनाने की घोषणा की, इसी क्रम में १९३२ में भी देश में इसे पूरी निष्ठा के साथ मनाने की योजना बनी। उस समय भगवान दास बालेन्दु अरजरिया फरारी हालात में चल रहे थे । वे कुलपहाड़ में अपने आवास के बगल वाले मकान में छिपे थे । उन्होंने वहीं से अपनी पत्नी किशोरी देवी को अनुमति प्रदान की कि वह राष्ट्रीय सप्ताह में निश्चिन्तता पूर्वक भाग लें। किशोरी देवी ने अपनी अजिया सास से पड़ोसी के यहाँ जाने का बहाना बनाकर संघर्षी राह के लिए निकली। घर से चलने के पूर्व उन्होंने अपने सभी आभूषण पूजा के एक डिब्बे में रख दिए ताकि पूजा के वक्त वे सारे गहनें ससुर को मिल जायें।[१]

किशोरी देवी मकान से निकल कर कुअें के पास जब सड़क पर पहुँची तो उन्हें उनकी अन्य सहयोगी सहेलियाँ मिलीं। वे किशोरी देवी को अपने बीच पाकर प्रसन्न हुई । किशोरी देवी ने उच्च स्वर में घोष करते हुए कहा ''झण्डा ऊँचा रहे हमारा'' उनके इस स्वर के साथ समवेत स्वर ने मिलकर वह निनाद किया, जिससे सारा परिवेश गुंजायमान हो उठा। उस उद्घोष को सुनकर घरों के अन्दर की सभी महिलायें बाहर आ गयीं और यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि काशी की किशोरी भी राष्ट्रीय सप्ताह के मनाने में पीछे नहीं हैं । कुलपहाड़ की कुल वधू की वह सहभागिता अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना थी।[२]

१.क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२.वही।

थोड़ी देर बाद पुलिस आ गयी और अन्य महिलाओं के साथ उसने किशोरी देवी तथा रानी बहन को भी कैद कर लिया।[१]

झांसी सम्मेलन और किशोरी देवी

१९३० के लगभग झांसी में प्रदेशीय सम्मेलन था। बालेन्दु नहीं थे। किशोरी देवी ने घर में किसी से इस सम्बन्ध में कोई वार्ता नहीं की, क्योंकि ससुराल वाले उन्हें खास तौर पर ससुर आन्दोलन में जाने से मना करते थे । उन्होने अपनी खादी की धोती गांधी आश्रम में रह रहीं रिश्ते की बुआ के यहाँ भिजवा दी। उसके बाद खादी आश्रम के तत्कालीन कर्मचारी सुदर्शन की पत्नी सुविद्या के साथ कुलपहाड़ स्टेशन गयीं, वे वहाँ से गाड़ी द्वारा झांसी पहुँची । खेर साहब, धुलेकर जी की पत्नी पिस्ता देवी एवं कदम साहब आदि ने झांसी के सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग लिया । किशोरी देवी झांसी में एक रिश्तेदार के यहाँ रात में रुकीं। वे तीसरे दिन कुलपहाड़ पहुँची। चचिया ससुर बहुत नाराज हुए और कहा कि वहीं जाओ, जहाँ गयीं थी। सुविद्या देवी ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि जब बालेन्दु जेल में हैं तो यह भी जेल जायेगी । इस पर वह और भी क्रोधित होकर बोले कि तुम जाओ न, तुम्हे कौन रोकता है? किन्तु हमारी बहू —बेटियों को बर्बाद न करो । इस तरह साहस की धनी किशोरी देवी ने ऐसी न जाने कितनी बिषम परिस्थितियों का सामना किया ।

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

हमीरपुर जेल और किशोरी देवी

हमीरपुर जेल में उनके साथ जमुना, मनोरमा, ज्ञानदेवी तथा रानी बहन जैस कई महिलायें रही और अनेक यातनाओं को सहकर देश के लिए लड़ीं। जेल में सभी महिलाऐं एक स्थान पर एकत्रित होकर गांधी कीर्तन व भजन किया करती थीं।[१] जेल में भी किशोरी देवी साहस का साथ कभी नहीं छोड़ती थीं ।

सारी महिला सेनानी जेल में एक स्थान पर एकत्रित होकर गुनगुनाने लगती—

डा० साहब देखने को आते दो— दो बार।

दवा गोलियां कुछ नहीं देते, देते पानी लाल ।।

जेलर के आ जाने पर सारी स्वातन्त्र्य सेनानी स्त्रियाँ सस्वर कहने लगती —

कम खाना गम खाना, जब कटे जेल खाना।

किशोरी देवी ने जेल में भी गांधीवादी तकनीक को अपनाती रही है; उनमें त्याग एवं तपस्या कूट —कूट कर भरी हुई थी । ब्रिटिश सरकार उन्हें हमीरपुर जेल में दो माह तक रखा, तत्पश्चात वे सेन्ट्रल जेल वाराणसी पहुँची । उन्हें वहाँ जेल में ''बी क्लास'' का दर्जा प्राप्त हुआ। बनारस तो वह केन्द्र था, जहाँ पर पहले से ही प्रदेश की प्रमुख सेनानी महिलायें मौजूद थी।[२]

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।
२.वही।

बालेन्दु जी का छद्‌मवेश और किशोरी देवी

एक दिन बालेन्दु जी बनारस जेल में किशोरी देवी से मिलने गुप्तवेश में जा पहुँचे। उन्होंने न केवल अपना वेश छिपाया अपितु अपने नाम में भी परिवर्तन कर लिया। वे किशोरी देवी से मिलने बैजनाथ तिवारी (बालेन्दु जी के बहनोई) के नाम से जा पहुँचे। उस समय जब कोई व्यक्ति महिला कैदी से मिलने आता तो जेलर पहले उस महिला से स्वीकृति लेता था, तभी उस व्यक्ति की महिला कैदी से मुलाकात करायी जाती थी। जेलर ने किशोरी देवी को सूचना दी कि आपसे कोई व्यक्ति मिलने आया है तो उन्होंने सोचा कि मायके (बनारस) से कोई मिलने आया होगा ।[१]

जेलर ने जब उनसे बैजनाथ तिवारी नाम बताया तो उन्हे पहले तो आश्चर्य हुआ फिर बाद में किशोरी देवी ने भेट की इजाजत दे दी।

किशोरी देवी ने जब भेट कर्ता को देखा, उन्होंने पाया कि वह आगन्तुक महाशय नंदोई बैजनाथ तिवारी न होकर स्वयं बालेन्दु जी थे । वे फरारी हालत में काफी कमजोर हो गये थे, बालेन्दु जी थोड़े से भाव विह्वल भी हो गये थे । किशोरी देवी तथा उनकी इशारों पर ही सारी वार्ता हो गयी, जिसे वहाँ खड़ा संतरी भी न समझा सका।।

---

१. पं० हरिकेश मिश्र (सम्पादक), अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०सं०—८५।

बालेन्दु जी की अस्वस्थता और किशोरी देवी

कई ऐसे अवसर आये जब बालेन्दु जी गंभीर रूप से अस्वस्थ हुए । उस स्थिति में किशोरी देवी तथा उसके मायके वालों की भूमिका सराहनीय रही । बालेन्दु जी १९३२ में फैजाबाद जेल में बन्द थे । उस समय सारा संकोच छोड़कर किशोरी देवी अपने भाई गोविन्द वैद्य के साथ उन्हें देखने फैजावाद जा पहुँची । बालेन्दु जी को जेल से फैजावाद के जिला अस्पताल भेज दिया गया था । उन्होने जब अस्पताल में बालेन्दु जी को देखा तो वे स्तब्ध रह गयीं वे कृशकाय हो गये थे । उन्हें एक स्वयं सेवक सहारा देकर दिनचर्या से निवृत्त करा रहा था।

दोनों ने एक दूसरे के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूँछा । किशोरी देवी की इच्छा के अनुसार बालेन्दु जी का बनारस में इलाज हुआ । वे कुछ दिनो बाद स्वस्थ हो गये ।[१]

किशोरी देवी और रानी राजेन्द्रकुमारी

किशोरी देवी की बहुआयामी क्षेत्रों में शानदार भूमिका रही । उन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारी का भी शानदार तरीके से निर्वाह किया । उनके बच्चों ने वराणसी स्थित बेसेन्ट थियोसोफिकल सोसायटी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की । जनपद के लगभग सभी राजनीतिक सम्मेलनों में किशोरी देवी का वैशिष्ट योगदान रहा ।[२]

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

जराखर में १९३८ में एक विशाल राजनीतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया , जिसमें पं० जवाहरलाल नेहरू भी पधारें थे। उस सम्मेलन में किशोरी देवी ने रानी राजेन्द कुमारी के साथ मिलकर प्रभावी भूमिका निभायी। पं० नेहरू ने नारी जागरण पर सराहनीय सुझाव दिये । किशोरी देवी तथा बालेन्दु जी के जराखर सम्मेलन में सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता । किशोरी जी को राजेन्द्र कुमारी के अतिरिक्त राष्ट्र की चोटी की महिलाओं का भी सामीप्य प्राप्त रहा। वे अरूणा आसफ अली, पूर्णिमा बनर्जी, विद्यावती राठौर एवं पार्वती देवी जैसी शीर्ष महिलाओं के साथ जेल में रहीं। इसके अतिरिक्त किशोरी देवी जिन सहयोगी महिलाओं को नहीं भूल पा रही हैं, वे इस प्रकार रहीं — सुगिरा की श्रीमती रूक्मिणी देवी, जैतपुर निवासिनी सरस्वती देवी, महोबा की सरजू देवी, राठ की जमुना देवी, राठ की ही उर्मिला देवी, जराखर की राजाबेटी, राठ की शान्ति देवी तथा मनोरमा देवी इत्यादि । किशोरी देवी ने रानी के साथ सभी सत्यागह आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।[१]

सत्यागह आंदोलन और उर्मिला देवी

मानव भूगोल की दृष्टि से देखा जाय तो इसमें कोई दोराय नहीं कि मानव का पर्यावरण के साथ अटूट रिश्ता है, जो जहाँ निवास करता है, वहाँ वह उस परिवेश से प्रभावित अवश्य होता है । ऐसा ही कुछ संयोग उर्मिला देवी के साथ भी हुआ। उर्मिला का जन्म ०१ नवम्बर १९१२ को उस धरती पर हुआ, जहाँ का पराक्रम किसी

१.क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

इतिहास के परिचय का मोहताज नहीं है। वीरभूमि के रूप में विश्रुत महोबा में धीरज नाम के कोष्टा के घर राजाबेटी की कोख से उर्मिला के रूप में एक ऐसी कन्या का जन्म हुआ था, जिसे वहाँ की सोधी माटी ने उसे मोम के स्थान पर होम का पाठ पढ़ाया था।

स्वातन्त्र्य संघर्ष के क्षेत्र में

उर्मिला देवी के पति लक्ष्मीनारायन कोष्टा, जिन्हें लक्ष्मी भाई के नाम से जाना जाता था। ये हरिभाई तथा दीवान शत्रुघ्न सिंह के सम्पर्क में आने के बाद सामरिक सोच की ओर उन्मुख हुए। लक्ष्मीभाई राठ के गांधी आश्रम से भी जुड़े थे। ये स्वतंत्रता संग्राम में भूमिगत रह कर अपना सहयोग प्रदान करते रहे । उर्मिला देवी अपने पति से प्रभावित होकर स्वाधीनता आंदोलन में कूदीं। इन्होंने १९३० में गांधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया ।[१]

उर्मिला देवी ने रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में नमक कानून का उल्लंघन किया। नमक आंदोलन में इन्होंने अपनी टुकड़ी की महिला सेनाानियो का नेतृत्व किया जो अपने आप में तत्कालीन एक अविस्मरणीय सहयोग था।[२]

उर्मिला देवी कांग्रेस के आन्दोलनों में एक स्वयं सेविका के रूप मे उपस्थित होती

---

१. महिला सेनानी उर्मिला देवी के पुत्र जवाहरलाल कोष्टा, राठ से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. उक्त के आधार पर।

थी। वे कांग्रेस की सभाओं में सहभागी होकर विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की वकालत करती थीं। उर्मिला देवी महिलाओं को धरना प्रदर्शन एवं विदेशी वस्त्रों को जलाने हेतु प्रोत्साहित करतीं थीं। इनकी सभा में महिलाओं की अच्छी खासी भीड़ रहती थी । ये अपनी टुकड़ी के साथ धरने पर निडर भाव से बैठती भी थीं।

इन्हे आंदोलन काल में पुलिस अशिष्टता से कई बार रूबरू होना पड़ा । उस समय एक दरोगा बहुत अशिष्ट था। इनकी उससे अक्सर नोक—झोंक होती रहती थी। उस नोक झोंक के द्वन्द में उर्मिला देवी को विजय मिलती थी और वह दरोगा कुर्सी छोड़कर चला जाता था। ये विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशी वस्त्रों (खादी)के अंगीकार का जमकर प्रचार करती थीं। [१]

उर्मिला देवी की दिनचर्या में संघर्षी कार्यक्रम एक अभिन्न अंग बन चुका था। ये राठ, महोबा, मौदहा तथा कुलपहाड़ सहित नगरों एवं अनेक गांवो में सघन भ्रमण कर वहाँ के महिलाओं को प्रोत्साहित करती थीं । इन्हें मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, पुलिस तथा दलालों के उत्पीड़न को सहना पड़ता था। पुलिस आंतक के कारण आन्दोलनकारियों का जनता का खुला समर्थन नहीं मिलता था। [२]

१.महिला सेनानी उर्मिला देवी के पुत्र जवाहरलाल कोष्टा से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

जब उर्मिला देवी को पानी के लाले पड़ गये

उर्मिला देवी एक निर्भीक एवं समर्पित महिला शूर थीं । १९३० के कुलपहाड़ सत्याग्रह आन्दोलन में उर्मिला देवी ने सक्रिय भूमिका निभायी । उस समय कुलपहाड़ में जनता इनको पानी नहीं पिला सकती थी। इसका कारण पुलिस का भय था । उर्मिला देवी ने अपने साथी महिलाओं की धोतियों को जोड़कर रस्सी बनायी और पानी के लिए कुंए से पानी निकाला। इनकी निर्भयता का यह आलम था कि इन्होंने पुलिस वालो से भी कहा कि आओ पानी पी लो भाई, हमारे असहयोग आंदोलन में सहयोग करो ।[१]

जब रक्तस्राव भी उर्मिला को डिगा न सका

उर्मिला देवी अपने पति के साथ स्वाधीनता आन्दोलन मे सदैव हमराह रहीं। एक बार पति पत्नी रात में मगरौठ से लौट रहे थे। पुलिस इनके पीछे पड़ी थी। वह इन्हे सरगर्मी से तलाश रही थीं । इस दम्पत्ति को सूचना मिली कि पुलिस पीछा कर रही है । ये दोनो शीघ्रता से एक खेत पार करने लगे, तभी अरहर के खेत में उसका एक सूखा डण्ठल उर्मिला देवी के पैर में घुस गया और रक्त बहने लगा, किन्तु उर्मिला देवी ने उफ तक न की ।[२] उन्होंने धोती से पटटी फाड़कर अपने पांव मे बांधी। उसके बाद लक्ष्मी नारायन कोष्टा उन्हें उठाकर पुल के नीचे लाये , इसी बीच थोड़ी देर में पुलिस

---

१. महिला सेनानी उर्मिला देवी के पुत्र जवाहरलाल कोष्टा, राठ से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

वहाँ से निकल गयी ।[१] इस तरह पति—पत्नी दोनो बच गये और उन्होंने शेष यात्रा पूरी की। उर्मिला देवी की संघर्षी धारा को सचमुच रक्त की धारा न रोक पायी।

पुलिस उत्पीड़न के पर्याय एक दरोगा उस समय उर्मिला देवी के सत्य हठ के सामने विवश हो जाता और कुर्सी छोड़कर चला जाता था।

उर्मिलादेवी ने गांधी जी के हरिजनोद्धार कार्यक्रमो को गाँव तक पहुँचाने तथा ग्रामीणो को उनसे अवगत कराने में हमेशा अगुवाई की, हालांकि गांधीवादी विचारधारा को देहात में संचालित करने में कठिनाई आती थी, किन्तु उर्मिला देवी ने कभी भी उसकी चिन्ता नहीं की, उर्मिला देवी को स्वातंत्र्य संघर्षी सहभागिता के कारण १९३२ में १८८ के आई० पी०सी० के अन्तर्गत ०३ माह की कैद तथा २५ रूपये के जुर्माना का दण्ड दिया गया, जुर्माना अदा न करने पर छः सप्ताह की कैद भी सुनायी गयी । इन्हें १९३३ में छः माह की सजा हुई ।[२]

उर्मिला पहले तो हमीरपुर जेल मे रहीं तत्पश्चात इन्हें फतेहगढ़ जेल भेज दिया गया। इसी अवधि में उर्मिला के पति लक्ष्मीनारायण कोष्टा की गिरफ्तारी के लिए तीन बार वारण्ट भी निकले, जिसके कारण उर्मिला देवी के घर की तीन बार कुर्की भी हुई। उर्मिला देवी के अनुसार जेल का भोजन अच्छा नही होता था । आवासीय

१.महिला सेनानी उर्मिला देवी के पुत्र जवाहरलाल कोष्टा से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

सुविधा राजनीतिक कैदियों के लिए उपयुक्त नही रहती थी । जेल कर्मचारी एवं अधिकारी आमतौर पर व्यवहार कुशल होते थे, साथ ही राजनैतिक कैदियों से डरते भी थे । उर्मिला देवी जेल में मनोरमा शर्मा, कांती देवी, श्रीमती सुविद्या, जमना देवी तथा रूक्मिणी देवी इत्यादि महिला सेनानियों के साथ रहीं ।

उर्मिला देवी और शिक्षा

उर्मिला देवी के पति सक्रिय सेनानी रहे, खादी भण्डार राठ में कार्य करतें रहे, वहीं पर अस्वस्थ हुए, तत्पश्चात इस महान सेनानी का १९३७ में निधन हो गया।[१]

साहसी उर्मिला देवी ने पति के निधन के बाद हिम्मत नहीं छोड़ी । इन्हें बालकाल में शिक्षार्जन का सुयोग तो प्राप्त नहीं हो सका था किन्तु घर में थोड़ा बहुत अध्ययन किया था। १९३७ से इन्होंने पढ़ना प्रारम्भ किया और राठ के राजकीय बलिका विद्यालय से लोअर मिडिल तक की परीक्षा पास की और १९४७ में बेसिक प्राइमरी पाठशाला सैदपुर में अध्यापिका हो गयी । उर्मिला देवी अनवरत सेवा के बाद जून १९७३ में सेवा निवृत्ति हुई । इस तरह इन्होंने १९४७ के पूर्व स्वातंत्र्य संघर्ष तथा स्वातन्त्र्योत्तर भारत में शैक्षिक अनुदाय देकर २४ अगस्त १९७६ को अपनी इहलीला समाप्त की । उर्मिला देवी का साढे छः दशको का जीवन उतार—चढ़ाव से परिपूर्ण

१.महिला सेनानी उर्मिला देवी के पुत्र जवाहरलाल कोष्टा, राठ से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

रहा; साथ ही इन्होंने राष्ट्र के प्रति अपनी जिस जुझाारू भूमिका का निर्वाह किया, वह सदैव स्तुत्य रहेगी।

स्वाधीनता आंदोलन और कान्ती देवी

कान्ती देवी के पति वृन्द्रावन लाल वर्मा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के साथ—साथ एक अच्छे गीतकार भी थे, जिन्होंने संघर्ष काल में राष्ट्रीय गीत गाकर जनभावनाओं को उद्वेलित करने में अहम् भूमिका निभायी थी। ये दीवान साहब से सम्पर्क में आने के बाद स्वातंत्र्य समर में सक्रिय रूप से कूद पड़े थें । दीवान साहब की पत्नी रानी राजेन्द्रकुमारी से कान्ती देवी की भेंट हुई । उसके बाद से ये भी महिला सेनानी बन गयी।[१]

कान्ती देवी के पति ने जहाँ सत्याग्रह आंदोलन में प्रभावी भूमिका निभायी थी, वही कान्ती देवी की क्रांतिधर्मी अगुवायी कम महत्वपूर्ण नहीं थी। इन्होंने रानी के साथ सत्याग्रह आंदोलन में पूरी सक्रियता के साथ प्रतिभागिता की । ये व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में जेल गयी । इन्हें एक वर्ष की सजा हुई ।

---

१. एस०पी० भटटाचार्य (संपादक), स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग, उ०प्र०, १९६३, पृ०सं०—१३५।

शान्तीदेवी और सत्याग्रह आन्दोलन

शान्ती देवी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्रीपति सहाय की पत्नी थीं। इनका जन्म १९०१ में हुआ था। इनके पति श्रीपत सहाय १९२३ के पहले एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता थे । द्वितीय युद्ध की विभीषिका के बाद विषाक्त वातावरण में जहरीली गैस के फैलने से अनेक लोग काल कवलित हुए थे, जिनके दाह संस्कार करने में श्रीपति सहाय की सराहनीय भूमिका रही, इधर इनका सम्पर्क दीवान शत्रुघ्न से हो गया; जिसके कारण ये स्वतंत्रता से जुड़ गये । दीवान साहब की पत्नी राजेन्द्र कुमारी के साथ शांति देवी का सम्पर्क हुआ, साथ ही इन्हे अपने पति से संघर्षी प्रेरणा प्राप्त हुयी। इस तरह शांति देवी स्वतंत्रता सग्रांम से सन्नद्व हो गयीं । शांति देवी को स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने के कारण ढाई वर्ष की सजा हुई, जिसे इन्होंने हमीरपुर तथा फतेहगढ़ जेल में काटा। [१]

सरयू देवी और स्वातनय संघर्ष

२२ मई १९०६ को पं० द्वारिका प्रसाद के घर नौगांव में रजनबाई की कोख से एक ऐसे नौनिहाल का जन्म हुआ था, जो कालान्तर में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व

---

१. महान स्वातन्त्र्यसेनानी श्रीपतिसहाय रावत के पुत्र डा०श्रीकान्त, जराखर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

से न केवल द्वारिका प्रसाद पटेरिया का कुल गौरव कहलाया अपितु उसने अपने पुरोधात्व के बल पर बुन्देलखण्ड में अपनी एक अलग पहचान बनायी । उस महान शूरमा का नाम था — विश्वेश्वर दयाल पटेरिया।

विश्वेश्वरदयाल पटेरिया उस जुझौतिया ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे, जो असि और मसि के दोना ही क्षेत्रों में अग्रणी थे; इसलिए पटेरिया को विरासत में श्रेष्ठ संस्कारों का सामीप्य मिला था, जिसके आधार पर उन्होंने अपनी राष्ट्रसेवी भावी भूमिका निर्धारित कर ली थी। विश्वेश्वरदयाल को पहला आघात उस समय लगा जब वे हाईस्कूल के विद्यार्थी थे, उसी समय १२ मार्च १९२४ को उनके पिता द्वारिका प्रसाद पटेरिया का निधन हो गया । उन पर परिवार का सारा दायित्व आ पड़ा, वे १९२४ से अध्यापन के क्षेत्र में आ गये। विश्वेश्वर दयाल पटेरिया ने १९२४ से १९२८ तक छतरपुर रियासत के महाराजा हाईस्कूल में अध्यापन किया । उसी समय पटेरिया को हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ रचनाकार बाबू गुलाबराय का सानिध्य मिला, जिसके कारण पटेरिया का रूझान हिन्दी लेखन की ओर हो गया ।[१]

विश्वेश्वरदयाल पटेरिया १९२८ में महोबा आये । उनका यहाँ के परिवेश में आकर दृष्टिकोण बदल गया और उन्होने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया । पटेरिया को विरासत में राष्ट्रधर्मी सीख मिल चुकी थी। इस कारण उनका राष्ट्रसेवा के क्षेत्र से

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा, द्वारा हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

विमुख रहना संभव नहीं था। वे महोबा के एक पुराने जूनियर हाईस्कूल में अध्यापक जरूर थे किन्तु उनका मन अध्यापन के साथ—साथ आंदोलन में अधिक उन्मुख होने लगा।

गांधी जी का महोबा आगमन और पटेरिया दम्पति

पटेरिया को राष्ट्रसेवी अनुराग तो युवा जीवन में ही हो गया था; उनकी राष्ट्रधर्मी सोच को तब और भी अधिक बल मिल गया, जब १९२९ में गांधी जी महोबा पधारे। विश्वेश्वर दयाल पटेरिया तथा सरयू देवी पटेरिया दोनो ही गांधी जी की सभा में पहुँचे। वे दोनो उनसे बहुत प्रभावित हुए और पटेरिया दम्पति ने जीवनान्त खादी पहनने की शपथ ली, साथ ही आजादी के आयोजनों में सहभागी होने का वचन दिया। गांधी दर्शन के बाद पटेरिया दम्पत्ति के जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। विश्वेश्वरदयाल पटेरिया ने कांग्रेस के जनगणना बहिष्कार आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे राजनीतिक जीवन में पूरी तरह से उतर आये ।[१]

सत्याग्रह आन्दोलन और सरयू देवी पटेरिया

सरयू देवी पटेरिया एक ऐसे राष्ट्रधर्मी पति की पत्नी थीं, जिसने सरयू देवी को

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा, से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

राष्ट्र निष्ठा का नीर पिलाकर देश के लिए जूझने हेतु पूर्व पीठिका तैयार कर दी। असहयोग आन्दोलन के बाद गांधी जी का सविनय अवज्ञा आंदोलन भी प्रारम्भ हुआ। गांधी के इस दूसरे दौर के आन्दोलन में भी देशवासियों ने पूरी निष्ठा एवं सक्रियता दिखायी। गांधी जी के इस आनदोलन में हमीरपुर से महिलाओं का एक जत्था जेल जाने को तैयार हुआ, जिसका नेतृत्व रानी राजेन्द्र कुमारी ने किया।

महोबा में २६ जनवरी १९३२ को स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए सरयू देवी ने अपने घर की दहलीज से पहली बार पैर निकाला, राष्ट्रीय पर्व के आयोजन स्थल पर पहुँच कर सरयूदेवी ने महिला जुलूस का नेतृत्व किया, साथ ही उन्होंने अपनी गिरफ्तारी भी दी।[१] उस समय उनकी गोद में उनका एक मात्र पुत्र शांति कुमार पटेरिया भी था, किन्तु वे डरी नहीं, अपने पुत्र को गोद में लेकर आन्दोलन में भाग लिया।

महिला सेनानी और दर्शकों की भीड़

जिस काल में सरयू देवी ने स्वातन्त्र्य क्षेत्र में कदम रखा था, उस समय दकियानूसी परम्पराओं का बाहुल्य था, मानवी समाज मूढ़ मान्यताओं के मकड़जाल में फसी थी । पराधीनता के उस काल के परिवेश में सामान्य तौर पर घर से किसी भी बहू बेटी का निकलना जब वर्जित था तो स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए एक अभिजात वर्ग के परिवार से एक बहू का आजादी की लड़ाई के लिए निकलना तो अपने आप में बहुत बड़े आश्चर्य का प्रश्न था।[२] १९३२ में सरयू देवी पटेरिया ने महोबवी धरती

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

से जब सत्याग्रह आन्दोलन का श्री गणेश किया तो कौतूहल वश उन्हें देखने के लिए नर—नारियों की भीड़ उमड़ पड़ी, जनसमूह को तितर—वितर करने में स्वयं सेवकों को बहुत परिश्रम करना पड़ा, जिसके कारण कुछ सेवियों को चोंटें भी आयीं । सरयू देवी को गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस का सत्यागह काल में सरयूदेवी के प्रति मानवीय व्यवहार नहीं रहा। उन्हें जेल ले जाते समय उनके बच्चे को जेल के फाटक के बाहर कर दिया गया। सरयू देवी को जेल में बंद कर दिया गया । एक माँ को उसके मासूम बच्चे से अलग कर देना कितना कारुणिक दृश्य होगा, यह तो केवल एक माँ का ही अनुभव कर सकती है । उतने पर एक ग्रामीण परिवेश की महिला के लिए वे क्षण कितने कष्टप्रद होगें जबकि जेल मैनुअल के अनुसार बच्चे को अपनी माँ के साथ जेल में रहने का पूर्ण अधिकार होता है ।

सरयू देवी को सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण एक माह की जेल तथा एक सौ रुपये का जुर्माना हुआ, अर्थदण्ड न देने पर एक माह की और सजा की व्यवस्था थी । इसके साथ ही मजिस्ट्रेट ने सरयू देवी को अपने बच्चे को जेल में साथ रखने की अनुमति भी प्रदान कर दी । इसप्रकार सरयू देवी अपने पुत्र शान्ति कुमार के साथ दो माह जेल में रहीं।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा, के पुत्र क्रांति कुमार पटेरिया, महोबा से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

इस तरह सरयू देवी ने महोबा में सत्याग्रह आन्दोलन में महिला सेनानियों का नेतृत्व कर पहली बार जेल जीवन का अनुभव किया। उस समय यह बहुत महत्व का विषय था कि एक छोटे से जनपद से अनेक महिलाओं ने आजादी में भाग लेकर जेल जीवन को जिया था।

सरयू देवी के जेल से छूटने के बाद सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण विश्वेश्वर दयाल पटेरिया को गिरफ्तार कर फैजावाद जेल भेज दिया गया। उन्हें एक वर्ष की सजा मिली । पटेरिया को फैजावाद जेल में देश के चोटी के नेताओं का सानिध्य मिला ।

सरयू देवी पुनः जेल में

विश्वेश्वर दयाल पटेरिया जब फैजावाद जेल में थे, उस काल में ही सरयू देवी पुनः सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हुई । इस बार उन्हें छः माह की सजा हुई, किन्तु गर्भवती होने के कारण सरयू देवी को प्रसव के कुछ दिन पूर्व जेल से मुक्त कर दिया और बच्चा पैदा होने के एक माह अन्दर उन्हें पुनः जेल में बंद कर दिया गया। सरयू देवी को अब अपने दो बच्चों के साथ जेल में रहना पड़ा। उनका छोटा पुत्र क्रांति कुमार पटेरिया तो मात्र एक माह का था ।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा, से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

कमला नेहरू और सरयूदेवी का छोटा पुत्र

सरयू देवी जब पुनः जेल गयी तो उस समय वे गर्भवती थीं। उन्हे प्रसव के पूर्व जेल से छोड़ दिया गया। उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। एक माह के अन्दर सरयू देवी को फिर से बनारस जेल में बंद कर दिया। उनके साथ जेल में कमला नेहरू भी थीं। सरयू देवी की गोद में उन्होने जब नवजात शिशु को देखा तो कमला नेहरू ने उसका क्रांति कुमार नामकरण कर दिया, जो सरयू देवी के संघर्षी सहभागिता का साक्षी रहा।

पटेरिया और जाको राखे सांइयाँ

सरयू देवी पटेरिया के छोटे पुत्र क्रांति कुमार के साथ एक—दो ऐसी घटनायें घटीं जिन्हे देखकर यही कहा गया कि जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय ।[१]

सरयू देवी बनारस की जेल—प्रवास में थीं, एक दिन वे नैत्यिक क्रियाओं से निवृत्त होने जब गयी तो उसी समय एक काला सांप आकर बच्चे की छाती पर खेलने लगा । सरयू देवी जब लौटकर आयीं तो उस दृश्य को देखकर भयभीत हो गयीं। उनके शोर मचाने पर जेल के अन्य कैदी तथा कर्मचारी भी आ गये, सभी लोग यह नहीं सोच पा रहे थे कि बच्चे को कैसे बचाया जाय, तभी ईश्वर कृपा से वह

१. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा, द्वारा हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

काला सांप बच्चे को छोड़कर चला गया और क्रांति कुमार बच गया।

क्रांति कुमार पटेरिया के साथ एक दूसरी घटना उस समय घटी, जब सरयू देवी अपने पति विश्वेश्वरदयाल पटेरिया से मिलने फैजाबाद गयीं । सरयू देवी पति से मिलने के बाद अयोध्या रेलवे स्टेशन आयीं और अपने दोनो पुत्रों के साथ ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगी । सरयू देवी थोड़ी देर बाद अपने छोटे बच्चे को स्टेशन में लिटाकर खाना लेने के लिए दुकानदार के पास गयीं, ०३ वर्ष के बड़े बच्चे को उसके पास छोड़ गयीं । इतने में एक बंदर आया और क्रांति कुमार को उठा कर एक बिजली के खम्भे में चढ़ गया, सरयू देवी जब लौटकर आयीं तो बच्चे को न पाकर सकते में आ गयीं । उन्होंने देखा कि एक बन्दर खंभे में उनके बच्चे को लिए हुए हिला रहा है ।[१] वह दृश्य बड़ा ही डरावना था किसी भी यात्री को यह समझ में नहीं आ रहा था कि बच्चे को कैसे बचाया जाय, बहुत बड़ा भय यह था कि बंदर कहीं बच्चें को खंभे से पटक न दें, जिससे बच्चे की जान ही न चली जाय। थोडी देर बाद स्टेशन में गाड़ी आ गयी । स्टेशन मास्टर ने मानवीय दृष्टिकोण अपनाकर गाड़ी को स्टेशन में देर तक रोका और बंदर को बुलाने का प्रयत्न भी किया। थोड़ी देर में बंदर खंभे से नीचे उतरा और बच्चे को जमीन पर लिटाकर चला गया, तब कहीं जाकर सरयू देवी तथा अन्य लोगों की जान में जान आयी।

इस प्रकार अनेक परेशानियों को सहन करके भी सरयू देवी संघर्षी सहभागिता

. स्वातन्त्र्य सेनानी विश्वेश्वरदयाल पटेरिया महोबा से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख
5 आधार पर।

से कभी मुँह नहीं मोड़ा । सरयूदेवी जब जेल से छूटकर आयीं तो वे गयाप्रसाद तिवारी के जिस मकान में रहती थीं, उस पर तिवारी ने कब्जा कर लिया था। वे पड़ोस की एक दूसरी दुकान के ऊपरी भाग को तीन रूपये मासिक किराया में लेकर रहने लगीं।

विश्वेश्वर दयाल जब जेल से छूटकर आये तो उन्होंने देखा कि भयंकर ठंड में पत्नी सरयू देवी बच्चों को फट्टियों में लपेटे पड़ी हुई थीं । यह सरयू देवी के धैर्य एवं साहस की परकाष्ठा थी। उन्होंने मुसीबतों से लोहा लेकर भी बच्चों को पाला—पोसा किन्तु अपनी व्यथा को कभी सार्वजनिक नहीं किया । उन्होंने अपने पति का एक सच्ची सहधर्मिणी के रूप में साथ दिया ।

सरयूदेवी के पति विश्वेश्वर दयाल ने जेल से लौट कर अपनी पतली माली हालत से लोहा लिया, साथ ही ढीमरों से थाने में ली जाने वाली बेगार प्रथा, पान की खेती करने वाले बरई, हरिजनों तथा निर्बलों पर होने वाले सामन्ती अत्याचारों के विरुद्ध प्रभावी मुहिम चलायी और शोषितों को न्याय दिलाया । सरयू देवी ने अपने पति का हर कदम पर साथ दिया। सरयू देवी आजादी के बाद की दशा और दिशा से संतुष्ट नहीं थीं। उनका मानना था कि आजादी प्राप्त करने के बाद आजादी की रक्षा का दायित्व कम गुरुत्तर नहीं है, देश में गांधीवादी सिद्धान्तों को आत्मसात किया जाना चाहिए। सरयू देवी १९४८ से १९५१ तक जिला परिषद हमीरपुर की सदस्या रही हैं।[१]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—१३०

इस तरह सरयू देवी अपने जीवन के लगभग साढ़े आठ दशकों में डेढ़ दशक तक आजादी की लड़ाई के साथ जुड़ी रही और अन्ततः इस महान महिला सेनानी का निधन १६ जनवरी १९९० को हुआ ।

निष्कर्ष

वैसे तो अंग्रेजों ने भारत के अर्थांगन में १६ वीं सदी में ही व्यापारिक—बिसात बिछाकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के माध्यम से सियासी गोंटे चलना प्रारम्भ कर दिया था और वे डेढ़ सदी की लगातार चालबाजी की चालों से १७५७ में मुगल सल्तनत को मात देकर भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डालने में सफल हो गये थे। १७५७ के बाद से ही यहाँ आँग्ल विरोधी बयार बहने लगी थी किन्तु वह तीन बार १८५७, १९१५ तथा १९४२ में तरस्विता की तूफान में तब्दील हुयी, तब कहीं जाकर आँग्ल सत्ता की चूँलें हिलीं किन्तु भारतीय स्वातन्त्र्य समर के आलोक में इस मत की पुष्टि होती है कि १९२० के पूर्व स्वाधीनता युद्ध लोक युद्ध नहीं बन सका था।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधी प्रवेश आन्दोलन की जन प्रवेशिका बन गया था, सत्य और अहिंसा पर आधारित उनका सामरिक नूतन निनाद लोकानुगामी हो गया। उनके सत्याग्रह आन्दोलन में असहयोग, सविनय अवज्ञा, व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा करनाफरमानी जैसे अहिंसक साधन समाहित थे।

---

१. महान स्वतन्त्रयसेनानी श्रीपति सहाय रावत जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) की सतत् सहभागिता रही है। संघर्षी स्वरूप चाहे हिंसक रहा हो या अहिंसक, दोनों ही प्रकार के रणाह्वानों में यहाँ के रणबाँकुरों ने बढ़—चढ़कर भाग लिया है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर के प्रारम्भिक तरस्वी—तेवर हिंसात्मक रहे है। पं० परमानन्द यहाँ के एक ऐसे पुरोधा रहे है, जिन्होने न केवल हम्मीरधरा के समरांगण में क्रांति—निनाद किया अपितु उन्होंने विदेशों में भी जाकर अपने पौरुष का परचम फहराया।

दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपतिसहाय रावत, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया तथा मन्नीलाल गुरूदेव जैसे युवा वीरों को पं० परमानन्द का सानिध्य मिला और ये भी पुरोधत्व की पंक्ति मे शामिल हो गये। हमीरपुर के पुरुष सेनानियों का जहाँ स्वातन्त्र्य संघर्ष में शानदार योगदान रहा है, वहीं यहाँ की वीर महिलायें इस क्षेत्र में कम नहीं रही हैं। रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में हमीरपुर की अनेकों महिला सेनानियों ने सत्याग्रह आन्दोलन में प्रभावी भूमिका निभायी है, यदि यह कहा जाय कि इस जनपद की जितनी अधिक वीरांगनायें रही है, उतनी बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के किसी अन्य जनपद में नहीं हुयीं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आशारानी व्होरा जैसी स्वनामधन्य कई महिला लेखिकाओं की कृतियों एवं दीवान शत्रुघ्न सिंह के अभिनन्दन ग्रन्थ तथा गवेषक के सर्वेक्षण से इस तथ्य की पुष्टि हुयी है।

दूसरा अध्याय

झण्डा सत्याग्रह और महिलायें

झण्डा सत्याग्रह और महिलायें

भारतीय राजनीति में गांधी—प्राकट्य उस काल में हुआ था, जब भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन उग्रवादी युग के दौर में था, कुछ क्रांतिकारी गतिविधियाँ भी संचलन में थीं। गांधी जी भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की अवनि में पैर रखने के पूर्व दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के सफर का साफल्य प्राप्त कर चुके थे । गांधी जी ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में १९१७ में कदम रखा ।[१] उन्होंने चंपारण, खेड़ा तथा अहमदाबाद में आँग्लशाही के विरूद्ध अहिंसक संघर्ष का पाञ्चजन्य फूँका । उसके बाद ०१ अगस्त १९२० से उनका असहयोग आन्दोलन का जनाह्वान हुआ, जिसने विश्व के संघर्षी इतिहास में अपनी एक अलग पहचान बनायी।

१९२० से १९२२ तक गांधी जी का असहयोग आन्दोलन चला, सारे देश ने असहयोग आन्दोलन को अपनाया, इसी बीच अप्रत्याशित रूप से ०५ फरवरी १९२२ को चौरी—चौरा नामक स्थान पर एक हिंसक घटना घटी, जिसमें पुलिस द्वारा अन्धाधुंध गोली चलाने के विरोध में जनसमूह ने पुलिस थाने में आग लगा दी, उस अग्नि काण्ड में २२ पुलिस के सिपाहियों की मृत्यु हो गयी, जिसके फलस्वरूप गांधी जी ने १२ फरवरी १९२२ को असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया।[२] गांधी जी के इस कदम की राष्ट्रीय स्तर पर आलोचना हुई किन्तु वे अपने निर्णय पर अडिग रहे।

. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी सत्याग्रह, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी मा० कार्यान्वय निदे०, २०००, पृ०सं०—३२।

. विपिनचन्द्र, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी मा० कार्यान्वय निदे०, १९९६, पृ०सं०—१४०।

असहयोग आन्दोलन के स्थगन के बाद स्वातन्त्र्य संघर्षी आन्दोलन को धक्का लगा, गांधी जी ने असहयोग कार्यक्रम को दो भागों में विभक्त किया था— पहला निषेधात्मक कार्यक्रम और दूसरा रचनात्मक कार्यक्रम । रचनात्मक नीति में एक कांग्रेस के झण्डा तले राष्ट्रीय संगठन का बिन्दु भी था। इसी कार्यक्रम के तहत कांग्रेस ने झण्डा सत्याग्रह की अनुमति प्रदान की थी। झण्डा सत्यागह के अन्तर्गत जगह—जगह ध्वज संचलन,ध्वजारोहण एवं वस्त्रादि में भी ध्वज प्रयोग शामिल था। ध्वजान्दोलन के अन्तर्गत नागपुर में एक बड़े झण्डा सत्यागह का आयोजन किया गया, जिसमें देश के अनेक हिस्सो से सत्याग्रह हेतु स्वयं सेवक आये।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह

नागपुर में कांग्रेसियों ने तिरंगे झण्डे का एक जुलूस निकाला। वह जुलूस नागपुर शहर में घूमता हुआ सिविल लाइन पहुँचा । शहर और सिविल लाइन के बीच रेलवे लाइन थी । रेलवे के उस पार सिविल लाइन थी, जहाँ पर सत्याग्रही झण्डे को फहराना चाहते थे । सिविल लाइन में अंग्रेज रहते थे, वहाँ भारतीयों की बस्ती नहीं थी। ध्वज जुलूस को देखते ही अंग्रेजों ने विरोध किया कि हमारे यहाँ से भारतीय तिरंगे का जुलूस नहीं निकल सकता, यहाँ तो केवल अंग्रेजों का यूनियन जैक ही फहर सकता है । भारतीय झण्डे के निकलने से अंग्रेजो के झण्डे का अपमान होगा। पुलिस ने भारतीय ध्वज संचलन को रोक दिया।[१]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४७।

इस तरह के विवाद के बाद भारतीय झण्डे के अपमान का प्रश्न भी जोर पकड़ गया । सत्याग्रही भी इस बात पर अड़ गये कि सिविल लाइन भी भारत में है, इस कारण भारतीय तिरंगा झण्डा वहाँ भी फहराया जा सकता है, जब स्वयं सेवक झण्डे को लेकर आगे बढ़ने लगे तो गोरे सिपाही ने उन्हें बन्दूक की बटों से पीटने लगे, जिससे अनेक भारतीय स्वयं सेवक जमीन पर गिर पड़े । उनके शरीर मे गम्भीर चोटें आयीं, शरीर से रक्त की धारा बहने लगी । पुलिस रक्तरंजित स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर उन्हें ट्रकों में लादकर जेल में ठूंस दिया।यह पुलिस के बर्बर आचरण का अमानवीय पक्ष था। उसे इतने में संतोष न हुआ । पुलिस उन पर धारा १४४ लगाकर उन्हें छः माह के कारावास का दण्ड भी दिया।[१]

झण्डारोहण का यह प्रकरण सारे देश में चर्चा का विषय बन गया। सारे राष्ट्र ने इसे गंभीरता से लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे राष्ट्रीय अपमान माना और इस बात पर बल दिया गया कि सिविल लाइन में झण्डा फहरना ही चाहिए, यह विवाद राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया।

उक्त घटना के बाद सेठ जमनालाल बजाज, पूनमचंद राका, माखनलाल चतुर्वेदी और डा० हार्डीकर जैसे राष्ट्रसेवी स्वयं झण्डा लेकर सिविल लाइन के झण्डा जुलूस की तरफ चल दिये। गोरी पुलिस ने उन प्रमुख देश भक्तों को भी नहीं बख्शा। वे

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०–४७।

राष्ट्रीय नेता भी घायल हो गये । उन्हे भी छः माह की सजा देकर जेल में बंद कर दिया । इधर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे अपने प्रस्ताव में लेकर ध्वजारोहण की अनुमति प्रदान कर दी । नागपुर उस समय मध्य प्रदेश में था। पूरे मध्य प्रदेश से नागपुर झण्डा सत्याग्रह के लिए स्वयं सेवको के जत्थे आने लगे । इससे मध्य प्रदेश की सभी जेल स्वयं सेवको से भर गयीं। इसके बाद अखिल भारतीय कांग्रेस से स्वयं सेवको की माँग की गयी। झण्डा सत्याग्रह अविरल रूप से चलता रहे , इस तथ्य को दृष्टि में रखकर पूरे देश के हर प्रान्त से स्वयं सेवको के आने का प्रबंध किया गया । सत्याग्रह के लिए हर प्रान्त से स्वयं सेवी आने लगे । इस मांग पर सत्याग्रहियों का नागपुर में तांता लग गया।[१]

उधर पुलिस दमन में कोई कमी नहीं आयी । वह प्रतिदिन स्वयं सेवकों को मार पीटकर उन्हें जेल में बंद कर देती थी। ध्वजारोहण गोरी सरकार और कांग्रेस के बीच प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। कांग्रेस ने राष्ट्रीय जनता से सत्याग्रहियों की मदद हेतु अपील की, जिसे देश के सामान्य नागरिको तथा सेठ साहूकारों ने अंगीकार कर खुले मन से मदद की ।

झण्डा सत्यागह बराबर चलता रहा । कांग्रेस की अपील का देश के सम्पन्न वर्ग पर प्रभावी असर हुआ । सेठ—साहूकारों ने उदारमना होकर इतनी प्रचुर खाद्य सामग्री दी कि कांग्रेस के भण्डार भर गये ।

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४७।

कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश से स्वयं सेवको के प्रबंधन के लिए पं० जवाहर लाल नेहरू को अधिनायक नियुक्त किया । उनकी पहल पर प्रदेश के हर जनपद से झण्डा सत्याग्रह के लिए स्वयं सेवक नागपुर पहुँचने लगे, झांसी मण्डल से जब कोई स्वयं सेवक नागपुर नहीं पहुँचा तो पं० नेहरू ने दीवान साहब को आनंद भवन इलाहाबाद बुलाया। दीवान साहब मगरौठ से उरई होते हुए बाया कानपुर फतेहपुर पहुँचे, वहाँ के कांग्रेसी नेताओं से मिलने के बाद आनंद भवन, इलाहाबाद पहुँचे। पं० नेहरू ने दीवान शत्रुघ्नसिंह से कहा कि बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के किसी भी जनपद से कोई भी सत्याग्रही नागपुर नहीं पहुँचा जबकि प्रदेश के हर जनपद से कोई न कोई स्वयं सेवक नागपुर पहुँचा है । दीवान साहब यह राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का प्रश्न है, आप बुन्देलखण्ड से स्वयं सेवको को नागपुर अवश्य भेजिए ।[१]

पं० नेहरू के कहने पर दीवान साहब ने सत्याग्रहियों के भेजने के सम्बंध में हाँ तो कर दी लेकिन उनकी समझ में एक भी ऐसा स्वयं सेवक नहीं था, जो नागपुर जाने के लिए तैयार हो । उन्होंने इस सम्बंध में झांसी के नेताओं के समक्ष नेहरू अपील को रखा किन्तु किसी ने भी सत्याग्रही भेजने का दायित्व नहीं लिया । दीवान साहब बैलगाड़ी द्वारा मगरौठ से जराखर पहुँचे, जहाँ श्री भाई ने उनका श्रद्धापूर्वक सम्मान किया और तब उनसे अचानक मगरौठ पधारने का कारण पूँछा। इस पर दीवान साहब ने पं० नेहरू की नागपुर अपील को श्री भाई के सामने रखा; साथ ही दीवान साहब

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत के पुत्र डा० श्री कान्त जराखर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

ने श्री भाई से यह भी कहा कि मैं नेहरू जी के सामने वचन हार चुका हूँ कि नागपुर हेतु स्वयं सेवकों को भेजूँगा किन्तु यदि यहाँ से नागपुर झण्डा सत्याग्रह में कोई सत्याग्रही न गया तो मैं पं० नेहरू के सामने झूठा साबित हो जाऊँगा। इस पर श्रीपति सहाय रावत (श्री भाई) ने दीवान साहब से कहा कि यह तो राष्ट्र के सम्मान का प्रश्न है । आप चिन्ता न करें । मैं अपने साथ चार स्वयं सेवकों को लेकर नागपुर जाऊँगा । दीवान साहब को श्री भाई के इस आश्वासन से बहुत संतोष हुआ । वे चिन्ता मुक्त हो गये ।[१]

झण्डा सत्याग्रह में जराखर की भूमिका

बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) में हमीरपुर एक मात्र ऐसा जनपद था, जिसके जराखर नामक गाँव के पाँच सत्याग्रहियों ने नागपुर झण्डा सत्याग्रह में पूरे मनोयोग से भाग लिया । ये पाँच स्वयं सेवक थे – श्रीपति सहाय रावत, कीरत सिंह, इन्द्रजीत, पंचम और कुंजबिहारी । ये पंच पुरोधा पहले मगरौठ पहुँचे फिर वहाँ पर एक दिन विश्राम करके उरई होते हुए इलाहाबाद के लिए प्रस्थान किया। दीवान साहब भी इन सत्याग्रहियों के साथ इलाहाबाद तक गये। इन देश भक्तों के कूच के पूर्व दीवान साहब की बड़ी बहन ने पाँचों सत्याग्रहियो की भुजाओ का पूजन कर उन्हें आदर पूर्वक विदा किया।[२]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत के पुत्र डा० श्रीकान्त, जराखर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

सैलाब और सत्याग्रही

दीवान साहब और वे पाँच स्वयं सेवक जब उरई के लिए चले तो उस समय बेतवा नदी उफान पर थी। सारे लोग नाव पर सवार हुए। नाविकों ने नदी में किश्ती द्वारा हेलुवा नामक जलक्रीड़ा कर नाव में सवार सत्याग्रहियों का सम्मान कर विदा किया।[१]

दीवान साहब श्री भाई तथा शेष स्वयं सेवकों ने नाव से उतरकर १२ मील पद यात्रा की, तब कहीं जाकर वे सब उरई पहुँचे । पं० मन्नी लाल पाण्डेय झण्डा सत्याग्रह के लिए बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के अधिनायक नियुक्त किए गये थे। वे पाँचों सत्याग्रही पं० मन्नीलाल पाण्डेय के यहाँ उरई पहुँचे, वही पर रात्रि विश्राम किया। बुन्देलखण्ड के अधिनायक द्वारा निरीक्षित होने पर ही कोई स्वयं सेवी झण्डा सत्याग्रह में शामिल हो सकता था। पाण्डेय ने उन सभी पाँचों स्वयं सेवकों का निरीक्षण किया। उन्हें परिचय पत्र निर्गत किये। वे सभी स्वयं सेवी उरई से इलाहाबाद ट्रेन द्वारा गये, जहाँ के प्रांतीय कांग्रेस भवन में कई जनपदों के सत्याग्रही ठहरे थे।

जराखर के सत्याग्रहियों को मिलाकर एक सौ पच्चास सत्याग्रही नागपुर के लिए प्रस्थान किया। स्वयं सेवियों के कूच के पूर्व उ०प्र० के अधिनायक होने के नाते पं०

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४८।

नेहरू ने उन सभी का निरीक्षण किया। सभी स्वयं सेवियों को प्रांतीय कांग्रेस भवन में ठहराया गया था, वही पर सभी के लिए भोजन का प्रबंध था। पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ कांग्रेसी नेता महावीर त्यागी भी कांग्रेस भवन में पधारे थे। पं० नेहरू ने स्वयंसेवियों की जाँच के बाद उन्हें नागपुर झण्डा सत्याग्रह हेतु रवाना करने के साथ ही नागपुर पुलिस की बर्बरता से सत्याग्रहियों को अवगत भी कराया।[१]

पं० नेहरू ने स्वयं सेवियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नागपुर झण्डा सत्याग्रह मे शामिल सत्याग्रहियों को पुलिस बर्बरता पूर्वक पीट रही है और उन्हें जेल मे ठूँस रही है। उनके साथ अमानवीय व्यवहार भी कर रही है । जेल के भीतर मजिस्ट्रेट मुकदमा करने आता है, लम्बी सजायें भी दी जा रही हैं।

जेल के भीतर सश्रम कार्य करना पड़ता है, समय पर जेल के अन्दर काम पूरा न होने पर तन्हाई की सजा भी मिलती है, उस सजा में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। इन सब दु:खो को आप सभी को सहन करना पड़ेगा किन्तु आप लोग माफी नहीं माँगेगें, इससे राष्ट्र का अपमान होगा। इन परेशानियों से जिसे परहेज हो, वह वहाँ न जाये, हमें अभी बता दें । हम उसका नाम सूची से अलग कर देगें । पं० नेहरू ने हर सत्याग्रही से उसके विचार जाने । हर स्वयं सेवी ने नेहरू को आश्वासन दिया कि

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४९।

हम हर कष्ट सहन करने को तैयार है । हमे चाहे जो सजा मिले किन्तु हम माफी नहीं माँगेगें।

पं० जवाहर लाल नेहरू ने सभी सत्याग्रहियों को अनुमति प्रदान करने के साथ ही उन्हें परिचय पत्र भी निर्गत किया, साथ ही उन्होंने एक गैर सत्याग्रही को स्वयं सेवियों के साथ मार्ग में प्रबंधन के लिए भेजा, साथ ही यह भी कहा था कि सत्याग्रहियों को वह नागपुर तक पहुँचा भी दें । हर सत्याग्रही को इलाहाबाद से नागपुर तक का टिकट भी दिया गया । दीवान शत्रुघ्न सिंह सत्याग्रहियों को विदा करने रेलवे जंक्शन तक गये। वे जब तक ट्रेन नही छूटी, स्वयंसेवियों का हौसला आफजाई करते रहे। ट्रेन छूटने के कुछ समय बाद दीवान साहब आनंद भवन वापस हो गये।[१]

सभी सत्याग्रही इलाहाबाद से जबलपुर पहुँचे, वे वहाँ से गोंदिया जंक्शन गये। वे सब रात्रि में वहीं ठहर गये क्योंकि अगले दिन प्रातः ९ बजे नागपुर के लिए ट्रेन मिलनी थी । गोंदिया जंक्शन में बहुत से सी०आई० डी० पुलिस वाले भी थे। वे सब सत्याग्रहियों के साथ चल रहे थे। इलाहाबाद पुलिस ने नागपुर की पुलिस को तार द्वारा पहले से ही एक सौ पचास सत्याग्रहियो के आगमन की सूचना भेज दी थी। गोदिंया जंक्शन में राष्ट्रप्रेमी सेठ साहूकारों ने सत्याग्रहियों की अच्छी खासी आवभगत की।

---

१. स्वातन्त्र्य संग्राम सेनानी रामानुज सिंह चन्देल, हमीरपुर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

ट्रेन में ध्वजान्दोलन

गोंदिया जंक्शन के रैन बसेरा में जब उत्तर प्रदेश के एक सौ पचास सत्याग्रही रात्रि विश्राम कर रहे, उस समय वहाँ के मददगारों ने स्वयं सेवियों को परामर्श दिया कि आप सब लोग गोंदिया से नागपुर पैदल यात्रा करके जाइये, अन्यथा नागपुर से पहले किसी भी स्टेशन में पुलिस आप सभी को गिरफ्तार कर लेगी, क्योकि नागपुर के जिस मैदान (फील्ड) में सत्याग्रह होना है, सरकार वहाँ स्वयं सेवियों को पहुँचने ही नहीं देना चाहती । गोंदिया से नागपुर अस्सी मील की दूरी पर था। गोंदिया से नागपुर तक का मार्ग पहाड़ियों से आच्छादित था। मार्ग में ऊँचे –ऊँचे घाट थे, जंगली रास्ता था। इन सब कठिनाइयों को दृष्टि में रखकर सत्याग्रहियों ने यह निर्णय लिया कि जब नागपुर से पहले ही पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जाना तय है तो हम ट्रेन में झण्डा बाँधकर उसे फहरायें। रेलगाड़ी को ही फील्ड क्यों न बनाया जाय।[१]

स्वयंसेवियों ने गोंदिया के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं से दो बड़े बांस मँगवाये और उन बाँसों में राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा पहनाया गया। ट्रेन के डिब्बे के दरवाजे के हैण्डलों या हत्थों पर झण्डे वाले बाँस कसकर बाँध दिये गये और सत्याग्रहियों ने यह घोषणा की कि जब तक एक सौ पचास सत्याग्रहियों में एक भी सत्याग्रही जीवित है, तब तक इन झण्डों को ट्रेन से कोई हटा नहीं सकता। ट्रेन समय पर गोंदिया से नागपुर के लिए रवाना हुई ।[२]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

एक्सप्रेस ट्रेन की गति जितनी तीव्र होती थी, उससे ट्रेन के डिब्बे के दरवाजे पर बँधे झण्डे उतने ही लहराकर शानदार आकर्षक छटा बिखेर रहे थे; साथ ही सत्याग्रहियों के जयकारों के निनाद से वातावरण देशभक्तिमय बन रहा था। उस ट्रेन से कुछ अंग्रेज अधिकारी भी यात्रा कर रहे थे, जब ट्रेन कई स्टेशनों को पार करती हुई बालाघाट स्टेशन पर रुकी तो ट्रेन का गार्ड सत्याग्रहियों के पास आकर बड़े रोब से बोला कि ''तुम लोग पैदल जाना माँगता है' इस पर स्वयं सेवी दल के नेता ने कहा कि हमें इसी गाड़ी से जाना माँगता है। गार्ड ने सत्याग्रहियों से कहा कि गाड़ी से ध्वज हटाओ, हमें सिगनल नहीं दिखायी पड़ता। गार्ड के प्रश्न का जवाब देते हुए स्वयं सेवियों ने कहा कि गाड़ी के डिब्बे में जब तक एक भी सत्याग्रही जिंदा है, तब तक ट्रेन से फ्लैग नहीं हट सकता । इसके बाद अंग्रेज गार्ड स्टेशन मास्टर को लेकर पुनः स्वयंसेवियों के पास आया।[१]

स्टेशन मास्टर हिन्दुस्तानी था। सत्याग्रहियों ने उससे कहा कि आप इस अंग्रेज गार्ड को अंग्रेजी में समझा दें कि झण्डा ट्रेन से नहीं हटेगा। गार्ड सत्याग्रहियों के दृढ़ निश्चय को सुनकर घबरा गया और अपनी जिद छोड़ दी । ट्रेन शाम ५ बजे नागपुर पहुँच गयी । स्टेशन पर बहुत सा पुलिस बल तैनात था। स्टेशन पर सशस्त्र पुलिस का सख्त पहरा था। गाड़ी रुकने पर सत्याग्रहियों को एक पृथक फाटक से निकाला गया।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

जैसे ही एक सौ पचास सत्याग्रही फाटक से निकले वैसे ही गेट के बाहर मैदान में पुलिस के एक बड़े दल ने उन्हें घेर लिया, एक अंग्रेज अधिकारी ने सत्याग्रही से पूँछा कि तुम लोग कहाँ जा रहे हो । इस पर सत्याग्रह दल के नेता ने अंग्रेज अधिकारी से कहा कि हम लोग झण्डा सत्याग्रह के लिए फील्ड की तरफ जा रहे हैं। इसके बाद गोरे अधिकारी ने स्वयं सेवियों से कहा कि तुम लोग वहाँ नही जा सकते हों क्योकि वहाँ जाने के लिए सरकारी आदेश नही है, सत्याग्रही नेता ने अधिकारी को जवाब देते हुए कहा कि हम लोग सरकारी आदेश का ही उल्लंघन करने के लिए आयें है । सरकारी आर्डर को भंग करना ही हम अपना कर्तव्य समझते हैं। इसके बाद गोरे अधिकारी ने एक हिन्दुस्तानी अधिकारी को बुलाकर कहा कि आप इन्हें हिन्दी भाषा में समझा दें कि सत्याग्रह के लिए फील्ड पर जाना कानूनन मना है। आप लोग अपने को गिरफ्तार माने।[१]

हिन्दुस्तानी अधिकारी ने जब सत्याग्रहियों से गोरे अधिकारी की बात बतायी, साथ ही यह भी कहा कि आप लोग थाने चलें तो इस पर सत्याग्रहियों ने पुलिस थाने जाने से इन्कार कर तेजी से झण्डा सत्याग्रह हेतु फील्ड की ओर बढ़ने लगे । सत्याग्रहियों के इस कदम पर गोरे अफसर ने सीटी बजाकर बहुत से अंग्रेज जवानों को बुला लिया । वे सारे गोरे जवान सत्याग्रहियों के सामने सीना तान कर खड़े हो गये। इधर स्वयंसेवी अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते गये। सत्याग्रहियों के एक तीव्र रेला के सामने पुलिस वाले ठहर न पाये। उन्हें पीछे हटना पड़ा ।[२] पुलिस अधिकारियों

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत के पुत्र डा. श्रीकान्त, जराखर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

ने जब देखा कि सत्याग्रहियों का जोश कम नहीं हो रहा है, वे निर्भीकता पूर्वक आगे की ओर बढ़ रहे हैं तो पुलिस अधिकारियों ने सिपाहियों को सत्याग्रहियों पर हमला करने का आदेश दे दिया। सिपाहियों ने स्वयंसेवियों को बंदूक के कुंदों से मारना शुरू कर दिया।[१]

पुलिस की अमानवीय यातनाओं से अनेक सत्याग्रही हताहत हुए । जराखर (बुन्देलखण्ड) के सत्याग्रही श्री भाई के छाती में गंभीर चोट आयी, साथ ही उनके शेष बुन्देलखण्ड के स्वयंसेवी भी घायल हो गए । इसके बाद बहुत से हिन्दुस्तानी सिपाही आये और पाँच –छः सिपाहियों को एक–एक सत्याग्रही के लिए लगाया गया। सभी सत्याग्रहियों को मिलिट्री के ट्रको में ठूँस कर जेल भेजा गया।

सत्याग्रही और जेल-फाटक

स्वयंसेवियों को जबरन ट्रकों में लादकर जब– जेल पहुँचाया गया तब तक सूर्यास्त हो चुका था, साथ ही जेल का फाटक भी बंद हो चुका था। सन्तरी गेट पर बंदूक लिए तैनात था। जेलर को एक सौ पचास सत्याग्रही कैदियों का चालान दिया गया, उसने चालान तो ले लिया किन्तु जेल के नियमानुसार सायं एक बार फाटक बन्द हो जाने के पर दुबारा नहीं खुल सकता । इस कारण एक सौ पचास सत्याग्रहियों को जेल के लक्कड़खाने में बंद कर दिया गया । स्वयं सेवियों को उसी नारकीय कैद

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

खाने में रात बितानी पड़ी, उस लक्कड़खाने में कहीं से भी हवा की निकासी का कोई प्रबंध नहीं था। वर्षाऋतु थी, उमस अपने उत्कर्ष पर थी, वहाँ पर भयानक अँधेरा था। घुन के रूप में कीड़े, चीटियाँ तथा दीमक स्वयं सेवियों के शरीर से चिपट कर रात भर रक्त चूसते रहे । सत्याग्रही कैदियों को कलकत्ता की काल कोठरी स्मरण हो आयी।

गोरों को कैदियों को मात्र लक्कड़खाने में डाल देने मात्र से संतोष नहीं हुआ, लोहार ने हर कैदी के दाहिने पैर में लोहे का एक कड़ा ठोक दिया। उसके बाद सभी स्वयं सेवियों को बैरकों में भेज दिया गया, जहाँ पर बड़े —बड़े लकड़ी के खूँटे गड़े थे तथा लोहे की मोटी जंजीरें भी थीं। हर सत्याग्रही को उसके पैर में पड़े कड़े से जंजीर को फँसा कर खूँटो से बाँध दिया गया। [१]

जिस तरह से बैलों को एक कतार में बाँध दिया जाता है, उसी तरह से सभी स्वयंसेवी बाँध दिए गये। कैदियों को मूंज का एक फट्टा, एक काला कम्बल, एक लोहे का तसला तथा एक कटोरी दी गयी; जेल प्रदत्त इसी सामान से उन्हें अपने जीवन को दैनन्दित करना होता था। कैदियो को दो मिट्टी के गमले दिए गये थे, जिनमें से एक पेशाब करने के लिए तथा दूसरा शौच के लिए था। सभी सत्याग्रहियों को एक दूसरे से सटाकर बांध दिया गया था। उन्हे बंधे—बंधे ही खाना पीना तथा टट्टी —

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—५०

पेशाब करना पड़ता था। मुकदमा— चलने तथा सजा होने के पूर्व तक कैदियों को उसी हालात पर रहना पडता था।

मुकदमा तथा सजा

दूसरे दिन मजिस्ट्रेट ने जेल के अन्दर ही मुकदमे की सुनवायी प्रारम्भ की । नागपुर झण्डा सत्याग्रह में शामिल स्वयंसेवियों को दो श्रेणियों में रखा गया था— आवारागर्दी वाले कैदी तथा राजनैतिक कैदी, जो स्वयंसेवी नागपुर की सिविल लाइन के फील्ड पर झण्डा फहराता था, उसे राजनैतिक कैदी की श्रेणी में रखा जाता था तथा उस पर राजनीतिक धारा लगायी जाती थी और जो सत्याग्रही झण्डा फहराते किसी अन्य स्थान पर पकड़े जाते थे, उन पर आवारागर्दी से सम्बंधित धारा १०९ लगायी जाती थी जेल कर्मी उन्हे उड़न टप्पू कहते थे; जहाँ कांगेस का प्रयास था कि सत्याग्रही नागपुर के सिविल लाइन के फील्ड में ही ध्वज फहराते पकड़ा जाय ताकि झण्डा सत्याग्रह का सच जनता के सामने भी आ सके, वहीं ब्रिटिश सरकार की सोच थी। कि स्वयं सेवी नागपुर के फील्ड तक न पहुँच पाये।[१] सरकार ने नागपुर के चारो तरफ कड़ी नाकेबंदी की थी, फिर भी सत्याग्रही किसी न किसी तरह नागपुर के सिविल लाइन के फील्ड तक पहुँच ही जाता था। भारत के हर प्रांत से सत्याग्रही झण्डा सत्याग्रह हेतु नागपुर पहुँच रहे थें। मजिस्ट्रेट ने उ०प्र० के एक सौ पचास सत्याग्रहियों को धारा १०९ के अन्तर्गत एक वर्ष की कड़ी कैद की सजा सुनायी । सभी एक सौ

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—५०

पचास स्वयंसेवियों को जेल के भीतर चक्कर में ले जाये गये । नागपुर जेल वाले चक्कर को गोल कहते थे । नागपुर जेल में दो गोल थे । जेल कर्मियों ने उ०प्र० के स्वयं सेवियां को अलग—अलग गोल में रखा । सत्याग्रहियों के घर के कपड़े उतरवा दिये गये, बदले में उन्हें जेल के कपड़े पहनने को दिए गए। जेल के कपड़ो में कैदियों को एक टाट का फट्टा, दो कम्बल, दो नेकर, दो आधी आस्तीन वाले कुर्ते तथा एक काली टोपी दी जाती थी। उ०प्र० में कैदियों को लाल टोपी दी जाती थी।[१]

सत्याग्रही और नागपुर जेल की यातनायें

अंग्रेज सरकार ने नागपुर जेल में सत्याग्रहियों के साथ अमानवीय आचरण किया। उनसे पाशविक कार्य लिया जाता था। नागपुर जेल में कागज बनता था। पुराने कागजों की पत्रावलियों को एक हौज में सड़ने के लिए डाल दिया जाता था। उन फाइलों में आलपीने लगी रहती थीं। जेल कर्मियों को उनकी जानकारी रहती थीं; लेकिन वे जानबूझ कर फाइलों से कीले नहीं निकालते थें। स्वयंसेवियों को पीड़ा पहुँचाने के लिए ही कीले लगी रहतीं थीं। उस सड़ें हुए कागज को पैरो से रौंदा जाता था, रौंदते—रौदते उस सड़े हुए कागज की लुगदी बन जाती थी । सड़े हुए कागजों को रौंदते समय सत्यागहियों के पैरों में कीले घुस जाती थीं, उस वक्त स्वयंसेवियों को बहुत कष्ट उठाने पड़तें थे[२], कील घुसने के कारण यदि सत्याग्रही कागज को रौदने से मना करता था तो उसकी जेल के बड़े अधिकारियों के सामने पेशी होती थी। उस स्थिति

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह यादव, राठ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर
२. वही ।

में जेल अधिकारी स्वयं सेवियों को तन्हाई की सजा उनके पैरों में डंडा—बेड़ी डालकर देता था। उसे खड़ी हथकड़ी की सजा भी कहते थे। [१]

डंडा—बेड़ी को मतभंगा भी कहते थे। इस दण्ड के अन्तर्गत सत्याग्रही के पैरो के बीच में बेड़ियों में लोहे का आड़ा डंडा पड़ा रहता था। उस डण्डें के कारण कैदी सीधा चल नहीं पाता था, दोनो पैर फैलाकर चलना बंद हो जाता था, धीरे —धीरे चलना होता था। सोने तथा बैठने में पैर फैले रहते थे। कैदियों को जेल के अन्दर सजा देने का यह भी एक साधन था।

जेल की दूसरी सजा खड़ी हथकड़ी होती थी, पक्की दीवाल में हथकड़ी इतनी ऊँचाई पर ठुकी रहती थी कि जिस कैदी को खड़ी हथकड़ी की सजा देनी होती थी, उसके दोनों हाथ हथकड़ी में फाँस दिए जाते थें और उस कैदी को दीवाल में ठुकी हुई हथकड़ी मे लटका दिया जाता था, उसके केवल पैर के अँगूठे जमीन को स्पर्श करते रहते थे । इस तरह ऐसी सजा प्राप्त बन्दी दीवाल पर घंटो लटका रहता था। वह उस समय टट्टी— पेशाब भी नही कर सकता था।

सड़े हुए कागज को रौदतें समय कैदियों के पैरों में जो कीले घुस जाती थीं, उन्हें निकालने की कोई व्यवस्था नहीं होती थी। पैरो के तलवों में वे कीले कालान्तर मे

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

सड़ान्ध पैदा कर देती थीं । इस तरह से कैदियों को जेल में जहाँ एक तरफ नारकीय यातनायें दी जाती थीं, अंग्रेज अधिकारी ऐसा जान बूझकर इसलिए करते थे कि सत्यागही माफी माँगकर जेल से निकल जायें और फिर सरकार विरोधी कार्य न करें किन्तु वहीं दूसरी तरफ सत्याग्रही राष्ट्र के सम्मान के लिए झण्डा लेकर अपने निवास से निडरता पूर्वक चलता था, वह बड़ा से बड़ा बलिदान करने को उद्धत रहता था। सजा काल में उसके मुँह से भूलवश भी आह तक नहीं निकलती थी, वह आह के स्थान पर भारत माता की जय तथा इन्कलाब जिन्दावाद का घोष करता था।[१] वह राष्ट्र हित में हर सजा भुगतने को तैयार रहता था।

पाशविक आहार

नागपुर जेल में झण्डा सत्याग्रहियों के साथ जो व्यवहार किया जाता था, वह पशुवत भी नहीं था, उससे भी गया गुजरा होता था। उन्हें भोजन के नाम पर जो आहार उपलब्ध कराया जाता था। वह पशुओं के लायक भी नहीं होता था। सत्याग्रहियों को सड़ी ज्वार के मोटे आटे की उबली रोटी तथा लोहे के काले हण्डे में उबली दाल के नाम पर नमकीन पानी दिया जाता था, उसमें नाम मात्र के लिए दाल के कुछ दाने होते थे। स्वयं सेवियों को साग के नाम पर घास उबाल कर दी जाती थी, जिसमें पड़े हुए टिड्डे साफ दिखायी पड़ते थे । उन्हें कंकड़ पत्थर मिलाकर चावल दिया जाता था।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

इस तरह से बंदियों को जो भोजन मिलता था, वह पशुओं के लायक भी नहीं होता था।

नागपुर झण्डा सत्याग्रह में देश के जिन सभी प्रांतो से सत्याग्रही आये थे, उनमें धनी एवं निर्धन सभी वर्ग के लोग थे, साथ ही उस सत्याग्रह में सेठ साहूकार, पत्रकार लेखक एवं वकील भी सहभागी थे। क्षेत्र विशेष के आधार पर खान—पान अलग—अलग होने के बावजूद माँ भारती के ये सभी सपूत आपस में जिस सौहार्द एवं सामंजस्य के साथ रहते थे, वह देखते ही बनता था। इन वीर सत्याग्रहियों ने भोजन को लेकर कभी बावेला खड़ा नही किया। वे सभी राष्ट्रीय बलि —वेदी पर आत्म समिधायें देने को तत्पर थे ।

अपमानित करने का एक घिनौना ढंग

ब्रिटिश सरकार सत्याग्रहियों को अपमानित करने के नये नये तरीके खोजती थी। नागपुर जेल में उनके साथ बहुत ही घ्रणित व्यवहार होता था। सत्याग्रहियों के शौच के लिए परदेदार कोई दीवाल नहीं थी। उनके लिए कदमचे एक पंक्ति में रख दिए गये थे, जब सत्याग्रही सुबह शाम शौच के लिए जाता था तो उसके साथ में एक सिपाही भी रहता था, जिसके हाथ में घंटी रहती थी ।[१]

घंटी बजते ही सभी सत्याग्रहियों को एक साथ कदमचों पर खडा किया जाता था,

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—५१

दूसरी घंटी बजने पर लंगोटा खोला जाता था तथा तीसरी घंटी बजने पर सभी एक साथ शौच के लिए बैठ जाते थे। शौचकर्ताओं के पीछे एक झाडू वाला कैदी घूमता रहता था, चौथी घंटी बजने पर शौच करने वालों को खड़ा होना पड़ता था, यदि खड़े होने में विलम्ब हुआ तो तुरन्त झाडू वाला पीठ पर झाडू से वार करते हुए कहता था कि घर की तरह शौच कर रहा है, जेल की तरह शौच कर। इसको शौच परेड कहा जाता था । नागपुर जेल का जेलर आयर लैण्ड का निवासी था जो सत्याग्रहियों पर सदैव व्यंग बाण चलाता रहता था।[१]

सिविल लाइन पर झण्डारोहण

नागपुर झण्डा सत्याग्रह में देश के कोने—कोने से सत्याग्रहीं आये थे ब्रिटिश सरकार भी उससे परेशान हो गयी थी । उसे इस तथ्य का अनुमान नहीं था कि नागपुर झण्डा सत्याग्रह सारे देश का झण्डा सत्याग्रह हो जायेगा । इस सत्याग्रह से केवल नागपुर की ही नहीं वरन पूरे मध्य प्रदेश की जेलें सत्याग्रहियों से भर गयीं थीं और सत्याग्रह आगे बढ़ता ही जा रहा था। इस पर चूंकि मध्यप्रदेश की कौंसिल में कांग्रेस का पूर्ण बहुमत था, मध्य प्रदेश की कौंसिल की बैठक में कांग्रेस ने अपना प्रस्ताव बहुमत से पास कर दिया कि कांग्रेस का झण्डा एक राष्ट्रीय झण्डा है।[२] उसे भारत के हर प्रान्त तथा राष्ट्र के हर स्थान पर फहराया जा सकता है । भारत राष्ट्रीय

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही ।

झण्डा का फहराया जाना कानूनी है। इसलिए सिविल लाइन नागपुर में भी राष्ट्रीय झण्डे का फहराना वैधानिक है । मध्य प्रदेश कांग्रेस कौंसिल के इस प्रस्ताव के सर्व सम्मति से पास होने पर नागपुर सिविल लाइन में झण्डा फहरा दिया गया।[१]

माखनलाल चतुर्वेदी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा झण्डा जुलूस सिविल लाइन होकर निकाला गया, अंग्रेज सरकार चुप होकर बैठ गयी । सिविल लाइन में ध्वजारोहण के बाद दूसरे दिन मध्य प्रदेश सरकार ने सभी सत्याग्रहियों को एक साथ छोड़ दिया। नागपुर जेल से छूटे सत्याग्रहियों का जोरदार ढंग से स्वागत किया गया। सारा नागपुर शहर राष्ट्रीय झण्डे की जय, भारत माता की जय, गांधी जी की जय के नारों से निनादित हो उठा।

दूसरे प्रान्तों से आये सत्याग्रही अपने—अपने स्थानों के लिए रवाना हुए । उस बीच सत्याग्रहिंयों का आपसी सौहार्द और सद्भाव देखते ही बनता था, सारा वातावरण स्नेहिल था। बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) से नागपुर सत्याग्रह में गये, श्रीपति सहाय रावत, कीरत सिंह, कुंजबिहारी पंचम तथा इन्द्रजीत ने भी अपने जनपद के लिए प्रस्थान किया। ये बुन्देलखण्ड के सत्याग्रही नागपुर से चलकर कुलपहाड़ रेलवे स्टेशन पहुँचे। जराखर के इन जांबाजों ने सचमुच सत्याग्रह में सहभागी होकर सम्पूर्ण बुन्देल भूमिका नाम रोशन किया।[१]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—५२

झण्डा सत्याग्रह में भाग लेने वाली महिलायें

राष्ट्रीय तिरंगा देश की शान एवं सम्मान का प्रतीक था। गोरी सरकार भारतीय राष्ट्रीय तिरंगे के प्रचार — प्रसार तथा आरोहण को फूटी आंखो भी देखना नहीं चाहती थी। १९२३ से सारे देश में जब तिरंगे का प्रचार प्रारम्भ हुआ, जगह—जगह ध्वज संचलन हुआ। उसमें सारे देश की सहभागिता थी। बुन्देलखण्ड के पुरूषों ने ही नहीं अपितु अनेक महिला सेनानियों ने भी खुले दिल से झण्डा सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटिश सरकार राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराना अपराध मानती थी, झण्डा फहराने वाले के पीछे पुलिस का पहरा रहता था, सरकार उसकी चोर—डाकुओं की तरह निगरानी रखती थी, साथ ही वह झण्डा भी छीन लेती थी, उस समय हमीरपुर जनपद में ध्वज युद्व के विविध तरीके अपनायें जाते थे। कांग्रेसी स्वयं सेवक अपनी टोपियों, कुर्तों एवं मकानों पर झण्डे लगाते थें, कोई भी कार्यकर्ता बिना झण्डे एवं बैज के बाहर नहीं निकलता था, झण्डे का विस्तार निरन्तर बढ़ता ही जाता था, हर तरह के उत्सवों एवं त्योंहारों तथा बारातों में भी झण्डा लगाया जाने लगा। झण्डे द्वारा जनता में स्वतंत्रता की भावना जाग्रत हुई ।

सारे जनपद की महिलायें झण्डा जुलूस में सक्रिय हो गयीं। वे राठ, मौदहा, हमीरपुर, कुलपहाड़ तथा महोबा के कांग्रेस कार्यालय से झण्डे लेकर झण्डा गायन करती हुई ध्वज जुलूस निकालती थी। वे निम्न ध्वज गायन करती हुई जुलूस

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत,जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

निकालती थीं।[१]

कौमी तिरंगें झण्डे ऊँचे रहो जहाँ में,

हो तेरी सर बुलन्दी ज्यों चांद आसमां में ।

तू मान है हमारा, तू शान है हमारी,

तू जीत का निशां हो, तू जान है हमारी।

हर एक बसर की लब पै, जारी है ये दुवायें,

कौमी तिरंगा झण्डा हम शौक से उड़ायें ।

आकाश औ जमीं पर हो तेरा बोलबाला,

झुक जाय तेरे आगे हर ताज तख्तवाला।

हर कौम की नजर में तू हो निशां अमन का,

हो ऐसे मुअस्सर सारा तेरा जहाँ हों।

मुश्ताक के नवाब खुश होके गा रहा हैं,

सिर पर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है।

हमीरपुर जनपद की वीर महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में दल बनाकर जिस समय तिरंगा झण्डा लेकर समवेत गान करती हुई राठ तहसील के सामने से गुजरती थीं तो सिपाही महिलाओं पर टूट पड़ते थे, महिलओं के हाथ से झण्डा छीनने

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

लगते थे किन्तु महिलाऐं झण्डे से चिपट जाती थीं, जब पुलिस वाले महिलाओं से झण्डा छीन नहीं पातें थे तो उन पर लाठी और डण्डों से प्रहार करतें थे, महिला सेनानी जब तक घायल नहीं हो जाती थीं या उनके सिर से रक्त की धार बहने नहीं लगती थी, तब तक उनका जुलूस बंद नहीं होता था। उसके बाद पुलिस का एक बड़ा दल आकर सभी महिला सेनानियों को गिरफ्तार कर लेता था।[१] अब यहाँ उन महिला सेनानियों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा, जिन्होंने हमीरपुर जनपद के झण्डा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।—

गंगा देवी लोधी और स्वाधीनता आन्दोलन

राठ से लगभग दस—बारह किमी० की दूरी पर अवस्थित गोहाण्ड एक ऐसा गाँव हैं जहाँ के अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने आजादी के आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभायी है। इसी गाँव की उदयभान लोधी की पत्नी गंगादेवी की भी सामरिक सहभागिता कम महत्वपूर्ण नहीं रही, १८९५ में जन्मी गंगा देवी लोधी को पारिवारिक परिवेश में पुरोधत्व की शिक्षा नहीं मिली थी, किन्तु गोहाण्ड में उदयभान लोधी से परिणय सूत्र में बंधने के बाद उनमें स्वतंत्रता की प्रेरणा तब जाग्रत हुई, जब गोहाण्ड के नवादा मोहाल से छपकर एक अखबार निकला, उस पत्र के सामीप्य ने गंगादेवी की स्वातन्त्र्य भावना को उद्वेलित किया। उन्हें हमीरपुर जनपद की क्रांतिनेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी का सानिध्य मिला।

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—५७।

गंगा देवी को अपने पति का आजादी के लिए समर्थन प्राप्त था। घर वाले गंगादेवी को जेल जाने की अनुमति नहीं दे रहे थे, किन्तु उन्होने इसकी परवाह नहीं की, वे बराबर आजादी के लिए संघर्ष करती रहीं। राठ के महिला ध्वज संचलन में गंगा देवी की सराहनीय भूमिका रही। अंग्रेज इनके हाथ से तिरंगा झण्डा नहीं खीच पाये थे। गोहाण्ड के अथाई स्थान पर झण्डे को बांधा गया था। इन्हे १७ (१) (२) सी०एल०ए० तथा १८ (१) प्रेस एक्ट के अन्तर्गत छः—छः माह अर्थात ०१ वर्ष की कड़ी कैद की सजा मिली, साथ ही गंगादेवी को दस—दस रूपयों का जुर्माना भी हुआ था, जुर्माना न अदा करने पर एक माह की सख्त सजा की व्यवस्था थी।

गंगादेवी को राजाबेटी, गोमती देवी तथा भारत पुत्री सहित अनेक जुझारू महिलाओं का सामीप्य प्राप्त रहा। इनके साथ जेल में इनकी छः माह की पुत्री भी थी। गंगा देवी ने फतेहगढ़ जेल में जेल व्यवस्था के विरोध में ०८ दिनों का आमरण अनशन भी किया था।[१]

गुलाब देवी और स्वातन्त्रय समर

राठ के पास बीरा एक ऐसा गाँव है, जिसे सचमुच यदि वीर गाँव कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस गाँव के लगभग २२ ऐसे जुझारू जवान रहे है, जिनकी आजादी के संघर्ष में सराहनीय भूमिका रही है। इसी गाँव के बैजनाथ लोधी की सहधर्मिणी गुलाब देवी का भी स्वाधीनता आन्दोलन में अच्छा योगदान रहा है।

---

१. महिला सेनानी गंगा देवी के पुत्र रामकिशुन से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

१९११ में जन्मी गुलाब देवी बैजनाथ लोधी से वैवाहिक रिश्ते से जुड़ने के बाद धीरे–धीरे आजादी की ओर मुखातिब हुई, उन्हें रानी राजेन्द्र कुमारी, भगवती शुक्ल तथा गंगादेवी जैसी कई महिलाओं का सम्पर्क प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप गुलाब देवी भी आन्दोलन से जुड़ गयीं।[१]

गुलाब देवी को उनके पति ने भी संघर्षी सहभागिता के लिए प्रोत्साहित किया। राठ तहसील में जब झण्डा आन्दोलन निकला तो उसमें गुलाब देवी भी शामिल हुयी, साथ ही बीरा गाँव में जगह– जगह ध्वज लगाने में गुलाब देवी की अच्छी भूमिका रही, अंग्रेजों को जब इसकी भनक लगी कि बीरा गाँव में कई स्थानों पर झण्डे लगे हुए हैं तो पुलिस दल गाँव पहुँच गया, गाँव वालों ने अंग्रेजों को पानी तक पीने को नहीं दिया। गाँव की महिलाओं ने गुलाब देवी के नेतृत्व में पुलिस वालों पर खपरैल फेंककर मारे तथा झण्डे उतारने नहीं दिए।

इस तरह बीरा की इस वीर महिला का स्वाधीनता समर में शानदार योग दान रहा।

सरस्वती देवी और स्वतन्त्रता संग्राम

महोबा से लौड़ी मार्ग के मध्य अवस्थित इटवा गाँव में रघुनाथ प्रसाद कायस्थ के

---

१. महिला सेनानी गुलाब देवी के पुत्र केशव सिंह से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

घर सरस्वती देवी का १८८६ ई० में जन्म हुआ था। इनके पिता के चार पुत्रियाँ थीं। सरस्वती देवी ने इटवा में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की तत्पश्चात इनका जैतपुर निवासी मण्टीलाल सक्सेना से १९०७ में विवाह हो गया। सरस्वती देवी ने जैतपुर आकर अपनी शिक्षा पर ध्यान दिया।[१]

मण्टीलाल पहले पटवारी रहे, तत्पश्चात अध्यापक हो गये। जैतपुर बुन्देलखण्ड की एक छोटी सी रियासत रही है, वहाँ के बुन्देला शासक राजा पारीक्षत का शौर्य लोक विश्रुत था। वे १८५७ के पूर्व १८४२ के विद्रोह के सूत्रधार थे। राजा परीक्षत ने ही सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड में अंग्रेजो से लोहा लिया था।

ऐसी शौर्यगर्भा धरती तथा तत्कालीन जनपद के संघर्षी योद्धाओं से मण्टीलाल को प्रेरणा मिली और सरकारी नौकरी को छोड़कर आजादी के पथ के पथिक बन गये और जीवनान्त देशधर्मी बने रहे ।

मण्टीलाल सक्सेना की पत्नी सरस्वती देवी को अपने पति तथा रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी अरजरिया तथा अन्य महिला सेनानियों से स्वातन्त्रय समर की प्रेरणा प्राप्त हुई और वे आजादी के संघर्ष में कूद पड़ी। जनपद के झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन में सरस्वती देवी ने खुलकर भाग लिया। कुलपहाड़ में निकले झण्डा जुलूस में इनकी सराहनीय सहभागिता रही। सरस्वती देवी को सी०एल०ए०की धारा १७(१)

---

२. महिला सेनानी सरस्वती देवी के पुत्र परमेश्वरी दयाल जैतपुर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर

के अन्तर्गत १९३२ में तीन माह की कठोर सजा मिली।

सरस्वती देवी के सरयू देवी, मुन्नी देवी तथा गोमती देवी नाम की तीन पुत्रियां हैं तथा परमेश्वरीदयाल नाम के एक पुत्र हैं। देश की आजादी में— सरस्वती देवी के अनुदाय को भुलाया नहीं जा सकता। देश आजाद होने के बाद सरस्वती देवी १९५२ से १९५७ तक जैतपुर की प्रधान रहीं। उसके बाद मण्टीलाल सक्सेना जैतपुर के २७ वर्षों तक निर्विरोध प्रधान रहे। मण्टीलाल सक्सेना के प्रयासों से ही जैतपुर में सरकारी अस्पताल, गाँधी आश्रम, ब्लाक तथा राजकीय इंटर कालेज स्थापित हुये।

सरस्वती देवी अजादी के बाद जैतपुर के विकास तथा विशेष रूप से महिला उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहीं। आजादी के संघर्ष काल में वे जितनी सक्रिय रहीं, उससे कहीं कम वे स्वातंत्र्योत्तर काल में गतिशील नहीं रहीं । उनके दिल में जैतपुर जैसे पिछड़े कस्बे के विकास के लिए एक कसक थी, एक दर्द था, जिसे वे यावत जीवन प्रकट करती रहीं। वे एक वीर महिला थीं। उनके संघर्षी तथा विकासशील कृतित्व को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस शतजीवी महिला का २३ दिसम्बर १९८६ को निधन हो गया।[१]

रामप्यारी देवी और स्वाधीनता आन्दोलन

आजादी के संघर्ष में खास राठ ही नहीं अपितु राठ के लगभग हर गाँव की

---

२. महिला सेनानी सरस्वती देवी के पुत्र परमेश्वरी दयाल जैतपुर से लिए गये साक्षत्कार के आधार पर

अपनी एक अलग पहचान रही है। राठ जैसे जुझारू नगर में ०१ अक्टूबर १९१९ को रतनलाल अग्रवाल नामक एक ऐसे नर—नाहर का जन्म हुआ था, जिसने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर चलकर आगे अपनी एक वैशिष्ट पहचान बना ली। राठ एक ऐसा नगर है, जहाँ पर लगभग ४०ऐसे स्वातन्त्र्य शूर पैदा हुए है, जिन्होंने स्वातंन्त्रय वेदी पर अपने—अपने तरीके से तरस्विता की आहुति दी है।

यहीं के रतनलाल विद्यार्थी की पत्नी रामप्यारी एक ऐसी वीर महिला हुई है, जिन्होने आजादी के आन्दोलन में समर्पित होकर योगदान प्रदान किया। रामप्यारी वीरभूमि झांसी में पैदा हुई थीं, इसलिए उनके संस्कारों में वीरोचित धर्म का समावेश होना स्वाभाविक था। इन्हें स्वाधीनता समर में कूदने की प्रेरणा अपने पति रतनलाल विद्याार्थी तथा रानी राजेन्द्र कुमारी से मिलीं थी। हमीरपुर जनपद के झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन में रामप्यारी की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं रही। राठ नगर में निकले झण्डा जुलूस में रामप्यारी ने बढ़—चढ़ कर भाग लिया।[१]

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में भाग लेने के कारण यह परिवार बिल्कुल अकेला पड़ गया। घर के सामान की कुर्की भी हुई थी। उस समय रामप्यारी देवी के बड़े पुत्र वीरेन्द्र प्रकाश की उम्र मात्र ०६ माह थी, जब ये हमीरपुर जेल मे बंद थी, उस समय इनके पारिवारिक सदस्य बच्चे को दूध पिलाने के लिए जेल ले जाते थे।[१]

---

१. महिला सेनानी रामप्यारी देवी के पुत्र राजेन्द्र प्रकाश, राठ से लिए गये साक्षत्कार के आधार पर।

रामप्यारी देवी को १९४१ तथा १९४२ में भारतीय प्रतिरक्षा कानून के अन्तर्गत छः माह की सजा मिली थी। इस तरह यह वीर महिला स्वातंत्र्यकालीन तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत में सदैव राष्ट्र सेवी रहीं। रामप्यारी देवी का २७ फरवरी १९९४ को निधन हो गया।

निष्कर्ष

असहयोग आन्दोलन के स्थगन के बाद स्वातन्त्र्य संघर्षी आन्दोलन को धक्का लगा, गांधी जी ने असहयोग कार्यक्रम को दो भागों में बाँटा था। पहला– निषेधात्मक कार्यक्रम तथा दूसरा रचनात्मक कार्यक्रम। रचनात्मक नीति में एक कांग्रेस के झण्डा तले राष्ट्रीय संगठन का बिन्दु भी था। इस कार्यक्रम के तहत कांग्रेस ने झण्डा सत्याग्रह की अनुमति प्रदान की थी।

राष्ट्रीय तिरंगा देश की शान एवं सम्मान का प्रतीक था। गोरी सरकार भारतीय राष्ट्रीय तिरंगे के प्रचार–प्रसार तथा आरोहण को फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहती थी। १९२३ में सारे देश में जब तिरंगे का प्रचार प्रारम्भ हुआ, जगह–जगह ध्वज संचलन हुआ, उसमें सारे देश की सहभागिता दृष्टव्य थी। बुन्देलखण्ड के पुरुषों ने ही

---

१. महिला सेनानी रामप्यारी देवी के पुत्र राजेन्द्र प्रकाश राठ से लिए गये साक्षत्कार के आधार पर।

नही अपितु अनेक महिला सेनानियों ने भी खुलें दिल और मन से झण्डा सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

ब्रिटिश सरकार राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को फहराना अपराध मानती थी, झण्डा फहराने वाले के पीछे पुलिस का पहरा रहता था, सरकार उसकी चोर डाकुओं की तरह निगरानी रखती थी, साथ ही वह झण्डा भी छीन लेती थी, उस समय हमीरपुर जनपद में ध्वज युद्ध के विविध उपाय अपनाये जाते थे। कांग्रेसी स्वयंसेवक अपनी टोपियों, कुर्तो एवं मकानों पर झण्डे लगाते थे, कोई भी कार्यकर्ता बिना झण्डे एवं बैज के बाहर नही निकलता था, झण्डे का विस्तार निरन्तर बढ़ता ही जाता था, हर तरह के उत्सवों एवं त्योहारों तथा बारातों में झण्डा लगाया जाने लगा। झण्डे द्वारा जनता में स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत होने लगी।

सारे जनपद की महिलायें झण्डा जुलूस में सक्रिय हो गयीं। वे, राठ, मौदहा, हमीरपुर, कुलपहाड़ तथा महोबा के कार्यालय से झण्डे लेकर झण्डा गायन करती हुई ध्वज जुलूस निकालती थीं। हमीरपुर एवं महोबा जनपद की वीर महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के निर्देशन में दल बनाकर जिस समय तिरंगा झण्डा लेकर समवेत गान करती हुयी राठ तहसील एवं अन्य स्थानों पर निकलती थी तो उस समय उन पर पुलिसिया प्रकोप कहर बनकर टूट पड़ता था, किन्तु वह महिला दल डरता नहीं था।

गंगादेवी, राजाबेटी, शांतिदेवी, किशोरी देवी, भुवनेश्वरी देवी, गोमती देवी तथा भारतपुत्री सहित अनेक जुझारू महिलाओं ने झण्डा सत्याग्रह में प्रभावी योगदान प्रदान किया। ये महिलायें सचमुच बहुत ही निडर सेनानी थीं इस तथ्य की पुष्टि गवेषक को सर्वेक्षण के समय हुई।

तीसरा अध्याय

कांग्रेस अधिवेशन और महिलायें

कांग्रेस अधिवेशन और महिलायें

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद एक नया आयाम मिला था, १८८५ से स्वाधीनता आन्दोलन को एक बैनर प्राप्त हुआ, जिसके बैनर तले सारी भावी लड़ाइयाँ लड़ी गयीं, १८८५ में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन बम्बई में आयोजित हुआ था, उसके बाद प्रति वर्ष कांग्रेस के अधिवेशन होते रहे, जिनमें आन्दोलन की रणनीति तय होती थी। इस तरह यदि यह कहा जाय कि कांग्रेस के अधिवेशन लोकाह्वान की पूर्वपीठिका बनाते थे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।[१]

कांग्रेस के अधिवेशनों में सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व होता था, उसमें हर प्रान्त के प्रतिनिधि सहभागी होते थे। संयुक्त प्रान्त (उ०प्र०) इस क्षेत्र में कभी पीछे नहीं रहा। इस प्रान्त के जुझारू मण्डल(बुन्देलखण्ड) से हमेशा अनेक प्रतिनिधि कांग्रेस के लगभग हर अधिवेशन में भाग लेते थे, उस सहभागिता में महिलाओं की भी भागीदारी रहती थी। बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर का स्वातन्त्र्य संघर्षी ग्राफ सदैव ऊँचा रहा है, यहाँ की अनेक वीर महिलाओं ने कई अवसरों पर अपने जौहर को सार्वजनीन किया है।[२]

प्रस्तुत अध्याय में कांग्रेस के अधिवेशनों में महिला सहभागिता के विवेचन के पूर्व

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

यहाँ अधिवेशनों के स्वरूप तथा सोच एवं बुन्देल—वीरों की प्रतिभागिता को रेखांकित करना प्रासंगिक होगा। कांग्रेस का हर अधिवेशन स्वाधीनता आन्दोलन के लिए एक प्रभावी अवनि तैयार करता था, जिसमें देश के जुझारू सपूत अपनी वीरता के बीज डालते थे।

१८८५ में कांग्रेस की स्थापना से लेकर १९४७ तक के ६२ वर्षो के इतिहास पर दृष्टिपात वरने से यह निष्कर्ष निकलता है कि कांग्रेस कई विचार धाराओं से प्रभावित रही है, कभी इस पर उदारवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा है तो भी उग्रवादी चिन्तन का, कभी यह क्रांतिकारी विचारों से अनुप्राणित रही हैं तो कभी इसे गांधीवाद का सामीप्य प्राप्त रहा है किन्तु हर युगीन विचारधारा का एक ही उद्देश्य रहा है कि देश आजाद हो। उदारवाद से लेकर गांधीवाद तक के हर काल खण्ड में कांग्रेस की एक ही सोच रही है कि देश स्वाधीन हो जाय।

कांग्रेस के अधिकांश अधिवेशनों में हमीरपुर जनपद का प्रतिनिधित्व रहा है। बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) से हमीरपुर के प्रतिनिधि के रूप में दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपति सहाय रावत, स्वामी ब्रम्हानंद, बैजनाथ तिवारी तथा शंकरलाल जैन, उरई (जालौन) जनपद से बेनीमाधव तिवारी तथा मन्नीलाल पाण्डेय, बांदा से कुँवर हरप्रसाद सिंह और लक्ष्मीनारायन अग्निहोत्री तथा झांसी से रघुनाथ विनायक धुलेकर एवं आत्माराम गोविन्द खरे सहभागी होते थे। कांग्रेस के कई अधिवेशनों में हमीरपुर जनपद की

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

महिला सेनानियों ने भी अपनी प्रभावी उपस्थिति अंकित करायी—

गया कांग्रेस अधिवेशन और रानी राजेन्द्र कुमारी

दिसम्बर १९२१ में बिहार में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित होना था। उस अधिवेशन की अध्यक्षता का दायित्व चितरंजनदास को सौपा गया था, गांधी जी उस समय जेल में बंद थे। उस समय कांग्रेस में दो प्रकार की विचारधारायें चल रही थीं। एक परिवर्तन वादी विचार धारा थी और दूसरी अपरिवर्तन वादी।[१]

परिवर्तनवादी दल के नेता थे—चितरंजनदास और मोतीलाल नेहरू तथा अपरिवर्तन वादी दल के नेता थे—राजगोपालाचारी, कस्तूरीबाई एवं पं० सुन्दरलाल। परिवर्तन वादियों का मत था कि सरकारी तथा अर्धसरकारी — संस्थाओं में घुसकर अड़ंगे की नीति अपनायी जाय, साथ ही कौंसिलों के चुनावों में विजयी होकर ब्रिटिश सरकार का विरोध किया जाय, उसे पूरी तरह पंगु बना दिया जाय तब कहीं जाकर गोरी सरकार भारतीयों के सन्दर्भ में सोचने को विवश होगी और हम अपने देश को आजाद करा सकेगें। इसलिए कांग्रेस चुनाव में अपने प्रत्याशी खड़े करके ब्रिटिश सरकार को पराजित करें। परिणामत: परिषदों एवं अर्धसरकारी संस्थाओं यथा— जिला परिषद, नगर नेगम, नगर पालिकाओं में कांग्रेस का अधिकार होगा, उसके बाद सरकारीतंत्र को

---

१. महान स्वातन्त्रय सेनानी श्रीपति सहाय रावत जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

विफल बना दिया जायेगा। इससे गोरी सरकार बेनकाब होगी और उसका छ्द्म रूप विश्व के सामने उभर कर आयेगा। इस तरह हम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने में सफल होंगे। इसलिए कांग्रेस को चुनावी नीति को स्वीकार कर लेना चाहिए।[१]

अपरिवर्तन वादियों का परिवर्तनवादियों से भिन्न मत था। इनका विचार था कि स्वाधीनता के संघर्ष का साधन सत्याग्रह आन्दोलन ही होगा, उसके लिए चाहे कितना भी बड़े से बड़ा बलिदान करना पड़े, कितने भी कष्ट उठाने पड़े और चाहे जितने आर्थिक कष्ट सहन करने पड़े किन्तु स्वातन्त्र्य संघर्ष के साधन असहयोग, सविनय अवज्ञा और व्यक्तिगत सत्याग्रह ही होगें। उनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा।[२]

अपरिवर्तनवादियों ने अपनी नीति को प्रासंगिक बताते हुए आगे कहा कि गांधी जी अपनी इसी स्वातन्त्र्य संघर्ष की विचारधारा पर चलते हुए जेल में बंद हुए है, हमें गांधी—मार्ग से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए । गया कांग्रेस में इसका निर्णय होना था कि कांग्रेस किस मार्ग को बहुमत से स्वीकार करती है।

दीवान शत्रुघ्न सिंह उन दिनों जेल में बंद थें। उस समय कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व रानी राजेन्द्र कुमारी पर था, दीवान साहब की अनुपस्थिति में उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनका स्थान नहीं ले पाया, यद्यपि उनकी प्रबल इच्छा

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

थी कि उनका कार्यभार परिवार का कोई पुरुष ग्रहण करे। उन्होंने जेल में मुलाकात के समय रानी राजेन्द्र कुमारी के समक्ष श्री भाई से यह कहा था कि वे मेरे विचारों से पारिवारिक सदस्यों को अवगत करा दें। श्रीपति सहाय रावत ने दीवान साहब का संदेश उनके परिवार के सदस्यों को सुनाया था कि दीवान साहब के परिवारीजन ब्रिटिश आंतक से इतने आतंकित थे कि उन्होने श्रीभाई द्वारा प्रेषित दीवान साहब के संदेश को सुनना तक गवारा नहीं किया।[१] इस सम्बंध मे यह भी दृटव्य है कि उनमें देशभक्ति के संस्कार ह्रदयावस्थित नहीं थे, इसके साथ ही उनके परिवारीजनो ने श्रीभाई को सही उत्तर भी नहीं दिया। श्रीपति सहाय रावत (श्री भाई) ने यह सारा प्रकरण रानी साहिबा के समक्ष रखा, जिसे उन्होंने गंभीरता से लेते हुए कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व अपने ऊपर ले लिया। उन्होने गया कांग्रेस में जाने के लिए तैयारी प्रारम्भ की।

रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ चौका सौरा गांव के बुन्देला ठाकुर अजीत सिंह, करगवां निवासी जगन्नाथ नाई तथा श्रीपति सहाय रावत गया— कांग्रेस अधिवेशन में गये थे। ये सभी प्रतिनिधि महोबा, बांदा, इलाहाबाद, मुगलसराय, होते हुए गया स्टेशन पहुँचे, वहाँ से यह लोग ताँगे द्वारा कैम्प पहुँचे। गया में फलगू नदी के किनारे के मैदान पर कांग्रेस का विशाल पण्डाल बनाया गया था। प्रतिनिधियों के ठहरने के लिए खद्दर के कपड़ों का कैम्प बनाया गया था, जिलेवार रुकने की व्यवस्था की गयी थी, अधिवेशन में हर तरह की सावधानी बरती गयी थी।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

गया कांग्रेस अधिवेशन में जन सैलाब उमड़ पड़ा था। उस अधिवेशन में बिहार प्रान्त का दिग्दर्शन होता था। अधिवेशन में बिहार के स्वरूप को चित्रित करने वाले फल–फूल, औषधियों, हस्तकला एवं वस्त्र बुनायी की साफ झलक दिखायी पड़ती थी। वहाँ की हस्तकला के वैविध्य से प्रदर्शनी के सौन्दर्य को निखारा गया था। गया कांग्रेस अधिवेशन में प्रमुख कांग्रेसियों में मतभेद स्पष्ट दिखायी पड़ता था। जहाँ अपरिवर्तन वादी नेताओं में डा० राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचार्य, कस्तूरी बाई, बल्लभ भाई पटेल इत्यादि प्रमुख थे, वहीं पं० मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास परिवर्तन वादी नेता थे, जो कौंसिलों में चुनाव के माध्यम से प्रवेश कर अड़ंगे की नीति के समर्थक थे। दोनो विचारधाराओं को अधिवेशन में रखा गया किन्तु मतदान होने पर अपरिवर्तनवादी दल की भारी मतों से जीत हुई । इस पर परिवर्तनवादी नेताओं ने अपना एक अलग दल बना लिया, जिसका स्वराज्य दल नाम रखा। इस पार्टी के नेता पं० मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास थे। इन्होंने चुनाव के जरिये कौंसिलों में प्रवेश की नीति अपनायी, इन्हें चुनाव में सफलता भी मिली।[१]

ब्रिटिश सरकार चुनावों में बुरी तरह पराजित हुई, कांग्रेस के अपरिवर्तन वादी दल का रुख भी नरम हुआ, उसने केन्द्र में कांग्रेस के आधिपत्य को लेकर समर्थन किया, बिट्ठल भाई पटेल असेम्बली के अध्यक्ष हुए, केन्द्र में गोरी सरकार आयें दिन पराजित होने लगी। वे बहुत बड़े कानूनविद् थे। बिट्ठल भाई पटेल सरदार बल्लभ भाई पटेल के बड़े भाई थे।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

गया कांग्रेस अधिवेशन समाप्त होने पर सारे प्रतिनिधि निज निवासों की तरफ चल दिये । हमीरपुर जनपद से गये चारो प्रतिनिधि भी वापस आ गये । गया कांग्रेस में रानी राजेन्द्र कुमारी को भारत वर्ष की प्रमुख महिलानेत्रियों के दर्शन हुए थे। रानी साहिबा को वहाँ पर राजनैतिक विश्लेषण की प्रकृति को समझने का भरपूर अवसर मिला था, उन्हें कस्तूरीबाई गांधी, सरोजिनी नायडू तथा कमला नेहरू जैसी प्रखर नेत्रियों के दर्शन हुए थे, इसके अतिरिक्त उन्हे वहाँ पर अन्य बहुत सी महिला कार्यकर्त्रियों के दर्शन भी मिले थे । गया कांग्रेस में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन भी हुआ था, जिसमें बंगाल, बिहार, असम, उ०प्र०, म०प्र०, गुजरात, पंजाब एवं तमिलनाडु प्रान्त की अनेक महिलायें सहभागी हुई थीं। उस महिला सम्मेलन में महिलाओं को स्वातन्त्रय संघर्ष में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया गया था। उन्होने सम्मेलन में अपने—अपने अनुभवों को भी सार्वजनीन किया था। इस तरह रानी राजेन्द्र कुमारी को उस गया कांग्रेस से राजनीति का परिपक्व ज्ञान प्राप्त हुआ था। उसके बाद ही रानी साहिबा ने पूरे जनपद हमीरपुर को अपने पैरों से नाप डाला था। उन्होने पूरे जनपद का सघन दौरा किया था।[१]

भुवनेश्वरी देवी और स्वातन्त्र्य संघर्ष

भुवनेश्वरी देवी का १९१२ के लगभग कुलपहाड़ के ऐसे ब्राम्हण परिवार में जन्म हुआ था, जिसके गौरव का आरेख काफी ऊँचा रहा है। भगवानदास 'बालेन्दु'

---

१. महान क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

अरजरिया एवं उनकी सहधर्मिणी किशोरी देवी के देशधर्मी व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बुन्देल क्षेत्र में आज कौन अपरिचित है? भुवनेश्वरी देवी बालेन्दु जी की छोटी बहिन थी, जो अपनी भाभी किशोरी देवी के साथ जेलयात्रिणी रहीं।

भुवनेश्वरी देवी नाथूराम तिवारी के साथ परिणय सूत्र में बंधी, तिवारी खुद में एक समर्पित स्वातन्त्र्य सेनानी थे। इनका स्वाधीनता संघर्ष में प्रभावी योगदान रहा। इस तरह भुवनेश्वरी देवी को ननिहाल तथा ससूराल दोनो ही स्थानों पर राष्ट्रधर्मी परिवेश प्राप्त हुआ। इन्हें पति भाई तथा भाभी की सामीप्य सलिला में खूब अवगाहन करने का अवसर मिला, जहाँ से ये संघर्षी परिपक्वता प्राप्त कर निकली । भुवनेश्वरी देवी को महान नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी की निकटता भी प्राप्त हुई, जिससे इनके राष्ट्रीय जीवन को एक नया आयाम मिला।[१]

रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ स्वाधीनता आन्दोलन में भुवनेश्वरी देवी ने पूरे मनोयोग के साथ प्रतिभागिता निभायी, महिला सभाओं, सम्मेलनों तथा अधिवेशनों में भुवनेश्वरी देवी ने रानी राजेन्द्र कुमारी का कदम से कदम मिलाकर साथ दिया, हमीरपुर की महिला सेनानियों में भुवनेश्वरी देवी की अपनी एक अलग पहचान थी। वे रानी के साथ हर कांग्रेसी आयोजनों में शामिल हुई । इस तरह आजादी के पूर्व तक भुवनेश्वरी देवी ने स्वातन्त्र्य संघर्ष में सक्रिय अनुदाय प्रदान किया। इस महान महिला

---

१. महान क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

सेनानी का १९४८ में निधन हो गया।[१]

राजाबेटी और स्वाधीनता आन्दोलन

हमीरपुर जनपद के गाँवों में जराखर एक ऐसा गाँव हैं, जिसने आजादी की लड़ाई में सबसे अधिक रणबाँकुरे दिये हैं। श्रीपति सहाय रावत इसी गाँव के गौरवशाली सपूत थे, जिन्होंने असि और मसि के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचा। राजाबेटी श्रीभाई की ही मझली बहन थी, जिनका जराखर में १८९४ ई० में जन्म हुआ था। ये आनंदी प्रसाद लोधी के साथ परिणय सूत्र में बंधी थीं। आनंदी प्रसाद धनौरी गाँव के निवासी थे।

राजाबेटी को ननिहाल में ही राष्ट्र प्रेम का माहौल मिल गया था, श्री पति सहाय रावत (श्रीभाई) की पत्नी शांति देवी के साथ राजाबेटी भी आन्दोलन में कूद पड़ी थीं, श्रीभाई की फरारी हालत में उनके घर की आनंदी प्रसाद पूरी तरह देखभाल करते थे। आनंदी प्रसाद स्वयं एक जुझारू सेनानी रहें हैं । राजाबेटी को जब जनपद की प्रमुख नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी का सम्पर्क प्राप्त हुआ तो उनके संघर्षी जीवन को और भी अधिक संबल मिल गया। ये रानी साहिबा के साथ सभी आन्दोलनों में साथ रहीं।

राजाबेटी जराखर की सभी महिला सेनानियों का नेतृत्व भी करती थीं। इन्हें

. महिला सेनानी भुवनेश्वरी देवी के पुत्र वीरेन्द्रमोहन तिवारी, महोबा से लिए गये ाक्षात्कार के आधार पर ।

१७(१) (२) क्रिमनल लॉ तथा १८(१) तथा १४३ आई० पी० सी० के अन्तर्गत ०६ माह का कठोर कारावास मिला था, साथ ही दस रूपयों का जुर्माना भी हुआ था। इस तरह राजाबेटी संघर्षी दृष्टि से सचमुच राजा थीं। उनके अनुदाय को भुलाया नहीं जा सकता।

रुक्मिणीदेवी और स्वातनय संघर्ष

क्रांतिधर्मा कुलपहाड़ से ०३ किमी० दूरी पर पनवाड़ी रोड पर अवस्थित ग्राम सुगिरा के मोतीलाल तिवारी की पत्नी रूक्मिणी देवी का भी स्वातन्त्र्यधर्मी अनुदाय कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। मोतीलाल तिवारी ने मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण कर १९२६ में महोबा में शिक्षक हो गये थे। इन्होने १९२६ में सुगिरा में अर्जुन पुस्तकालय की स्थापना की थी। उसके बाद सत्याग्रह आन्दोलन में वे १९३३ में थाना कुरारा के सिवनी गाँव में गिरफ्तार किये गये थे। इन्हें सत्याग्रह आन्दोलनों के अन्तर्गत लगभग ०१ वर्ष का कठोर कारावास की सजा भोगनी पड़ी थी। इस तरह रूक्मिणी देवी को पति से पुरोधत्व की प्रेरणा मिली, साथ ही रानी राजेन्द्र कुमारी का सम्पर्क भी प्राप्त हुआ था।[१]

रूक्मिणी देवी चरखारी के रामचन्द्र पटेरिया के घर १९०३ में जन्मी थीं। इन्हें

---

१. महिला सेनानी रुक्मिणी देवी के पुत्र भूपेन्द्र मोहन तिवारी, सुगिरा से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

हवलदार पिता ने एक ऐसा परिवेश प्रदान कियाा था कि ये बचपन में ही राष्ट्रानुराग की राही बन गयी थीं। रानी राजेन्द्र कुमारी देवी ने स्वातन्त्र्य संघर्ष में पूरी सिद्दत के साथ भाग लिया था। रानी साहिबा को रूक्मिणी देवी ने पूरे मनोयोग से सहयोग प्रदान किया। रूक्मिणी देवी को १९३२ में सी०एल०ए० के अन्तर्गत विदेशी वस्त्र के बहिष्कार में ०३ माह का कठोर कारावास मिला । उसके बाद इन्होने ०६ माह की और सजा काटी।[१] ये गया अधिवेशन के बाद रानी ने जितने भी सम्मेलनों में भाग लिया उन सब में रूक्मिणी देवी ने रानी साहिबा का साथ दिया। इस तरह इनकी आन्दोलन में संघर्षीपारी को भुलाया नहीं जा सकता ।

भगवती देवी शुक्ला और स्वाधीनता आन्दोलन

राठ जैसे अग्निधर्मा अवधारणा के साक्षी नगर से कुछ ही दूरी पर पनवाड़ी मार्ग : अवस्थित सैदपुर का इतिहास कुछ अलग ही प्रकार का रहा है। इसी निडर गाँव १९१२ में पं० शभूनाथ शुक्ल का जन्म हुआ था। ये बाल जीवन से ही राष्ट्रानुरागी · गये थे ।१८ वर्ष की उम्र में १९३० में ये नमक सत्याग्रह में सत्याग्रही बने थे।

श्यामसुन्दर बादल (संम्पादक), दीवानशत्रुघ्न सिंह, अभिनन्दनग्रंथ जी०आर०वी०इं०का० , १९६१, पृ०सं०—१७९

इन्हे १९३०, ३२, ३३ और १९४१ में क्रमशः तीन, छः, छः और छः माह की सजा हुई थी। भगवती देवी शुक्ला इसी संघर्षी शूर की सहधर्मिणी थीं, जिनका १९१८ में जन्म हुआ था।

भगवती देवी शुक्ला को पति से ही देश सेवा की प्रथम प्रेरणा मिली थी। रानी राजेन्द्र कुमारी के सानिध्य सलिल में वह प्रेरणात्मक प्रक्षालन प्राप्तकर और पवित्र हो गयी थी। भगवती देवी शुक्ला ने तीन बार जेल यात्रा की । इन्हे पहली बार १७(१) सी०एल०के अन्तर्गत ५—४—१९३२ को ०६ माह के कठोर कैद की सजा सुनायी गयीं, साथ ही तीस रूपयों के जुर्माना का दण्ड भी दिया गया, जुर्माना न देने पर ०६ माह की और कैद हुई । ३५ वाई०एन० के अन्तर्गत भगवती देवी शुक्ला को २३.४.१९३२ मे १४ आई० पी०सी० में ०३ माह का कठोर कारावास दिया गया। ये तीसरी बार १९३३ में ०६ माह तक जेल में रहीं ।[१] भगवती देवी शुक्ला ने रानी राजेन्द्र कुमारी को देशधर्मी क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। रानी के साथ गया कांग्रेस अधिवेशन के बाद हर सभा में भाग लिया। इस तरह इस महिला सेनानी के आजादी में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

---

१. श्यामसुन्दर बादल (संम्पादक), दीवानशत्रुघ्नसिंह, अभिनन्दनग्रंथ जी०आर०वी०इं०का० राठ, १९६१, पृ०सं०—२०२।

निष्कर्ष

कांग्रेस के अधिवेशनों में सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व होता था, उसमें हर प्रान्त के प्रतिनिधि सहभागी होते थे। संयुक्त प्रान्त (उ०प्र०) इस क्षेत्र में कभी पीछे नहीं रहा। इस प्रान्त के जुझारू मण्डल (बुन्देलखण्ड) से हमेशा अनेक प्रतिनिधि कांग्रेस के लगभग हर अधिवेशन में भाग लेते थे, उस सहभागिता में महिलाओं की भी प्रतिभागिता रहती थी, बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा का स्वातन्त्र्य संघर्षी ग्राफ सदैव ऊँचा रहा है, यहाँ की अनेक वीर महिलाओं ने कई अवसरों पर अपने जौहर का खुलासा किया है।

कांग्रेस के कई अधिवेशनों में हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिला सेनानियों ने भी अपनी प्रभावी उपस्थिति अंकित करायी है। दिसम्बर १९२१ में बिहार में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित होना था, उस अधिवेशन की अध्यक्षता का दायित्व चितरंजन दास को सौंपा गया था, दीवान शत्रुघ्न सिंह उस समय जेल में बन्द थे। उस समय कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व रानी राजेन्द्र कुमारी पर था, दीवान साहब की अनुपस्थिति में उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनका स्थानापन्न नही हो पा रहा था।

गया कांग्रेस अधिवेशन में रानी राजेन्द्र कुमारी सहभागी हुयीं, उनके साथ चौका सौरा गाँव के अजीत सिंह, करगँवा के जगन्नाथ नाई तथा श्रीपति सहाय रावत भी गये। गया कांग्रेस में रानी राजेन्द्र कुमारी को भारत वर्ष की प्रमुख महिला नेत्रियों के दर्शन हुये थे, इससे रानी साहिबा के राजनैतिक विश्लेषण की सूझबूझ को नया आयाम मिला। उन्हें वहाँ पर अन्य महिला सेनानियों का भी सानिध्य मिला।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हमीरपुर एवं महोबा की वीर महिलायें स्वातन्त्र्य क्षेत्र के किसी भी आयोजन में सहभागिता को लेकर पीछे नहीं रही।

रानी राजेन्द्र कुमारी को भुवनेश्वरी देवी, राजा बेटी, रुक्मिणी देवी तथा भगवती देवी शुक्ला ने हर महिला मण्डल की सभा एवं अन्य सम्मेलनों में प्रतिभागी बनकर पूरा साथ दिया, ये सारे तथ्य गवेषक के समक्ष भौतिक सर्वेक्षण के समय प्राप्त हुए।

चौथा अध्याय

जनपद के राजनैतिक सम्मेलन और महिलायें

जनपद के राजनैतिक सम्मेलन और महिलायें

भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०)के हमीरपुर जनपद की संघर्षी सहभागिता कम महत्वपूर्ण नहीं रही, उस संघर्ष को प्रखर एवं प्रभावी बनाने में जनपदीय राजनैतिक सम्मेलनों ने उपयोगी उपादान की भूमिका निभायी। हमीरपुर एवं महोबा जनपद में उस समय कई राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुए थे, जिनमें रणाह्वान की रणनीति को अमली जामा पहनाया गया था।

सम्मेलनों में राष्ट्रीय स्तर के नेताओं की उपस्थिति जहाँ उन्हें साफल्य प्रदान करने में अहम् भूमिका निभायी थी, वहीं सामरिक सहभागिता को सोने में सुहागा मिल गया था। हमीरपुर, महोबा एवं झांसी के राजनैतिक सम्मेलनों में केवल पुरूष सेनानियों एवं स्वयंसेवियों की ही प्रतिभागिता नहीं रहती थी अपितु महिला सेनानी एवं स्वयंसेवी भी बढ़—चढ़कर भाग लेती थीं। इन राजनैतिक सम्मेलनों में प्रमुख नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी, उर्मिला देवी, सरस्वती देवी, भुवनेश्वरी देवी तथा सरयू देवी का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

झांसी का राजनैतिक सम्मेलन और रानी राजेन्द्र कुमारी

१९२१ में जब दीवान शत्रुघ्न सिंह जेल में बंद थे तभी कृष्णगोपाल शर्मा ने झांसी के सरस्वती पाठशाला मे बुन्देलखण्ड स्तरीय राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया।[१] लखनऊ के हरकरणनाथ मिश्र उस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। सरोजिनी नायडू तथा स्वामी सत्यदेव जी की गौरवमयी उपस्थिति ने सम्मेलन के सोहागे में सोना लगा दिया था। स्वामी सत्यदेव की शिक्षा अमरीका में हुई थी । वे जर्मनी में बहुत दिनों तक रहे थे। उन्होंने अपने प्रवास—काल में विदेशी विकास पर काफी मनन किया था, वहाँ की शैक्षिक प्रगति को परखा था। इसकारण वे माँ भारती के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देना चाहते थे। उनका अग्निधर्मा भाषण अंग्रेजों के लिए मुश्किलों की मेदिनी तैयार कर देता था। वे जनता पर आँग्ल दमन एवं दबाव का खुलकर विरोध करतें थे। उनके आँग्ल विरोधी तल्ख तेवर श्रोंताओं के अन्तर्मन को छू जाते थे।

सरोजिनी नायडू भी उच्चकोटि की प्रखर वक्ता थीं। उन्होंने झांसी के राजनैतिक सम्मेलन में जब उर्दू भाषा में खिलाफत विषयक अपने विचार रखे तो मुस्लिम लोंगों की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था, वे उद्वेलितमना हो उठे और सारा सभास्थल इंकलाब जिंदाबाद के नारों से निनादित हो उठा। उस समय हिन्दू—मुस्लिम भाई —भाई

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

का विचार सजीव हो उठा।[१]

झांसी के इस राजनैतिक सम्मेलन में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के चारों जनपदों से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पहुँचे थे। हमीरपुर जनपद तथा खासतौर पर राठ तहसील से बड़ी संख्या में रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का एक दल सम्मेलन में पहुँचा था।[२]

झांसी के सम्मेलन में हम्मीरी कांग्रेसियों की एक स्वातन्त्रय संघर्षी दल के रूप में पहचान थी, रानी राजेन्द्र कुमारी के कुशल नेतृत्व को ही इस तरह की पहचान का श्रेय था। रानी के दिशानिर्देशन में समग्र जनपद का कांग्रेसी कार्यकर्ता एकजुट था। उनमें रागद्वेष का नामोनिशां नहीं था। सारा जिला कांग्रेस का एक परिवार बन चुका था।

रानी राजेन्द्र कुमारी के उद्‌गार

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के किले के पास ही अवस्थित सरस्वती पाठशाला में राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। रानी लक्ष्मी बाई का आजादी प्राप्ति का जो लक्ष्य था, वही लक्ष्य इस सम्मेलन का भी था। रानी राजेन्द्र कुमारी ने उस सम्मेलन में अपने विचारों को रखते हुए कहा— भाईयों और बहनो, हमारा सौभाग्य है

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—४३।

कि यह सम्मेलन आज जिस ऊर्जावान अवनि में हो रहा है, यही पर वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में रणवीरों ने अंग्रेजों का तीखी तलवारों से स्वागत किया था, रानी की रणनीति के सामने आँग्ल नीति बौनी होकर स्वाहा होने ही जा रही थी कि कुछ देशद्रोही, ग्वालियर के सिंधिया एवं कुछ अन्य देशी राज्यों के शासकों तथा भारत के कुछ भितरघातियों की राष्ट्रविरोधी नियति ने पाँसा ही पलट दिया, किन्तु रानी राष्ट्रद्रोहियों की राष्ट्रघाती नीति से डरीं नहीं। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक अपने देश से अंग्रेजों को बाहर निकाल नहीं देंगें तब तक चैन से नहीं बैठेंगें। रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपने उदगार को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह किला रानी लक्ष्मीबाई के संकल्प का साक्षी है, जिसे हम सभी को साकार करना है।[१]

इस तरह रानी राजेन्द्र कुमारी ने सम्मेलन में अपने ओजस्वी विचारों को रखा, जिसे सभी ने सराहा। इस सम्मेलन में डॉ० आनंद द्वारा रचित रानी की तीखी तलवार चली थी, नामक शीर्षक का गीत बहुत पंसदीदा रहा—

होते हैं त्योहार यहाँ पैनी कटार धारों से,
और नारियां भी खेला करती हैं तलवारो से।
इसी भूमि में भरी गयी शोणित से गली गली थी,
इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।
इसी भूमि के यज्ञ कुण्ड की हैं अनेक संस्मृतियाँ,

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन, १९९५, पृ०सं०—४३।

यहीं हुआ करती हैं हँस—हँस प्राणों की आहुतियाँ।

बदला यहीं लिया जाता है अपने अपमानों का,

यहीं बंधा करता है ताँता अविरल अखिल बलिदानों का।

इसकी रज कण— कण में गर्भित प्रजातंत्र सोता है,

जगने वाला महानाश का महामंत्र सोता है।

इसी भूमि की रक्त रंजिता रहती रणस्थली थी,

इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।

गाती है बेतवा निरन्तर इसी भूमि की गाथा,

यहीं झुका था शंहशाह औरंगजेब का माथा।

डलहौजी की कुटिल नीति का जब विष वृक्ष उगा था,

केनिंग के व्योहारानल में प्रांत—प्रांत सुलगा था।

अंधा—धुंध आंधी चलती थी जब अत्याचारों की,

और लगी होने विनष्ट थी सत्ता सरदारों कीं।

इसी भूमि से तब विप्लव की चिन्गारी निकली थी,

इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।

अब तक जिसकी बीर कथा केन का पानी कहता है,[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

जिसके कण–कण पर अणु–अणु पर समर चढ़ा रहता है।

लिखी हुई पत्थर–पत्थर पर जिसकी अमर कहानी,

इसी भूमि के लिए हुई कुर्वानी ही कुर्वानी

वीर जनिन यह कहलाती है अविचल आन यहाँ की,

इसी भूमि से मिली हमैं सन सत्तावन की झांकी।

बार अनेकों इसी भूमि पर रणचण्डी मचली थी,

इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।

इसी भूमि पर वीरों ने अपना बलिदान किया है,

कण–कण इसका शोणित से सींचा सम्मान दिया है।

स्वतंत्रता देवी के आगे–आगे कदम बढ़ाकर,

यहीं किया रानी ने पूजन प्राण–प्रसून चढ़ाकर।

मातृभूमि तुझसे मैंने कब–कब क्या क्या न लिया है,

बतला इस याचक जग को तुमने क्या क्या न दिया है।

ओ बुन्देल भूमि जननी रखले प्रदेश का पानी,

एक बार फिर से दे दे लक्ष्मीबाई सी रानी।[१]

१९२१ में महारानी लक्ष्मीबाई के किले के नीचे सरस्वती पाठशाला के प्रांगण में बुन्देलखण्ड के स्वातन्त्रय संग्राम सेनानियों का राजनैतिक सम्मेलन पूरी तरह सफल

१. महान स्वातन्त्रय सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

रहा। सम्मेलन के समापन के बाद आयोजक कृष्ण गोपालशर्मा ने वहाँ पर पधारे विभिन्न जनपदों के प्रतिनिधियों को मंच पर बुलाकर सभी का परिचय कराया। सम्मेलन में अधो लिखित सेनानियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही—

१. रानी राजेन्द्र कुमारी

झांसी के राजनैतिक सम्मेलन में रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में हमीरपुर जनपद से कार्यकताओं का एक पूरा दल गया था। रानी साहिबा ने दीवान शत्रुघ्न सिंह की सहधर्मिणी के रूप में घर तथा बाहर दोनों स्थानों पर शानदार भूमिका निभायी। उनका आजादी के लिए कोई प्रयत्न विफल नहीं रहा। रानी राजेन्द्र कुमारी की झांसी के राजनैतिक सम्मेलन में प्रभावी सहभागिता रही।[१]

धुलेकर जी में असि और मसि का अच्छा संगम था। ये एक जाने माने साहित्यकार एवं वकील भी थे। धुलेकर जी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री थे। इनकी भी सम्मेलन में सराहनीय पहल रही।

३. आत्मारामगोविंद खरे

आत्माराम गोविंद खेर महारानी लक्ष्मीबाई के सजातीय सम्बन्धी रहे। ये जागीरदार

---

१. स्वातन्त्रय सेनानी हरनाथ सिंह, राठ से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

थे। खरे झांसी कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। इनका भी सम्मेलन में शानदार सहयोग रहा।[१]

४. वृन्दावनलाल वर्मा

वृन्दावन लाल वर्मा किसी परिचय के मोहताज नहीं है। ये एक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार थे। वर्मा जी झांसी के जाने—माने वकील भी रहे। इनकी कांग्रेस के साथ सहानुभूति रहती थी। इनकी सम्मेलन में सिरकत से चार चाँद लगे थे।[२]

५. रामसहाय तिवारी

तिवारी बरूआ सागर के निवासी थे। ये कांग्रेस के एक समर्पित कार्यकर्ता थे। ये दृढ़ इच्छा के धनी व्यक्ति थे। ये भी सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे।

६. घासीराम व्यास

घासीराम व्यास एक उच्चकोटि के राष्ट्रीय कवि रहे। ये जिस धरती में जन्मे, उसका सत्तावनी समर के फलक में महत्वपूर्ण स्थान रहा। मऊरानीपुर निवासी व्यास

---

१ .महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही

जी कांग्रेस के एक सच्चे कार्यकर्ता थे। इनका भी सम्मेलन के प्राप्य में अभीष्ट योगदान रहा।

७. कुँवर हरप्रसाद सिंह

वामदेव की नगरी बांदा के कुं० हरप्रसाद सिंह का स्वातन्त्र्य संघर्षी अनुदाय कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। ये बांदा के प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर थे, साथ ही कांग्रेस के प्रमुख नेता भी। झांसी के राजनैतिक सम्मेलन में कुं० हरप्रसाद सिंह का सहयोग महत्वपूर्ण रहा।[१]

८. मन्नीलाल पाण्डेय

मन्नीलाल पाण्डेय उरई के निवासी थे। ये भी उरई के प्रमुख स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। देश की आजादी के संघर्ष में ये जनपदीय प्रतिनिधित्व के प्रतीक माने जाते थे। इनकी सम्मेलन में उपस्थिति स्मरणीय रही।

९. बेनीप्रसाद तिवारी

ये भी उरई (जालौन) के प्रमुख स्वातन्त्र्य पुरोधा थे, साथ ही आटा के जमींदार

---

१. स्वातन्त्रय सेनानी रामानुज सिंह चन्देल, हमीरपुर से लिए गये साक्षत्कार के आधार पर।

भी। तिवारी कांग्रेस के प्रमुख नेता तथा अच्छे वक्ता भी थे। ये भी सम्मेलन में शामिल हुए थे।[१]

झांसी के राजनैतिक सम्मेलन में इन प्रमुख कांग्रेसियों के अतिरिक्त अन्य कार्यकर्ता भी सहभागी हुए थे, जो इस प्रकार थे—

बाबूराम गुप्त कोंच, कुं० रघुराज सिंह उरई, श्रीपति सहाय रावत हमीरपुर, पं० हरीदास हमीरपुर, ठा० लालसिंह अमरपुरा, कुं० उजागर सिंह रावतपुरा, बैजनाथ बाबू हमीरपुर, ठाकुर अजीत सिंह चौकासौरा, पं० बैजनाथ तिवारी महोबा, चुन्नीलाल तथा शंकरलाल जैन महोबा, बाबू रामप्रसाद नौरंगा, लक्ष्मण राव श्रीनगर, रज्जब अली आजाद महोबा, बालाप्रसाद शुक्ल महोबा, मोहम्मद बख्श महोबा, मूलचन्द्र दर्जी कुलपहाड़, मातादीन बुधौलिया, सेठ गजाधर प्रसाद, सेठ गरीबदास, देवीदाऊ, हरप्रसाद, कालीचरण अग्रवाल, अताउल्ला खाँ राठ, जिस समय झांसी में यह राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुआ था, उस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा मूलचन्द्र शर्मा आगरा जेल में बंद थे। दीवान साहब की पत्नी राजेन्द्र कुमारी ने जनपद के अनेक कार्यकर्ताओं के साथ इस सम्मेलन मे प्रभावी उपस्थित अंकित करायी थी।[१]

रानी राजेन्द्र कुमारी अपनी राष्ट्रधर्मी अवधारणा के कारण जनपद ही नहीं अपितु

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना चुकी थीं, जनपद तथा जनपदत्तेर सम्मेलनों में रानी साहिबा के साथ हमीरपुर की कई जुझारू महिलाओं ने कदम से कदम मिलाकर साथ दिया। ऐसी महिलाओं में किशोरी देवी, भुवनेश्वरी देवी, उर्मिला देवी, सरस्वती देवी, सरयू देवी, शान्ती देवी, भगवती देवी तथा पार्वती देवी के नामों का उल्लेख किया जा सकता है, जिन्होंने तत्कालीन हर प्रकार के बंधनो को दर किनार करते हुए राष्ट्रसेवी बनीं।

गहरौली का राजनैतिक सम्मेलन और महिलायें

महोबा में राजनैतिक सम्मेलन होने के बाद जिला कांग्रेस कमेटी ने गहरौली में राजनैतिक सम्मेलन करने का निश्चय किया। गहरौली मौदहा तहसील का एक ऐसा गांव है, जिसकी सोंधी माटीं से अनेक शूर जन्में, जिन्होंने मां भारती के श्री चरणों में अपने शौर्य के सुमन चढ़ाये। गहरौली गांव का उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

गहरौली तो बड़ा ग्राम है, इसकी बड़ी कहानी।
घर—घर में रहते हैं, इनके देशभक्त सैनानी।।
मात्रभूमि की सेवा में है, शानदार कुर्वानी।

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

स्वतंत्रता संग्राम कार्य में सदा रहा लाशानी।।

मन्नीलाल गुरुदेव यहाँ के अंग्रेजो से ठानी।

स्वतंत्रता संग्राम काल में सदा करी अगुवानी।।

नेता है निर्भीक नाम की उँची है परेशानी।

देश प्रेम की भंग नशीली सदा जेल में छानी।।

नवल किशोर देश प्रेमी हैं इनके छोटे भाई।

हंसते—हंसते गये जेल में सूखी रोटी खाई।।

चेतराम चेतन्य पुरुष हैं, करी देश की सेवा।

लालचन्द्र ने देश भक्ति कर पाये यश के मेवा।।

बीर विरंची लाल साथ में वंशीधर सैनानी ।

बदलू—दुर्गा—हरप्रसाद ने करी न आनाकानी।।

नत्थू मुन्नीलाल वैश्य थे वर्मा नाथूराम ।

रघुनन्दन शर्मा के साथी पण्डित शोभाराम ।।

रामभरोसे गल्हू, मधवा भाई छेदीलाल।

बढ़केश्वर मिड़वा दुर्गा ने काटी जेल कराल।।[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

रामधीन देशभक्ति में पहुँच गये तत्काल।

ऊपर सभी लिखे गये हैं ये गहरौली के लाल।।[१]

गहरौली में १९३७ में जिला राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें पं० जवाहरलाल नेहरू की गरिमामयी उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

पं० जवाहरलाल नेहरू जी का महोबा रेलवे स्टेशन पर उतरकर चरखारी होते हुए गहरौली के राजनैतिक सम्मेलन में पहुँचने का कार्यक्रम था। इन्हें स्टेशन में ससम्मान प्राप्त करने के लिए मन्नीलाल गुरुदेव, कुं० हरप्रसाद सिंह, पं० बैजनाथ तिवारी एवं शंकरलाल जैन इत्यादि उपस्थित थे। पं० नेहरू ने मोटरकार पर सवार होकर स्वागतार्थियों के साथ गहरौली की ओर प्रस्थान किया।

जब चरखारी राजमहल के सामने नेहरू की कार में लगे तिरंगे झण्डे को रोका गया

१९३७ में पं० नेहरू जैसे ही चरखारी के राजमहल के सामने से गुजरे तो रियासत के सिपाहियों ने उनकी कार को रोक लिया, ज्योंही उनकी कार रुकी तो प० जवाहरलाल नेहरू ने तुरन्त सिपाहियों से पूँछा कि तुम लोगों ने कार क्यों रोक ली है।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

इस पर सिपाहियों ने कहा कि आपकी मोटर कार में जो राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा लगा है, उसे उतार लीजिए।[१] चरखारी नरेश की आज्ञा है कि– चरखारी राज्य से भारतीय राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा नहीं निकल सकता।

सिपाहियों के इतना कहते ही पं० जवाहर लाल नेहरू मोटर कार से उतर पड़े और आक्रोशित होकर कहने लगे कि कहाँ है तुम्हारा राजा, उसे बुलाओ। मेरा झण्डा कार से मेरे सिर के साथ उतरेगा।[२]

रियासती सोच के हाँजू–हाँजू करने वाले अल्पशिक्षित सिपाही चरखारी के भावी विकास के बारे में कैसे विचार कर सकते थे। वे सिपाही पं० नेहरू जी को भी नहीं जानते थे। वे प्रहरी रियासती अंहकार में यह सब कह डाला।

रियासत के सिपाहियों ने जब पं० जवाहरलाल नेहरू की तेजस्वी मुख मुद्रा को देखा तो वे दोनो प्रहरी हाथ जोड़कर रास्ते से हट गये। मन्नीलाल गुरूदेव तथा पं० बैजनाथ तिवारी उन सिपाहियों के राष्ट्रद्रोही कृत्य को पचा न सके, उनकी खूब मरम्मत की, सिपाहियों ने करबद्ध होकर क्षमा याचना की। सुरक्षा कर्मियों के उस कार्य की एकत्रित भीड़ ने भी आलोचना की, थोडी देर बाद पं० नेहरू की कार बढ़ गयी।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

पं० मन्नीलाल गुरुदेव और गहरौली का राजनैतिक सम्मेलन

१९३७ के गहरौली राजनैतिक सम्मेलन में मन्नीलाल गुरुदेव तथा उनके अनुज नवलकिशोर गुरूदेव की सराहनीय भूमिका रही। सम्मेलन की सफलता के लिए गुरुदेव बंधुओं ने अहर्निश श्रम किया। मन्नीलाल गुरूदेव एक स्वाभिमानी देशभक्त थे, साथ ही आर्यसमाजी विचाराधारा वे वाहक भी।

गहरौली की एक घटना से उनके देशप्रेम को मापा जा सकता है। गहरौली में ईसाई मिशनरियों का एक बहुत बड़ा बंगला था, जिसमें ईसाई प्रचारक पुरुष तथा महिलायें रहती थीं। गुरूदेव आर्य धर्म के उपासक थे। उन्हें यह पसन्द नहीं था कि गहरौली गाँव ईसाई धर्म प्रचार का केन्द्र बने। उन्होंने गहरौली के लोगों को संगठित कर एक ही रात्रि मे उस ईसाई बंगले का नामो निशां तक मिटवा दिया। उस बंगले का वहाँ पर एक भी चिन्ह शेष नहीं था। अंग्रेजो ने बहुत जांच पड़ताल की किन्तु उनको गहरौली में उस बंगले का एक भी अवशेष नहीं मिला।[१]

मन्नीलाल गुरुदेव का एक देशप्रेमी होने का इससे बड़ा और दूसरा कौन सा प्रमाण हो सकता है। गुरुदेव ने इसी तरह सम्मेलन की सफलता के लिए भी दिन—रात

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

मेहनत की।

पं० जवाहर लाल नेहरू और गहरौली का राजनैतिक सम्मेलन

पं० जवाहरलाल नेहरू को उस समय तरुण तपस्वी कहा जाता था। नेहरू जी के प्रति उस काल में असीम लोकप्रेम था। १९३७ में जब नेहरू गहरौली के सम्मेलन में आये तो उन्हें देखने के लिए जन सैलाब उमड़ पड़ा। उस सभा में लगभग एक लाख लोगों की भीड़ थी। पड़ोसी जिलों से भी असंख्य कांग्रेसी कार्यकर्ता एवं नेता भी उस सम्मेलन में आये थे। पं० जवाहर लाल नेहरू के आगमन की सूचना ने जनाधिक्य के सोने में सुहागा मिलाया था। १९३७ का गहरौली राजनैतिक सम्मेलन वस्तुत: एक विशाल आयोजन था।[१]

जब नेहरू के सम्मान में गहरौली के हर घर में पलक पांवड़ा बिछा

पं० जवाहरलाल नेहरू को गहरौली के हर घर में आशातीत आदर मिला था। सबसे पहले राजनीतिक जुलूस निकाला गया था। हाथी पर भारत माता का एक भव्य

---

१. सर्वोदयी नेता रामगोपाल दीक्षित, मुस्करा से प्राप्त साक्षात्कार के आधार पर।

चित्र रखकर उसमें राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराया गया था, अनेकों सुसज्जित कलारास घोड़े नृत्य कर रहे थे। पं० जवाहर लाल नेहरू का हर ग्रामीण के घर मे भावभीना स्वागत हुआ, मकानों की छतों पर से उनपर पुष्प वर्षा की गई, हर घर में पं० जवाहर लाल नेहरू की आरती होती थी। उस समय बहुत ही खुशगवार वातावरण था।[१]

सम्मेलन और जराखर का लाठी दल

गहरौली के राजनीतिक सम्मेलन में कुशल प्रबंधन के लिए जराखर से एक युवा लाठी कलाकारों का दल पहुँचा, जिसने वहाँ पर लाठी कला का शानदार प्रदर्शन किया। उनके लाठी कौशल ने दर्शकों का दिल जीत लिया। जराखर के जांबाज श्रीभाई लाठी चालन में सिद्ध हस्त थे। श्रीभाई का बनवट में भी कोई सानी नहीं था। पं० नेहरू ने लाठी कला की प्रभावी प्रस्तुति को बहुत पंसद किया।

गहरौली के राजनैतिक सम्मेलन में पं० नेहरू को देखने तथा सुनने वालों की बहुत बड़ी संख्या थी। पं० नेहरू का भाषण लोकग्राही रहा। उनके विचारों से जनता बहुत प्रभावित हुई। पड़ोसी जिलों से जो भी कांग्रेसी आये थे, वे भी जवाहरलाल नेहरू के कायल थे। सम्मेलन पूरी तरह सफल रहा। मन्नीलाल गुरुदेव के अनुज नवलकिशोर गुरुदेव की पत्नी श्रीमती कली ने भी गुरूदेव जी का हर कदम पर साथ दिया, रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी, भुवनेश्वरी देवी, सरयू देवी, सरस्वती देवी,

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—५९।

शांती देवी, पार्वती देवी, उर्मिला देवी तथा भगवती देवी जैसी अनेक निडर नारियों ने इस सम्मेलन मे अपनी अलग छाप छोड़ी। रानी राजेन्द्र कुमारी तों एक सफल कामा नेत्री रहीं हैं, उनके सहयोग का तों सानी नहीं था। इस तरह हर राजनीतिक कार्यक्रम में महिला कार्यकर्त्रियों का पूरा सहयोग रहता था। [१]

जराखर का राजनैतिक सम्मेलन और महिलायें

१९३७ में गहरौली में राजनैतिक सम्मेलन के बाद १९३८ में राठ तहसील में सम्मेलन के आयोजन की बारी थी। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने श्रीभाई से कहा कि गहरौली के बाद अब सम्मेलन की दृष्टि से राठ तहसील का नम्बर है। उनका विचार था कि राठ में एक अनोखा आयोजन होना चाहिए, इस पर श्रीपति सहाय रावत ने दीवान साहब से कहा कि यदि सम्मेलन राठ तहसील में होना है तो उसे जराखर में आयोजित कराइये। उस समय हमीरपुर जनपद की कांग्रेस समिति के अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानंद थे तथा रामगोपाल गुप्त मंत्री थे। कांग्रेस कमेटी ने जराखर में राजनैतिक सम्मेलन को करने की अनुमति प्रदान कर दी, इस तरह १९३८ में जराखर में राजनैतिक सम्मेलन होने का निश्चय हो गया। [२]

श्रीपति सहाय रावत ने जराखर में आयोजन की प्रत्याशा में छः माह पूर्व ही

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६०।

प्रचार प्रारम्भ कर दिया था। हमीरपुर जनपद की हमीरपुर, मौदहा, महोबा, राठ तथा कुलपहाड़ नामक पाँचो तहसीलों के एक–एक गाँव का भ्रमण कर जनता से सम्पर्क कर सम्मेलन का पुरजोर प्रचार–प्रसार किया गया।[१] जराखर के राजनैतिक सम्मेलन का प्रचार तो जनपदेत्तर हुआ था, यही कारण है कि इसमें बुन्देलखण्ड के कई जनपदों से जनता की भारी भीड़ आयी थी।

सम्मेलन के प्रमुख सहयोगी

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन को भले ही जनपदीय परिधि में परिवेष्टित किया गया हो किन्तु वस्तुतः वह जनपदीय न होकर बुन्देलखण्ड स्तर का एक विशाल सम्मेलन था।यहाँ सम्मेलन के स्वरुप पर सांगोपांग विचार करना प्रासंगिक होगा। सम्मेलन में पुरूषों तथा महिलाओं का समवेत सहयोग सराहनीय रहा।

जराखर के इस सम्मेलन में जिगनी चरखारी, सरीला और बीहट राज्य के सामन्तों ने प्रबन्धन की दृष्टि से अच्छा सहयोग प्रदान किया। उस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह हमीरपुर जनपद से विधायक थे। उन्होंने पड़ोसी देशी राज्यों तथा जनपद के बड़े– बड़े जमीदारों से सम्मेलन में सहयोग करने के लिए प्रेरित किया।

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०–६०

मन्नीलाल गुरुदेव

गहरौली निवासी मन्नी लाल गुरूदेव ने मौदहा, महोबा तथा हमीरपुर तहसील का दौरा कर अपेक्षित अर्थसंचय किया। इससे सम्मेलन में आर्थिक पक्ष को मजबूती मिली, गुरूदेव ने बांदा जिले का भी भ्रमण कर वहाँ से चंदा के रूप में धन प्राप्त किया।[१]

कांग्रेस अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानंद

स्वामी ब्रह्मानंद उस समय जनपदीय कांग्रेस समिति के अध्यक्ष थे, साथ ही लोकसेवा के कारण वे जनता के भी अध्यक्ष थे। स्वामी ब्रह्मानंद ने सम्मेलन की सफलता के लिए रात दिन एक कर दिया, वे जगह—जगह गये, जमींदारों तथा सामन्तों को सहयोगार्थ प्रेरित किया। उन्होने कांग्रेस के अध्यक्ष पद की पूरी जिम्मेदारी को निभाया। स्वामी जी ने सम्मेलन को त्वरा प्रदान कर सफलता का अन्तिम संरजाम प्रदान किया।

रामगोपाल गुप्त उर्फ गोपाल भाई

मौदहावासी गोपालभाई हमीरपुर जनपद ही नहीं अपितु यहाँ की जनोभावना की भूमि के भी निवासी थे। वे किशोर काल से ही क्रांतिधर्मा हो गये थे। उनका सम्पूर्ण जनपद से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गया था। जराखर सम्मेलन के समय ये कांग्रेस समिति के मंत्री थे। गोपालभाई की प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय कांग्रेस समिति में भी पहुँच

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य संग्राम सेनानी मन्नीलाल गुरुदेव के पुत्र से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

थी। ये अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के वर्षो सदस्य रहे हैं। इन्हें इन्दौर षडयन्त्र में सात वर्ष की सजा हुई थी। जराखर में सम्मेलन होने के एक माह पूर्व ही ये कांग्रेस कार्यालय सहित जराखर आ गये थे। सम्मेलन की पूर्णता में इनकी भी प्रभावी पहल रही।[१]

रामसेवक खरे

ये महोबा के ईश्वरी सदन में रहतें रहे, इनका मोटर परिवहन का व्यवसाय था। ये जिला कांग्रेस कार्यालय के मंत्री थे। जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में खरे जी ने संचार, परिवहन, पेट्रोल एवं भोजनादि के प्रबंधन में जिस कौशल का परिचय दिया, उसके तत्कालीन सभी लोग इनके कायल थे। इन्होंने सम्मेलन में सहयोग का जो भी अवसर आया, उसे जाने नही दिया।

दीवान उदित नारायण सिंह

उदित नारायण सिंह मझगवां के सम्पन्न जमीदार थे। इन्होंने जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में रईस घरानों से सम्पर्क स्थापित कर धन एकत्रित किया, साथ ही हाथियों के लिए स्वर्णजटित अम्बारी तथा शमियाना आदि बड़े— बड़े सामान जुटाकर सम्मेलन

---

१. स्वतन्त्र्य सेनानी गोपाल भाई के अनुज लक्ष्मी नारायण आनंद से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

के प्रबंधन को सुगम बनाया। इनके सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता।

प्रतापसिंह तोमर

प्रताप सिंह तोमर जराखर के एक प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इन्होंने जराखर की जनता को सम्मेलन में पूरी सिद्दत के साथ सहयोग के लिए प्रेरित किया। इनका सम्मेलन में शांति– स्थापन में सक्रिय सहयोग था। उस समय ये जराखर में बहुत लोक प्रिय थे। इनका सम्मेलन की पूर्णता में सक्रिय सहयोग रहा।

बाबूराम प्रसाद

रामप्रसाद नौरंगा निवासी थे। ये छात्रकाल से ही राष्ट्रधर्मी हो गये थे। रामप्रसाद एक मेधावी पुरुष थे। इन्हें गणित में महारत हासिल थी। रामप्रसाद ने जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में कांगेस के हर मोर्चे को सम्हाला। ये सचमुच सम्मेलन के दृढ़ स्तम्भ थे।[१]

जराखर के अन्य लोग

नाथूराम सम्मेलन के कोठार थे। झुन्नीलाल नन्ना, शिवदयाल, दसई महतो,

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर के पुत्र डा० श्रीकान्त से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

गयादीन रावत, ठाकुर ओंकार सिंह खजांची थे। इसके अतिरिक्त रामदयाल, शिवदीन दादी, भगवानदास तथा काशी प्रसाद पटवारी आदि की सम्मेलन में उपयोगी भूमिका रही।[१]

गोविन्द वल्लभ पन्त के आने का अनुमोदन

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर के कई नेता पधारे थे। पं० गोविन्द वल्लभ पंत उस समय उ० प्र० के मुख्यमंत्री थे। दीवान शत्रुघन सिंह उस समय जनपद से विधायक थे। दीवान साहब तथा जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानंद ने पंत जी को आमंत्रित किया, जिसे पंत जी ने स्वीकार कर लिया। सम्मेलन में पं० गोविन्द बल्लभ पंत के पधारने की सूचना जनपद में ही नहीं अपितु बुन्देलखण्ड के अन्य जनपदों में भी प्रचारित की गई थी।[२]

सम्मेलन और युग परिवर्तन का सन्धिकाल

जराखर का राजनैतिक सम्मेलन युग परिवर्तन के सन्धिकाल में हुआ था। जनता जहाँ एक ओर सामंतशाही के अधीन जिन्दगी जी रही थी वहीं दूसरी ओर उ०प्र० में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल का अस्तित्व आजादी का शुभसंकेत दे रहा था। जन सामान्य को यह लगने लगा था कि स्वराज्य आने वाला है। सरकारी विभागों पर कांग्रेसी

१. स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह, राठ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।
२. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६२

मंत्रिमण्डल का नियंत्रण जनता के लिए आश्चर्य से कम नहीं था। जराखर का राजनैतिक सम्मेलन इस दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण था।

सम्मेलन और सरकारी प्रदर्शनी

ब्रिटिश काल में उस समय सरकारी व्यय पर कलेक्टर की अनुमति पर प्रदर्शनी का आयोजन होता था, जिसमें आँग्ल गवर्नर भी निमंत्रित होते थे। प्रदर्शनी में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संस्कृति का बहुआयामी प्रदर्शन होता था। प्रदर्शनी में नाना प्रकार की दुकानें आती थीं, जिसमें भाँति–भाँति की वस्तुओं के माहात्म्य को दर्शाया जाता था, उस प्रदर्शनी में लोकशिल्प का अनूठा प्रदर्शन भी होता था। उस समय उत्तर प्रदेश में कांग्रेस का मंत्रिमण्डल था, पन्त जी मुख्य मंत्री थे। इस नाते सरकारी व्यय पर जराखर के राजनैतिक सम्मेलन मे प्रदर्शनो का आयोजन किया गया।[१]

कुछ शहरी व्यक्तियों ने जराखर गाँव में प्रदर्शनी के आयोजन का विरोध भी किया था। उन लोगो ने कलेक्टर से मिलकर प्रयास किया कि जराखर में. प्रदर्शनी न लगकर कस्बे में ही प्रदर्शनी लगे। प्रदर्शनी के विरोधियों का तर्क था कि जराखर एक छोटा सा गाँव है, जहाँ पर अनेक प्रकार की असुविधायें हैं, जराखर में जनसामान्य के लिए दैनिक जीवन के लिए आवश्यक सामग्री न मिलेगी । पीने के पानी तक की व्यवस्था न हो पायेगी।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत के पुत्र डा० श्रीकांत, जराखर से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

कलेक्टर का सटीक जवाब

उस समय सिद्दीकी हसन हमीरपुर जनपद के जिलाधीश थे। उन्होंने प्रदर्शिनी विरोधियों को बड़ा सटीक जवाब दिया। कलेक्टर ने कहा कि मैं जनता की इच्छा के प्रतिकूल कुछ भी करने को तैयार नहीं हूँ जनता की राय है कि जराखर में ही प्रदर्शिनी लगायी जाय। कांग्रेसी मंत्रिमंडल जनता का मंत्रिमंडल है, जब जनता के मुख्यमंत्री जराखर आ रहे हैं तो प्रदर्शनी भी जराखर में ही प्रदर्शित होगी। इस तरह जराखर में प्रदर्शनी के लगने का निर्णय हुआ।[१]

जल प्रबंधन

जराखर जैसे विशाल राजनैतिक सम्मेलन में पेयजल की आपूर्ति आसान नहीं थी। जराखर में परम्परागत जल स्रोत के साधन कुँये नब्बे फीट गहरे थे, साथ ही सम्मेलन तथा प्रदर्शनी के निकट मात्र तीन कुंये थे, उनसे पानी केवल तरसे से ही निकल सकता था। सम्मेलन में जनाधिक्य की संभावना को देखते हुए जलापूर्ति एक समस्या तो थी ही।

सम्मेलन के आयोजन से जुड़े पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता पेयजल की समस्या पर विचार करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि लहचूरा बाँध से यदि इस्लामपुर माइनर

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

में जल छोड़ दिया जाय तो जल समस्या का समाधान हो जायेगा, साथ ही आयोजकों को यह भी पता चला कि झांसी डिवीजन के इंजीनियर मझगवां नहर कोठी में निरीक्षण हेतु आने वाले है। इंजीनियर से मिलने के लिए श्री भाई अधिकृत हुए।[१]

आंग्ल अभियन्ता अपनी पत्नी के साथ मोटर कार से जब रिहुटा नहर कोठी की ओर जा रहे थे तभी श्रीभाई ने उन्हें हाथ से संकेत कर रुकने का अनुरोध किया। इंजीनियर की कार रुक गयी। इंजीनियर ने श्रीपति सहाय रावत से पूँछा कि क्या बात है? इस पर श्रीभाई ने ८ फरवरी से १२ फरवरी १९३८ तक जराखर में आयेजित होने वाले विराट सम्मेलन के लिए पेयजल समस्या से उन्हें अवगत कराया, जिस पर अंग्रेज अधिकारी ने सकारात्मक जवाब दिया।

इंजीनियर के आदेश पर सम्मेलन के आयोजन के एक दिन पहले ०७ फरवरी १९३८ को नहर में पानी छोड़ दिया गया, जिससे जराखर एवं पड़ोसी गाँवों के तालाब पानी से भर गये। पेयजल की समस्या दूर हो गयी, जल प्रबंधन के साथ ही प्रदर्शिनी और बाजार के मध्य एक सुन्दर गूल बनाई गई, जिसमें नहर का ताजा जल बहता रहता था।

जराखर के सभी तालाब लहचूरा बांध की नहर के स्वच्छ जल से भर गये थे, प्रदर्शनी के पास का बड़ा तालाब भी जल से लबालब था, तालाब में जल प्रदूषण

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६३।

को रोकने के लिए समुचित सुरक्षा व्यवस्था भी की गयी थी।

स्थान प्रबंधन

इतने बड़े सम्मेलन के आयोजन के लिए जराखर में कोई मैदान नहीं था। उस समस्या का समाधान जराखर के देशभक्त किसानों ने किया ।[१]

जराखर के किसानों ने अपने हरे—भरे खेत सम्मेलन के लिए उपलब्ध कराया, देखते—देखते लहलहाते खेत मैदान में तब्दील हो गये। ईश्वर ने आयोजकों की मदद भी की, हल्की वर्षा हुई, मिटटी मुलायम हो गयी। मैदान पर बहुत ही सुगमता से बेलन घूमा और मैदान चौरस हो गया। जराखर के जूनियर हाईस्कूल के सामने से लेकर अटगाँव की सीमा तक एक वृहद मैदान दिखायी पड़ने लगा।

आवागमन के साधन

सम्मेलन के मैदान मे अटगाँव जाने वाली सड़क के पास एक लम्बा चौड़ा हवाई अड्डा बनाया गया, जहाँ पर जहाजों के उतरने की व्यवस्था थी। लखनऊ की फ्लाइंग कम्पनी ने जराखर हवाई अडडे को देखने के लिए एक हवाई जहाज भेजा था, ताकि वह वायुयान यह देखकर बताये कि हवाई अड्डा जहाजों के

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत जराखर के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

उतरने के लिए उचित है या नहीं, कोई खतरा तो नहीं है। जहाज कई बार उतरा और चढ़ा; जमीन कहीं पर धसी नहीं। इस तरह वह जमीन को सही ठहराकर लखनऊ चला गया।

सम्मेलन और प्रदर्शनी के उत्तर में एक बस स्टेशन बनाया गया। उस समय पक्की सड़क नहीं थी । बस राठ से जराखर जाती थी। राठ, उरई तथा हरपालपुर से यात्रियों के लिए बैलगाड़ियों की बड़े पैमाने पर व्यवस्था की गयी थी। जराखर और राठ बैलगाड़ियों से जुड़ा हुआ था। उस समय बैलगाड़ियों की भरमार के कारण कोई भी व्यक्ति साइकिल से या पैदल नहीं चल पाता था।[१]

द्वारों का प्रबंध

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन और प्रदर्शनी के लिए चार द्वार बनायें गये थे। उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम की दिशाओं को दर्शाते ये द्वार सफेद खद्दर से आवेष्टित अपनी अद्भुत छटा बिखेरते थे।

प्रात: सायंकाल इन द्वारो पर शहनाई की सुरीली ध्वनि गुंजित होती थी। इन द्वारो पर कलात्मक बेल–बूटों की व्यस्था इनके सौन्दर्य को और अधिक निखार दिया

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

था।[1]

पण्डाल

जराखर के विशाल राजनैतिक सम्मेलन में ५० हजार से अधिक व्यक्तियों के बैठने के लिए एक बहुत बड़े पाण्डाल की व्यवस्था की गई थीं। इसी पाण्डाल पर सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ था।

मंच प्रबंधन

सम्मेलन के अन्तर्गत लकड़ी के तख्तों का एक ऊर्ध्वगामी मंच बनाया गया, जिसमें चढ़ने—उतरने के लिए लकड़ी के तख्तों की सीढ़ियाँ बनाई गयी थीं। मंच भी सफेद खद्दर से ढका था, जो संगमरमर के सौन्दर्य जैसा प्रतीत होता था।

मंच की अनूठी छतरी

बांस के बर्तनों से बनी छतरी दर्शकों के आकर्षण की केन्द्र थी। छतरी—निर्माण की सोपान पद्वति देखते ही बनती थी। सबसे पहले बांस की चंगेल, चंगेल के ऊपर

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

बांस की चौड़ी चकौटी, चकौटी के ऊपर दौरिया, दौरिया के ऊपर दौल्ला, दौल्ला के ऊपर घूका और घूका के ऊपर बांस की छोटी—छोटी कटोरियाँ इस करीने से लगायीं गयीं थीं कि यह मंच का मण्डप अतीव मनमोहक लगता था।

स्वयं सेवकों का शिविर

सम्मेलन के प्रबंध के लिए पाँच सौ स्वयंसेवकों का एक शिविर पाण्डाल के पास ही लगाया गया था। मध्य प्रदेश के गुना निवासी एवं प्रख्यात क्रांतिकारी सागर सिंह ने इन स्वयं सेवकों को प्रशिक्षण दिया था। सागर सिंह सिसोदिया, गोपाल भाई एवं राधेश्याम मिश्र के क्रांतिकारी साथी थे। इन्हें सैन्य क्षेत्र का सम्यक ज्ञान था। इन्होंने म०प्र० के प्रजा मण्डल आन्दोलन की अगुवाई की थी।[१]

सुरक्षा प्रबंध

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में पुलिस का समुचित प्रबंध था। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद के बारह थानों की पुलिस कार्य कर रही थी। पुलिस कैम्प में पुलिस बैन्ड भी था।[२]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६५

२. वही।

जिलाधीश का कैम्प

जिलाधीश का कैम्प प्रदर्शनी के निकट ही स्थित था। इसके अतिरिक्त जनपद की पाँचों तहसीलों के डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार तथा कानूनगो भी थे। इस तरह सुरक्षा की व्यवस्था चाक चौबंद थी।

राष्ट्रीय झण्डे की शिखर-व्यवस्था

जराखर में एक बहुत पुराना ताड़ का वृक्ष था, जिसे भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के लिए प्रयोग में लाया गया था। उस ताड़ के पेड़ को काटकर लाना तो आसान रहा, किन्तु उसमें ध्वज लगाकर उसे खड़ा करना बहुत मुश्किल कार्य था, वह इतना बड़ा और वजनदार था कि आसानी से खड़ा नहीं हो पा रहा था। जराखर निवासी तथा स्वयंसेवी पेड़ को खड़ा नही कर पा रहे थे, उस समय जराखर मे कोई ऊँची क्रेन उपलब्ध नहीं थी, जो उस वृक्ष को खड़ा कर देती। अन्तत: श्री भाई के बहनोई तथा स्वातन्त्र्य संग्राम सेनानी आनंदीलाल की सूझबूझ से उस ताड़ के पेड़ को खड़ा किया गया।[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

मीडिया-प्रबंध

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पत्रकार बुलाये गये थे, जिन्होंने सम्मेलन की कार्यवाही को विविध समाचार पत्रों में प्रमुखता से स्थान दिया था। राजनैतिक सम्मेलन के समाचार अनेक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए थे।

राजनैतिक सम्मेलन के सम्पूर्ण प्रबंधन में जराखर निवासियों की निष्ठा एवं त्याग अपना कोई सानी रखता था।[१]

भोजनालय

जराखर का राजनैतिक सम्मेलन एक विशाल सम्मेलन था। अतिथियों एवं कार्य कर्ताओं के भोजन का प्रबंध बहुत सरल नहीं था। जराखर में आज जिस स्थान पर बैंक और गल्ला गोदाम की वर्तमान बिल्डिंग है, उसी स्थान पर सम्मेलन के भोजनालय का प्रबंध था। उस समय यह मैदान के रूप में अप्रयुक्त पड़ा था। भोजन बनाने वाले चालीस पाक शास्त्री थे। सुबह से लेकर शाम तक भोजन बनता ही रहता था। बाहर से आने वाले अतिथियों को भोजन दिया जाता था। भोजनालय के गेट पर स्वयंसेवियों

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत जराखर के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

का पहरा रहता था।

भोजनालय के द्वार पर ही टिकट घर था, केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं को टिकट दिया जाता था। टिकट नि:शुल्क मिलता था। टिकट केवल संख्या की जानकारी के लिए दिये जाते थे । उस भोजनालय में बारह हजार आगन्तुकों ने भोजन किया था। टिकटों के आधार पर ही संख्या का आकलन हो सका था।

१९३८ में डालडे का प्रचलन नहीं था। सम्मेलन में भोजन हेतु घी का प्रबंध हुआ था। उस समय पचास पैसे में मिठाई—पूड़ी लोगों को मिल जाती थी; साथ ही चार पैसे में पच्चीस ग्राम जलेबी मिल जाती थी। पूरे सम्मेलन में कार्यकताओं को जलपान में ग्यारह कुन्तल जलेबी दी गयी थी।[१]

इसके अतिरिक्त विशिष्ट अतिथियों के लिए भोजनादि हेतु रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में एक महिला दल को बुलाया गया था।[२]

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में सफाई का समुचित प्रबन्ध था, सम्मेलन में गंदगी से बचाव के लिए बाहर से अनेक सफाईदार बुलाये गये थे, जो रात दिन स्वच्छता—अभियान में लगे रहते थें, इसके साथ ही सम्मेलन में एक स्वास्थ्य अधि

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६५

२. रानी राजेन्द्र कुमारी की पुत्रवधू अमिता क्षत्रिय, करगवां से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

अधिकारी की भी व्यवस्था थी, जिसके निर्देशन में स्वच्छता कार्यक्रम को चलाया जाता था।

पं० नेहरू और हाथी

बीहट के राजा के हाथी को सम्मेलन में लाया गया था। उसकी अम्बारी स्वर्णजटित थी। झूल सुनहली जटी की थी। हाथी के गले में सोने चाँदी का हार था। उसके दाँत सोने—चाँदी से मढ़े थे। सम्मेलन में पं० नेहरू तथा पं० गोविन्द वल्लभ पंत दोनों को पधारना था, जब इन दोनों विभूतियों से हाथी पर सवार होने का अनुरोध किया गया तो उन्होंने हाथी पर बैठने से यह कहकर इन्कार कर दिया यह साम्राज्यवादी सवारी है।[१]

सम्मेलन का सैलाब

जराखर का राजनैतिक सम्मेलन कई दृष्टियों से अपने आप में बेजोड़ था। इस सम्मेलन में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के चारो जनपदों से तीन लाख की भीड़ उमड़ पड़ी थी। इतना बड़ा जन सैलाब तत्कालीन बुन्देलखण्ड के सम्मेलन में अन्यत्र देखने को

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६६।

नहीं मिली थी। यह सचमुच बुन्देल क्षेत्र का अद्‌भुत सम्मेलन था।

संकेतक

सम्मेलन प्रारम्भ होने के सम्बन्ध में जनता को यह सूचना दे दी गयी थी की जब सभा आरम्भ होगी तो गोलों की इक्कीस आवाजें आयेंगी। इन आवाजों से यह समझ लेना कि सम्मेलन शुरू होने वाला है, आप सब लोग सम्मेलन स्थल पर आ जाना। जराखर वासियों ने सम्मेलन—आयोजन में व्यवस्थानुसार आचरण कर एक अच्छी मिशाल कायम की थी।

पन्त जी का आगमन

जन सामान्य को तो यह ज्ञात ही था कि गोविन्द बल्लभ पंत को राजनैतिक सम्मेलन में पधारना है, इस कारण ७ फरवरी १९३८ को प्रातः काल से ही सभा स्थल में भीड़ उमड़ पड़ी थी। पंत जी को हवाई जहाज द्वारा लखनऊ से जराखर आना था, कुछ समय बाद देखते ही देखते हवाई जहाज आया और चक्कर लगाकर जराखर के हवाई अड्डे पर उतर गया, जहाँ पर लाखों दर्शकों की भीड़ जमा थी।[१]

जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष स्वामी ब्रम्हानंद, विधायक दीवान शत्रुघ्न सिंह

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

तथा कलेक्टर सिद्दीकी हसन और महान क्रांतिकारी पं० परमानंद ने हवाई अड्डे पर पं गोविन्द बल्लभ पंत का भावभीना स्वागत किया। स्वागत सत्कार के बाद पंत जी सम्मेलन के पण्डाल में पधारे।

जब पंत जी ने दरबार के स्थान पर जलसा शब्द का प्रयोग किया

पण्डाल में पंत जी, जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष स्वामी ब्रम्हानंद, विधायक शत्रुघ्न सिंह, महान स्वातन्त्र्य शूरमा पं० परमानंद, कलेक्टर सिद्दकी हसन, पुलिस अधीक्षक, पांचो तहसीलों के डिप्टी कलेक्टर तथा तहसीलदार, नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, जिला परिषद हमीरपुर के अध्यक्ष, जिले के रईस लोग, बुन्देलखण्ड के चारों जनपदों के प्रमुख नेता, कार्यकर्ता तथा लाखों दर्शक मौजूद थे। नगर पालिका अध्यक्षों ने पन्त जी को मांग पत्र प्रस्तुत किये और कलेक्टर हसन साहब ने पन्त जी का स्वागत भाषण किया। कलेक्टर ने अपने भाषण में दरबार शब्द का इस्तेमाल किया, जिस पर पन्त जी ने कहा कि इसे दरबार नहीं जलसा कहिये, क्योंकि दरबार शब्द सामन्तवादी है जबकि जलसा शब्द जनवाद का प्रतीक है।[१] इस तरह पंत जी के इस आह्वान से जनता गदगद हो उठी। इस सम्बंध में श्री भाई की कुछ पंक्तियां उल्लेखनीय है—

०७ फरवरी सन १९३८ में हुआ राजनैतिक मेला।

गोविन्द बल्लभ पंत मंत्री आये थे सुन्दर बेला।।

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—६६।

मुख्यमंत्री पहले थे वे भारी था दर्शक रेला।

जन सागर उमड़ पड़ा था ऐसा मचा हुआ ढेलम ढेला।।

राजनीति का पूरा पण्डित था विद्वान वकीलों में।

पिछड़ा नहीं विरोधी दल से बढ़ता गया दलीलों में ।।

मजदूर किसान सभी का साथी, क्या खेतों क्या मीलों में।

जन कष्टों को सुनकर दौड़ा पर्वत सागर झीलों में ।।

पंत जी ने सभा के समक्ष प्रभावी विचार रखे, जो जन साधारण के अन्तर्मन को छू गये। वे ०७ फरवरी १९३८ को अपरान्ह जराखर से लखनऊ प्रस्थान कर गये।[१]

पं० नेहरू का आगमन

पं० जवाहरलाल नेहरू को ०८ फरवरी १९३८ को गांधी जी के आश्रम सेवाग्राम से रेल द्वारा झांसी स्टेशन आना था। उन्हें लेने के लिए जिला कांग्रेस अध्यक्ष स्वामी ब्रम्हानंद और कांग्रेस मंत्री रामगोपाल गुप्त हरपालपुर स्टेशन गये। वे वहाँ से रेलवे द्वारा झांसी स्टेशन पहुँचे, जहाँ पर पं० नेहरू उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हरपालपुर रेलवे स्टेशन पर जराखर स्वागत समिति की मोटर कार खड़ी थी।[२] स्वामी ब्रम्हानंद तथा रामगोपाल गुप्त पं० नेहरू को जराखर ले आये। पं० जवाहरलाल नेहरू रात्रि आठ बजे

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

जराखर आये, थके हुए तथा क्षुधित भी थे। उन्होंने आते ही कहा कि मैं भूखा हूँ, मुझे यदि पाँच मिनट के अन्दर भोजन नहीं मिला तो मै सो जाऊँगा, फिर मुझे जगाना नहीं।

भोजन का विशेष प्रबंध

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में वैसे तो ४० पाक शास्त्रियों की व्यवस्था भोजन प्रबंध के लिए की गयी थी किन्तु अतिविशिष्ट अतिथियों के लिए महिला मंच को भी दायित्व सौंपा गया था। पं० नेहरू के लिए सूखी मेवा तथा ताजे फल मंगाये गये थे। उनके आगमन से पूर्व भोजन तैयार करा दिया गया था। उनके क्षुधित होते ही भोजन तुरन्त उपलब्ध करा दिया गया था। पं० जवाहरलाल नेहरू भोजन करने के बाद सभा स्थल गये।[१]

जब पं० नेहरू ने जराखर सम्मेलन की तुलना राष्ट्रीय कांग्रेस सम्मेलन से की

प० नेहरू जब सभा स्थल पर पहुंचे तो वहाँ पर उमडी भीड़ तथा अस्सी फीट ऊँचे स्तम्भ पर लहराता राष्ट्रीय झण्डा एंव करीने से सजी विविध प्रकार की दुकानों ने नेहरू जी के अन्तर्मन को छू लिया। पं० नेहरू एक जनप्रिय नेता थे।[२] वे जराखर

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर, के पुत्र डा० श्रीकान्त से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

सम्मेलन के निरीक्षण हेतु जिधर जाते थे, उधर ही उनके पीछे हजारों लोग चलने लगते थे। पं० नेहरू के जराखर आगमन से जराखर धन्य हो उठा था।

दो घण्टे घूमने के बाद पं० नेहरू ने जब विश्राम किया तभी जनता भी रात्रि में यथा स्थानों में सोई। उस विशाल सम्मेलन की रक्षा का दायित्व बहुत कुछ स्वयं सेवको पर था, जिसे उन्होंने पूरी तन्मयता के साथ निभाया भी।

जब पं० नेहरू जराखर घूमें

०९ फरवरी १९३८ को पं०जवाहरलाल नेहरू ने जराखर देखने की इच्छा प्रकट की। उनके साथ स्वामी ब्रम्हानंद भी गये। पं० नेहरू जराखर में सीधे श्रीभाई के घर पहुँचे, वे श्रीभाई के मकान के आँगन में खड़े हो गये । स्वामी ब्रम्हानंद ने नेहरू जी को श्रीभाई के घर का पूरा इतिहास बताया। स्वामी जी ने कहा कि इस मकान के सभी सदस्यों को पुलिस पकड़कर कारागार ले गयी थी, मकान पर पुलिस का अधिकार हो गया था, श्रीभाई का घर कोतवाली बन गया था। इस मकान में एक थानेदार तथा गारद हमेशा रही। ब्रिटिश सरकार ने श्रीभाई की चल—अचल सारी सम्पत्ति जब्त कर ली थी। जराखर को राजविद्रोही घोषित कर दिया गया था।[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

लोधी महिलायें

उस समय श्रीभाई के मकान में लगभग चालीस रिश्तेदार महिलायें रुकी हुई थीं। वे सभी आँगन में आकर खड़ी हो गयीं और नेहरू जी को देखने लगीं। पं० नेहरू लोधी महिलाओं की वेशभूषा को देखकर उखड़ गये और श्रीभाई से कहा कि लोध ी महिलाओं का पहनावा बहुत भद्दा है। मैं ध्वजारोहण के बाद आज इन महिलाओं की वस्त्रभूषा पर ही बोलूँगा। पं नेहरू ने पूरे जराखर गाँव का निरीक्षण किया। वे वहाँ की लगभग हर गली और कूचे में गये। पं० जवाहरलाल नेहरू का जराखर के हर घर में भावभीना स्वागत हुआ था। उस समय सारा जराखर पं० नेहरू के जयकारों से गुंजायमान हो गया था। जराखरवासियों ने पं० नेहरू के सम्मान में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रखी थी।

पं० जवाहलाल नेहरू ने ९ फरवरी १९३८ को प्रात: ८ बजे ८७ फीट ऊँचे रेशमी तिरंगे को फहराया, उस समय राष्ट्रीय ध्वज को इक्यावन गोलों से सलामी दी गई, तत्पश्चात स्वयंसेवकों ने झण्डा गान किया। ध्वजारोहण के पचात पं० जवाहरलाल नेहरू ने झण्डा माहात्म्य को स्पष्ट किया, साथ ही वहाँ पर लोगो को पूर्ण स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध रहने हेतु प्रोत्साहित भी किया। उसके बाद पं० नेहरू ने लोधी महिलाओं के सामने पहनावे पर भी अपने विचार रखे और उन्हें उपदेशित भी किया।[१]

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

रानी राजेन्द्र कुमारी और उनकी सहयोगी महिलायें

जराखर के विशाल राजनैतिक सम्मेलन के साफल्य में जहाँ जराखर एवं क्षेत्र के आबाल वृद्ध का असीम सहयोग रहा, वहीं हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिला सेनानियों की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं रही।

जराखर के राजनैतिक सम्मेलन के आद्यन्त प्रबन्धन पर दृष्टि डालने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि यहाँ की महिलओं ने रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग प्रदान किया।

सम्मेलन में पधारे अतिविशिष्ट अतिथियों के भोजनादि का प्रबन्धन रानी साहिबा को दिया था, जिसे उन्होंने पूरी निष्ठा से निभाया। गोविन्द वल्लभ पन्त तथा पं० नेहरू के भोजन की भी रानी साहिबा ही प्रभारी थीं, जिसे उन्होंने अपने कुशल निर्देशन में सुन्दर अंजाम दिया।

सम्मेलन में जहाँ भी प्रबन्धन को एक करीने का रूप देना होता या साज–सज्जा को नया आयाम देना होता, वहाँ यहाँ की महिलायें कभी पीछे नहीं रहीं। श्री भाई की पत्नी शांतिदेवी तथा बहन राजाबेटी जहाँ इस सम्मेलन में अग्रणी रही, वहीं जराखर की अन्य महिलायें भी पीछे नहीं रहीं। राठ तहसील के केवल पुरुष पुरोधा ही माँ भारती के लिए नतशीश नहीं हुए अपितु इस क्षेत्र की महिला वीरागनाओं की संख्या भी सर्वाधिक रही।[१]

---

१. स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह, राठ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

रानी राजेन्द्र कुमारी सम्मेलन में पधारे देश के शीर्ष नेताओं के साथ बराबर रहीं, उन्होंने अपने प्रखर व्यक्तित्व से चोटी के नेताओं को प्रभावित किया। रानी राजेन्द्र कुमारी को केवल क्षेत्रीयता के आधार पर उनके प्रभाव को लघुवादी नहीं कहा जा सकता। उन्हें स्वातन्त्र्य संघर्ष के शिखर सेनानियों का सानिध्य प्राप्त था तथा वे बुन्देल क्षेत्र की शीर्ष नेत्री थीं।

रानी राजेन्द्र कुमारी की महिला टीम में राठ क्षेत्र की उर्मिला देवी, भगवती देवी शुक्ला, पार्वती देवी, रामप्यारी देवी, कांती देवी, जमुना देवी, शिवरानी देवी, सरस्वती देवी, कस्तूरी देवी, जनक दुलारी, शांति देवी, राजे बेटी, राजाबेटी एवं गोमती देवी का तथा कुलपहाड़ की किशोरी देवी एवं महोबा की भुवनेश्वरी देवी और सरयू देवी पटेरिया का भी सम्मेलन में सराहनीय सहयोग रहा।

इस तरह जराखर के राजनैतिक सम्मेलन की सफलता के सोपानों में एक सोपान महिलाओं का भी था। राजनैतिक सम्मेलन के स्वाताध्यक्ष श्री भाई ने अपने स्वागत भाषण में अपने अनेक जुझारू तथा बलिदानी साथियों को तहेदिल से याद करते हुए उनकी कुबार्नियों को अनेको बार स्मरण किया, उसके बाद उन्होंने अभ्यागतों का हार्दिक स्वागत किया तत्पश्चात सम्मेलन में सहयोग के लिए अपने सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। [१]

---

१. रानी राजेन्द्र कुमारी के पुत्र कर्नल प्रेम प्रताप सिंह, करगवां से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

श्रीभाई ने अपने उद्‌बोधन में उन महिला कार्यकर्त्रियों की भी भूरि—भूरि प्रशंसा की, जिन्होंने सम्मेलन की सफलता को अन्तिम संरजाम देने में अहर्निश मेहनत की थी। उन्होंने खास तौर पर रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व तथा जराखर एवं राठ क्षेत्र की महिलाओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। इस तरह अन्ततः कहा जा सकता है कि जराखर के सम्मेलन में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता रही।[१]

निष्कर्ष

भारतीय स्वातन्त्र्य समर में बुन्देल क्षेत्र (उ०प्र०) के हमीरपुर एवं महोबा जनपद की सांग्रामिक सहभागिता कम महत्वपूर्ण नहीं रही, उस संघर्ष को प्रखर एवं प्रभावी बनाने में जनपदीय राजनैतिक सम्मेलनों ने उपयोगी उपादान की भूमिका निभायी। हमीरपुर एवं महोबा जनपद में उस समय कई राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुए थे जिनमें रणाह्वान की रणनीति को अमली जामा पहनाया गया था।

सम्मेलनों में चोटी के नेताओं की उपस्थिति जहाँ उन्हें साफल्य प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाती थी, वहीं सामारिक सहभागिता को सोने में सुहागा मिल जाता था। हमीरपुर, महोबा एवं झांसी के राजनैतिक सम्मेलनों में केवल पुरुष सेनानियों एवं स्वयंसेवियों की ही प्रतिभागिता नहीं रहती थी, अपितु महिला सेनानी भी बढ़ चढ़कर

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत के पुत्र डा० श्रीकांत से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

भाग लेती थीं। इन राजनैतिक सम्मेलनों में प्रमुखनेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी, उर्मिला देवी, सरस्वती देवी, भुवनेश्वरी देवी तथा सरयूदेवी का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।

जराखर के विशाल राजनैतिक सम्मेलन के साफल्य में जहाँ जराखर एवं क्षेत्र के आबालवृद्ध का प्रचुर सहयोग रहा, वहीं हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिला सेनानियों की भूमिका कम स्तुत्य नहीं रही।

रानी राजेन्द्र कुमारी की महिला टीम में राठ क्षेत्र की उर्मिला देवी, भगवती देवी शुक्ला, पार्वती देवी, रामप्यारी देवी, कान्ती देवी, जमुना देवी, शिवरानी देवी, सरस्वती देवी, कस्तूरी देवी, जनक दुलारी, शांति देवी, राजा बेटी एवं गोमती देवी का तथा कुलपहाड़ की किशोरी देवी एवं महोबा की भुवनेश्वरी देवी तथा सरयू देवी पटेरिया का भी सम्मेलन में वरेण्य योगदान रहा।

इस तथ्य की पुष्टि जराखर के राजनैतिक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रमुख क्रांतिवीर श्रीपतिसहाय रावत के स्वागत भाषण से होती है। श्री भाई ने अपने उद्बोधन में उन महिला कार्यकर्त्रियों की भी भूरि—भूरि प्रशंसा की, जिन्होने सम्मेलन की सफलता को अन्तिम संरजाम देने में अहर्निश मेहनत की थी। इससे स्पष्ट होता है कि राजनैतिक सम्मेलनों में महिला सेनानियों की केन्द्रीय भूमिका रही।

<u>पाचवां अध्याय</u>

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और महिलायें

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और महिलायें

वैसे तो देश में १७५७ के बाद से ही दासता के दमन हेतु संघर्षी सुगबुगाहट शुरू हो गयी थी किन्तु एक सदी बाद अर्थात वह १८५७ में समवेत सामरिक संघर्ष के रूप में परिलक्षित हुई। सत्तावनी समर के बाद देश में राष्ट्रवादी भावनाओं में एक नया उभार आया और उसे देशधर्मी विभूतियों का एक नया सम्बल मिला, वैसे तों स्वाधीनता का संघर्ष उदारवादी, उग्रवादी एवं क्रांतिकारी चरणों की चौखट से होकर गुजरा किन्तु उसे चाहत की लोक चौपाल का सानिध्य गांधीकाल में ही जाकर मिला। उसके बाद ही राष्ट्रीय आन्दोलन जनान्दोलन बना।

गांधी जी १८९३ में दादा अब्दुला हाजी एण्ड कम्पनी के मुकदमे की पैरवी के लिए दक्षिणी अफ्रीका गये, जहाँ पर उन्होंने अश्वेतों के प्रति किये जा रहे अत्याचारों के नये अवतरण को देखा। वहाँ पर काले लोगों को सामी कहकर पुकारा जाता था।[१] यह शब्द अपमान एवं अनादार का पर्याय था। गांधी जी भी दक्षिणी अफ्रीका में अपमानित एवं अनादृत हुए किन्तु वे हिम्मत नहीं हारें। उन्होंने विदेशी धरती में सत्याग्रह का प्रयोग किया। उन्हें साधनों की पवित्रता के परीक्षण में सफलता मिली। गांधी जी ने अश्वेतों को उनके अधिकार दिलाये। वे १९१५ में स्वदेश लौटे, यहाँ आकर गांधी जी ने वस्तुस्थिति का आकलन किया और भारत में भी चम्पारण खेड़ा

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ० सं० १९।

और अहमदाबाद में अपने परीक्षित साधन सत्याग्रह का प्रयोग किया। गांधी जी के निर्देशन में १९२०–२२ तक देश में असहयोग आन्दोलन चला।[१]

गांधी काल का आजादी हेतु अगला संघर्षी चरण—सविनय अवज्ञा आन्दोलन था, जो १९३०—३४ तक चला। सारा देश गांधी आन्दोलनों से अनुप्राणित हो उठा, ऐसे में भला वीर प्रसूता धरती के रूप में विश्रुत बुन्देलखण्ड उस पुण्यधर्मी आचरण के क्षेत्र में कैसे शान्त रहता? यहाँ के जनपदों में हमीरपुर का गांधी आन्दोलनों में सहभागी ग्राफ बहुत ऊँचा रहा। गांधी जी के अहिंसात्मक संग्राम में केवल पुरूष सेनानियों की ही अहम् भूमिका नही रही अपितु महिला सेनानियों की भी स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रभावी पहल रही। प्रस्तुत अध्याय में महिलाओं के अनुदाय के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जनपदीय प्रतिभागिता पर भी एक दृष्टि डालना समीचीन होगा।

१९२९ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लाहौर में अधिवेशन हुआ, जिसमें हमीरपुर जनपद से श्रीपति सहाय रावत तथा भगवानदास बालेन्दु अरजरिया शामिल हुए। ये दोनो उत्तर प्रदेश—कैम्प में ठहरे । इस अधिवेशन में ०१ जनवरी १९३० को रात्रि में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया, जिसके तहत कार्यकर्ताओं ने भारत माँ के चित्र को एक हाथी में रखकर सारी रात जागरण किया।[२] अधिवेशन में अब्दुल गफ्फार खाँ के लाल कुर्ती धारी पठानों ने सरहदी नाच दिखाया, कांग्रेस अध्यक्ष पं०

---

१ .डा० उर्मिला शर्मा, डा० एस० के० शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, १९९९, पृ० सं० १५७—१५८।

२. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

नेहरू भी उस नर्तक दल के साथ खुलकर नाचे। रात्रि में एक महोत्सव जैसा माहौल था। उसके बाद गांधी जी को कांग्रेस कार्यसमिति ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के संचालन की भी अनुमति प्रदान कर दी, जिस पर गांधी जी आन्दोलन की पूर्व पीठिका बनाने में जुट गये। १२ मार्च १९३० को गांधी जी ने अपने ७८ चुने हुए शिष्यों के साथ दाण्डी पहुँच कर समुद्र तट पर नमक बनाकर कानून को तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का शिलान्यास किया।[१] तत्पश्चात सारे देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।

कुलपहाड़ सत्याग्रह आन्दोलन

भगवानदास बालेन्दु अरजरिया लाहौर अधिवेशन से होकर कुलपहाड़ लौट आये। कांग्रेस ने देश में महात्मा गांधी को अधिनायक बनाकर उन्हें अपने समस्त अधिकार हस्तान्तरित कर दिये, इसके साथ ही गांधी जी को यह भी अधिकार दे दिया कि वे गिरफ्तार होने के बाद अपनी इच्छानुसार अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर सकतें है। इसी तरह प्रान्त में स्वातन्त्र्य संघर्ष के संचालन के लिए गांधी जी ने गणेश शंकर विद्यार्थी को प्रथम अधिनायक नियुक्त किया।

इस पर गणेश शंकर विद्यार्थी ने बालेन्दु जी को कानपुर बुलाया और भगवानदास

१.डा० उर्मिला शर्मा, डा० एस० के० शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, १९९९, पृ० सं० १५७—१५८।

बालेन्दु अरजरिया को हमीरपुर जनपद में सत्याग्रह आन्दोलन के संचालन हेतु जिला अधिनायक मनोनीत किया। गांधी जी ने देश में ०७ अप्रैल १९३० से १३ अप्रैल १९३० तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाने की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत देश भर में नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन करना था। गांधी जी की इस उद्घोषणा को कार्यरूप में परिणित करने के लिए बालेन्दु जी ने हमीरपुर के सत्याग्रहियों की कुलपहाड़ में एक बैठक आयोजित की , जिसमें १३ अप्रैल से नमक कानून भंग करने का निश्चय किया गया।[१]

सत्याग्रहियों का एक जत्था पैदल महोबा से राठ गया, जिसने महोबा, कुलपहाड़ और राठ में नमक कानून को तोड़ा किन्तु इस कार्यवाही पर जिलाधिकारी ने किसी को भी गिरफ्तार करने का आदेश नहीं दिया। उस समय तक देश में हजारों सत्याग्रही बंदी बनाये जा चुके थे।

जिला कांग्रेस समिति ने दीवान शत्रुघन सिंह को स्वातन्त्र्य समर के मोर्चे का दायित्व प्रदान कर दिया, जिस पर दीवान साहब ने हर तहसील से सत्याग्रहियों के जत्थे तैयार कर नमक निर्माण हेतु राठ भेजना प्रारम्भ किया। राठ को नमक कानून के उल्लंघन का केन्द्र बनाया गया था, राठ में नमक बनाने की पर्याप्त सुविधा थी,साथ ही राठ की मिट्टी में नमक और सोरा बहुत था और राठ में प्राचीन काल में नमक

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० १९५—१९६।

बनता भी रहा था।

जिले में नमक सत्याग्रह के अन्तर्गत किसी की भी गिरफ्तारी न होने पर बालेन्दु जी काफी बेचैन हुए। वे नमक कानून तोड़ने के बाद एक जत्थे के साथ कुलपहाड़ रेलवे स्टेशन पहुँचे, जहाँ पर 'भारत में अंगरेजी राज' 'काकोरी के शहीद' तथा 'चाँद का फाँसी' अंक जैसे जब्तशुदा साहित्य को हाथ में लेकर वहाँ पर उपस्थित लोगों को पढ़कर सुनाया तथा यह घोषणा की कि हालाँकि ब्रिटिश सरकार ने इन कृतियों को गैर कानूनी घोषित किया है फिर भी ये पुस्तकें हमारे पास हैं और हम इनका प्रचार कर रहे हैं। इतना सब करने पर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया।[१]

इसके बाद लोगों में असीम उत्साह देखकर बालेन्दु जी ने एक सामानान्तर सरकार बनाने का निर्णय लिया। बालेन्दु जी ने अपनी इस योजना को असली जामा पहनाना शुरू किया, हर मोहाल तथा आस—पास के गाँवो में सांगठनिक कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने कुलपहाड़ में एक शिविर का आयोजन किया, जिसमें कई शाखाओं का गठन किया गया, जिनके कार्य क्षेत्र में सुरक्षा, आपसी विवादों का समाधान, शराब तथा लगान बंदी खादी— प्रचार तथा सत्याग्रहियों की भर्ती आदि विषयों का समावेश किया गया।[२]

इधर ०७ मई १९३० को गांधी जी नमक कानून को भंग करते हुए गिरफ्तार कर

१.पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० १९६।

२. वही, पृ०सं० १९७।

लिए गये। यह समाचार मिलते ही कुलपहाड़ में आशातीत हड़ताल हुई। इस परने आंतक के द्वारा दुकानें खुलवा कर सामान लेने का प्रयास किया किन्तु उन्हें असफलता हाथ लगी।

बहिष्कार कौ भऔ है, यही शान्त संग्राम

कुलपहाड़ में शाम को एक विशाल सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि ब्रिटिश सरकार द्वारा राष्ट्र के शिखर पुरूष गांधी जी की गिरफ्तारी के विरोध में हर भारतीय का यह नैतिक दायित्व है कि वह असहयोग करे तथा पुलिस जन त्यागपत्र देकर ब्रिटिश आदेशों की अवज्ञा करें, यदि वे ऐसा नहीं करते तो हर कुलपहाड़ वासी उनका सामाजिक बहिष्कार करें। इस निर्णय को मूर्त रूप देते हुए गाँव के कई मुखियों तथा नम्बरदारों ने अपने पद से त्याग पत्र दिए, साथ ही जिला बोर्ड के कई अध्यापक स्कूल छोड़कर आन्दोलन में शामिल हो गये।

कुलपहाड़ के सभी जातियों के मुखिओं ने यह व्रत लिया कि हमारी जाति के लोग पुलिस का सामाजिक बहिष्कार करेंगे। इस निर्णय के बाद दूसरे दिन से ही बाजार के दुकानदारों ने पुलिस को सामान बेचना बंद कर दिया। आला अधिकारियों ने इस योजना को विफल करने में कोई कोर—कसर नहीं छोड़ी किन्तु वे सफल नहीं हुए।[१]

१.पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० १९७।

१४ मई १९३० को भगवानदास बालेन्दु गिरफ्तार कर कर लिए गये। इस पर बालेन्दु जी ने अपने स्थान पर गौरहारी के रामदुलारे को अधिनायक मनोनीत किया। कुलपहाड़ मे पुलिस का सामाजिक बहिष्कार यथावत चलता रहा। कुलपहाड़ में पुलिस—उपेक्षा इतनी प्रभावी थी कि उनके लिए रसद आदि की व्यवस्था तथा सेवा के लिए बाहर से प्रबन्ध किया गया, उनके लिए बाहर से व्यक्ति बुलाये गये। आठ दिनो के बाद रामदुलारे सहित अन्य प्रमुख कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। कुलपहाड़ के स्वयं सेवकों तथा दुकानदारों के साथ पाशविक व्यवहार किया गया।

रानी राजेन्द्र कुमारी की अधिनायक के रूप में भूमिका

कुलपहाड़ में पुलिस के सामाजिक बहिष्कार होने के कारण पुलिस सत्याग्रहियों से इतनी कुपित थी कि वह सभी सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर थाने ले आये और उन्हें नीम के पेड़ से बांधकर इतना मारा—पीटा कि उनकी पीठ तथा चूतड़ों की खाल निकल गयी और रक्त की धारायें बह निकलीं। पुलिसिया कहर मुंशी सुन्दरलाल भ्रमर के सिर फूटने तथा बेहोश होने के रूप में उजागर हुई।[१]

कुलपहाड़ में वहाँ की पुलिस का आतंक इतना अधिक था कि कोई भी स्वयं

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—७५

सेवी या सत्याग्रही बाहर से कुलपहाड़ आने का साहस नही जुटा पा रहा था, कुलपहाड़ आने वाले गैर सत्याग्रहियों को भी पीटा जा रहा था। कुलपहाड़ में सत्याग्रह के लिए बाहय आगमन बंद था। इस तरह कुलपहाड़ में सत्याग्रहियों की संख्या शून्य होती जा रही थी।

रानी राजेन्द्र कुमारी सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत राठ में नमक सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व कर रही थीं। उनके साथ में पुरुष स्वयं सेवियों के साथ साथ बड़ी संख्या में महिला सहयोगी भी थीं। राठ तथा आस–पास के गाँवों की महिला सत्याग्रहियों ने रानी के साथ में कदम से कदम मिलाकर सहयोग प्रदान किया। उस समय रानी साहिबा ब्रिटिश सरकार के शराब घरों तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दे रहीं थीं। राठ में सत्याग्रह कार्यक्रम अपने उत्कर्ष पर था।[१]

राठ की पुलिस भी सत्याग्रहियों पर कहर बरपा रही थी। रानी राजेन्द्र कुमारी को जब यह पता चला कि कुलपहाड़ सत्याग्रह में स्वयं सेवकों का अभाव हो गया और वह निरन्तर बढ़ रहा था तो वे अपने दल के साथ कुलपहाड़ आ गयीं और सत्याग्रह आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ में लेकर अधिनायक का दायित्व निभाने लगीं। पुलिस थाने पर पुलिस का आना जाना रुक गया। राठ तहसील से बढ़ी संख्या में सत्याग्रही आकर पुलिस थाने पर धरना देने लगे। पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजने

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—७५

लगी।

कुलपहाड़ के पुलिस—बहिष्कार आन्दोलन के अन्तर्गत रानी राजेन्द्र कुमारी द्वारा वहाँ के थाने को अपने कब्जे में करने की सूचना सारे जनपद में बहुत तेजी के साथ फैल गयी। थाने में पुलिस कर्मियों का आना—जाना बन्द हो गया। इस पर पुलिस द्वारा सत्याग्रहियों के झुन्ड के झुन्ड गिरफ्तार कर हमीरपुर जेल भेजे जाने लगे। पुलिस के आला अधिकारियों सहित बाहर से पुलिस का एक बहुत बड़ा दल कुलपहाड़ आया और उसने रानी राजेन्द्र कुमारी तथा उनके दुध मुँहे बच्चे वीर प्रताप सिंह को गिरफ्तार कर जेल में बंदकर दिया। अंग्रेज सरकार ने रानी साहिबा को छः माह के कारावास की सजा दी। उन्हें हमीरपुर जेल से लखनऊ की केन्द्रीय जेल भेजा गया।[१]

रानी राजेन्द्र कुमारी का भाषण

रानी राजेन्द्र कुमारी ने उस समय, जब कुलपहाड़ का सत्याग्रह आन्दोलन स्वयंसेवियों से शून्य हो रहा था, अपने प्रभावी उद्‌बोधन से कुलपहाड़ वासियों को नई ऊर्जा प्रदान की थी।

रानी साहिबा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि — भाइयों एवं बहनो! जिन्दा दिली का ही नाम ही जिन्दगी है। ईश्वर ने हम आप सबको इस देश में जन्म देकर

---

१. रानी राजेन्द्र कुमारी के पौत्र हंसप्रताप सिंह एडवोकेट, राठ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

भेजा है। उसने हम सभी को, आसेतु हिमालय से लेकर कन्याकुमारी, करांची से लेकर नागालैण्ड की भूमि, जिस सबको हम—भारत देश कहते हैं, प्रदान की है। इस धरती पर हम सबको स्वतन्त्र रहकर जीवन यापन करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति की विश्व में अपनी एक अलग पहचान है, वसुधैव कुटुम्बकम हमारा अभीष्ट है। हम कभी आक्रान्ता नहीं रहे। भगवान राम लंका विजय कर वहाँ का शासन विभीषण को ही सौंपा, हम सब दधीचि के देश के वासी हैं, जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अपनी अस्थियाँ दान में देकर लोक सेवा को एक महान नया कलेवर प्रदान किया।[१]

रानी ने अपने विचारों को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हमारे शिरोमणि नेता गांधी जी ने अत्याचार एवं अन्याय का प्रतिकार करने के लिए अहिंसात्मक साधनों का एक अभिनव प्रयोग किया है। विश्व में विजय प्राप्ति का यह पहला आदर्श सोपान है। हिंसा से अहिंसा अधिक शक्तिशाली होती है। हम सभी को गांधी जी का सहयोग करना है। हम आपको लाठी—डंडे और आग्नेयास्त्रों से भयभीत नहीं होना हैं। आंग्ल पुलिस का बहिष्कार जारी रखना है। इस तरह रानी साहिबा ने कुलपहाड़ के सत्याग्रह आन्दोलन को अग्रगामी बनाने में अहम् भूमिका निभायी थी। पुलिस का सामाजिक बहिष्कार चल ही रहा था कि कुलपहाड़ में एक और अनूठा बहिष्कार व्यवहृत हुआ।

---

१. रानी राजेन्द्र कुमारी की पुत्र वधू श्रीमती अमिता क्षत्रिय, करगवां से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

वाणी बहिष्कार

जनता तथा दुकानदारों ने पुलिस के विरुद्ध वाणी—बहिष्कार भी प्रारम्भ कर दिया। पुलिस वाले जब सामान लेने दुकानदार के पास जाते तो दुकानदार मौन हो जाते थे, जब कोई स्वयं सेवक सत्याग्रह के दौरान पकड़ा जाता, पुलिस उससे नाम व पता पूँछती तो वह भी मौनव्रती हो जाता, इससे कुलपहाड़ में एक विचित्र स्थिति पैदा हो गयी। पुलिस के खिलाफ इस प्रकार का अनोखा बहिष्कार कुलपहाड़ में एक माह तक चला। शताधिक लोग जेल भेजे गये, सैकड़ों स्वयं सेवियों को पुलिस ने मारपीट कर छोड़ दिया। इस तरह के आन्दोलन का संचालन पहले आर्य समाज में शिविर लगाकर किया जाता था, बाद में वह शिविर बालेन्दु जी के मकान भारती—भवन में स्थानान्तरित हो गया। बालेन्दु जी के इसी मकान में रहकर रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपनी अनेक महिला सेनानियों के साथ आन्दोलन का नेतृत्व किया था।[१]

एक माह तक कुलपहाड़ में यह आन्दोलन अनवरत चला। उसके बाद तत्कालीन जिलाधीश पी०वी०भटकंकर ने स्वराज्य पार्टी के विधायक कुंवर हरप्रसाद सिंह के माध्यम से रानी राजेन्द्र कुमारी से अपील की कि वे पुलिस बहिष्कार आन्दोलन को समाप्त करायें। उसके बदले में जिला मजिस्ट्रेट ने यह वचन दिया कि पुलिस की तरफ से किसी भी प्रकार की जोर—जबर्दस्ती नहीं की जायेगी। इस पर भी रानी साहिबा ने भगवानदास बालेन्दु जी से आन्दोलन—समाप्ति के सम्बन्ध में जेल से पुछवाया, इस

---

१. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० १९८—१९९।

पर बालेन्दु जी ने एक सन्देश वाहक से कहला दिया था कि पुलिस बहिष्कार—आन्दोलन समाप्त किया जा सकता है किन्तु उन्होंने यह भी सन्देश भिजवाया कि गांधी जी के अन्य कार्यक्रम यथावत चलते रहना चाहिए। बालेन्दु जी से अनुमति मिल जाने पर पुलिस—बहिष्कार का आन्दोलन समाप्त किया। रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपनी सहयोगी महिलाओं के साथ शराब—गोदामों पर धरना दिया।

बुन्देलखण्ड में कुलपहाड़ में आयोजित पुलिस—बहिष्कार आन्दोलन अपने ढंग का एक अनोखा आन्दोलन था।[१] कुलपहाड़ के इस सत्याग्रह आन्दोलन को बुन्देल क्षेत्र के लोग बड़े गर्व के साथ बुन्देली भाषा में इस प्रकार याद करते है—

बहिष्कार कौ भऔ है, यहीं शान्त— संग्राम,
ब्रिटिश पुलिस में दर्ज है, कुलपहाड़ कौ नाम।

चुनौती का सटीक जवाब

गांधी इरविन समझौता को भंग कर सरकार ने कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया था, जो भी कांग्रेसी कार्यकर्ता बचे थे, उन सबकी एक गुप्त बैठक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की अध्यक्षता में प्रयाग में हुई, जिसमें किसी प्रकार से बालेन्दु जी ने अपने आप को बचाते हुए उस बैठक में शामिल होकर हमीरपुर जनपद का प्रतिनिधित्व किया। टण्डन जी ने बालेन्दु जी तथा दीवान साहब को भूमिगत होकर

---

१. क्रांति कारिणी किशोरी देवी कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

कार्य करने को निर्देश दिया।[१]

बालेन्दु जी ने जंगली क्षेत्र के रिखवाहा गाँव में अपना केन्द्र बनाया और वहीं से भूमिगत होकर लगान बंदी का आन्दोलन शुरू किया। बालेन्दु जी के पुलिस—पकड़ से परे रहने के कारण सरकार ने उन पर गिरफ्तार कराने वालों को पाँच सौ रूपये के इनाम देने की घोषणा की ।

पुलिस ने बालेन्दु जी के घर पर कई बार दबिश डाली, उनके बूढ़े बाप को घर से बेघर कर दिया। बालेन्दु जी की चल—अचल सम्पत्ति को कुर्क कर लिया गया। उनकी पत्नी तथा बहन को बंदी बनाकर जेल में बंद कर दिया गया। अंग्रेज कलेक्टर मि० गार्डन ने कांग्रेस के पूरी तरह सफाये का संकल्प किया। अंग्रेज जिलाधीश की इस चुनौती को बालेन्दु जी तथा उनके साथियों ने स्वीकार किया, साथ ही बालेन्दु जी तथा उनके सहयोगियों ने महोबा में एक विराट राजनीतिक सम्मेलन की योजना बनाकर कलेक्टर को इस आशय से चुनौती देनी चाही कि अभी भी कांग्रेसियों के ह्वदय में स्वतंत्रता की प्रबल चाह है।[२]

बालेन्दु जी ने जिलाधीश को एक पत्र भी लिखा कि जिले से कांग्रेस की समाप्ति का आपका संकल्प पूरा नहीं होने दिया जायेगा, ०२ जुलाई १९३२ को महोबा नगर में जिला राजनैतिक कान्फ्रेन्स आयोजित की जायेगी। बालेन्दु जी की इस सूचना से

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी कुलपहाड़ से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० २००।

जिलाधीश मि० गार्डन तथा गवर्नर मालकम हैली अत्याधिक क्रोधित हो उठे। सरकार ने ०२ जुलाई के पूर्व ही आसपास के जिलों से बड़ी संख्या में पुलिस कर्मी बुलाकर महोबा नगर को पूरी तरह घेर लिया, कोर्ट, कचहरी, स्कूल तथा कालेजों को एक सप्ताह के लिए बंद कर दिया गया।[१]

कोई भी बाह्य व्यक्ति महोबा नगर में बिना सरकारी अनुमति के प्रवेश नहीं कर सकता था। बालेन्दु जी ने कान्फ्रेन्स हेतु जन—जागरण के लिए एक कविता लिखी, जिसे लाखों प्रतियों में छपवाकर वितरित कराया।

रण- निमंत्रण

ब्रिटिश राज ने कांगेस पर भ्रकुटी तानी,
भारतीय नवशक्ति नष्ट करने की ठानी।
किया चाहता, सन सत्तावन सी मन—मानी,
कहता, भार में देखें कितना है पानी ।

कान्फ्रेंस की पर्व साल की फिर से आई,
कौन मनावे हाय जेल में है— सब भाई।
घोर दमन की घटा महोबे पर फिर छाई।

१.पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० २००।

हैं घेरे पड़े पुलिस के, नगर घिरा सब ओर से,

अब लाज आज यों जा रही, किसे पुकारूं जोर से।

हों जो सच्चे लाल, आज बन ऊदल आवें,

साज जोगिया भेष, वीर कर छल—बल आवें।

हों जो सच्चे मर्द आज बन सैयद आवें,

आजादी या मौत, यही बाजी वद आवै।

सबको आमन्त्रण है इसी, दो जौलाई के लिए,

चल पड़ो महोबा की तरफ, बस सन्मुख छाती किए।

वीरों आना शीघ्र, न घड़िया टलने पावें,

झण्डा ऊँचा रहें, यहीं आकर सब गावें।

वार न उन पर करें, महोत्सव किन्तु मनावें,

छिनी हुई आजादी को वापिस लौटावें।

बालेन्दु जी द्वारा रचित इस रण निमंत्रण की प्रति जिस कांग्रेसी या स्वयंसेवक के पास पायी जाती, पुलिस उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लेती थी।[१]

---

१ प्रं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० २०१।

ध्वजारोहण एवं सभारम्भ के संज्ञान के साधन

महोबा में जो कार्यकर्ता पहले से थे या छिपे हुए थे, उन्हे यह बता दिया गया था कि दो जुलाई को जिस स्थान पर पहला बम विस्फोट होगा, वहाँ झण्डा—अभिवादन होगा और जहाँ पर दूसरा बम विस्फोट होगा, वहाँ पर सम्मेलन या सभा आयोजित होगी।

निर्धारित समय में प्रातः छः बजे बम का धमाका हुआ, जिस पर स्वयंसेवको ने बांध पर चढ़कर झण्डा ऊँचा रहे हमारा गाना प्रारम्भ किया। उन्होंने झण्डे को फहराया। इस कार्यवाही पर सत्तर कांग्रेसी पकड़े गये। झण्डारोहण की कार्यवाही को लेकर जहाँ एक ओर सारे सुरक्षा कर्मी उलझ गये, वहीं दूसरी ओर लगभग एक सौ स्वयं सेवको ने समय का लाभ उठाते हुए ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के बंगले पहुँचकर बरामदे से फर्नीचर निकालकर मैदान मे सम्मेलन करना शुरू किया, इस पर अब पुलिस दो स्थानों पर मारपीट की कार्यवाही करने में फंस गयी। पुलिस के इस एक्शन के कारण समय पाकर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष तथा सभापति ने सभा करनी प्रारम्भ कर दी। सैकडों कार्यकर्ता बंदी बनाये गये। गिरफ्तारी के कारण महोबा की सभी जेले भर गयी थीं।[१]

इस सबके बावजूद पुलिस दीवान साहब तथा भगवानदास बालेन्दु को पकड़ नहीं सकी, बालेन्दु तथा उनके साथी चार माह बाद प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का कार्य करते

१.पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० २०३।

हुए पकड़े गये।

राष्ट्रीय सप्ताह और महिलायें

जलियावाला काण्ड के बाद १९२० से गांधी जी के आह्वान पर देश में प्रतिवर्ष ०६ अप्रैल से १३ अप्रैल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाने लगा । इस सप्ताह में युवक संकल्प लेते थे कि जब तक देश आजाद नहीं होगा तब तक हम चैन से नहीं बैठेगें। १९३० से इस सप्ताह को स्वतन्त्रता संग्राम सप्ताह के रूप में मनाया जाना लगा। [१] इसी वर्ष से नमक सत्याग्रह भी शुरू हुआ। १९३२ में जब राष्ट्रीय सप्ताह मनाने का अवसर आया तो उस समय लगभग अधिकांश कांग्रेसी जेलों में बंद हो चुके थे।

जो कार्यकर्ता बचे हुए थे, वे भूमिगत होकर कार्य कर रहे थे। कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया था। १९३२ में राष्ट्रीय सप्ताह मनाना एक दुष्कर कार्य था। इस संकटकाल में देश की वीर महिलाओ ं की भूमिका का कोई सानी नही था। राष्ट्रीय स्तर पर अरूणा आसफअली, पार्वती देवी, विद्यावती राठौर, सत्यवती रावत तथा पूर्णिमा बनर्जी आदि ने राष्ट्रीय सप्ताह का आयोजन कर कानून का उल्लंघन किया।

हमीरपुर जनपद में भी कांग्रेस कार्यालय पर पुलिस ने कब्जा कर लिया था,

---

१ .पं० द्वारिकेश मिश्र (संपादक) अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन समिति, १९८३, पृ०स० २०३।

कांग्रेसी जन गिरफ्तार कर लिये गये थे, ऐसे में यहाँ पर राष्ट्रीय सप्ताह का आयोजन हो पाना मुश्किल था। जनपद में इस प्रकार के गाढ़े वक्त में हमीरपुर की वीरांगनाओं ने शानदार सहयोग प्रदान किया। किशोरी देवी अरजरिया, रानीदेवी द्विवेदी तथा राठ तहसील की कुछ अन्य महिलाओं ने झण्डा फहराकर १९३२ में राष्ट्रीय सप्ताह को मनाया, साथ ही इस सप्ताह के अन्तर्गत उन्होंने गांधी सन्देश को आम लोगों के समक्ष रखा।[१]

राष्ट्रीय सप्ताह मनाने के कारण जनपद की अनेक वीर महिलायें तथा अनेक साथी गिरफ्तार कर लिये गये, सभी को एक वर्ष की सजा तथा अर्थ दण्ड भी दिया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय सप्ताह हमारे राष्ट्रीय जीवन का एक आवश्यक अंग बन चुका था।

धरने, प्रदर्शन और महिलायें

गांधी जी के आह्वान पर जब देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ हुआ तो उसमें सारे देश की सहभागिता रही। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत गांधी जी ने कुछ प्रमुख कार्यक्रम निर्धारित किये थे, जो इस प्रकार थे—

१. लोग गाँव—गाँव में नमक के कानून को तोड़े तथा नमक बनायें।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी हरनाथ सिंह, राठ यादव से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

२. महिलायें शराब, अफीम तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दें।

३. विद्यार्थी सरकारी स्कूल एवं कालेज छोड़ दें।

४. राजकीय कर्मचारी दफ्तरों को त्याग दें।

५. विदेशी वस्त्रों की होली जलायी जाये।

६. लोग सरकार को कर न दें।

७. जनता को चाहिए कि तकली और चरखा कातें और सूत एकत्र करें।[१]

गांधी के इस आह्वान तथा आन्दोलन आयोजन को सारे देश ने अनुमन्य किया, हर प्रदेश की जनपदीय कांग्रेस कमेटी ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत कार्यक्रम को निर्धारित कर दिया, जिसके तहत ही पुरुषों तथा महिलाओं को सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेना था।

१. विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देना।

२. अमन सभाओं को भंग करना।

३. शराब तथा अफीम की दुकानों पर धरना देना।

४. राष्ट्रीय तिरंगा झण्डे का जुलूस निकालना।

५. नमक बनाना

६. कांग्रेस के सदस्य बनाना।

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ० सं० ६१—६२।

७. सभाओं में भाषण देना।[१]

गांधी जी द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अनुसार हम्मीर धरती की वीरांगनाओं ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। हमीरपुर जनपद की महिलायें जब स्वातन्त्र्य समर हित निकलती थीं तो वे अधोलिखित गीत गाकर अपने अन्तस की अवधारणा का खुलासा करती थीं।

जो कुछ पड़ेगी मुझ पै मुसीबत उठाऊँगी।
खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी।।
बानों में अपने खद्दर के कपड़े बनाऊँगी।
और इन विदेशी लत्तों में माचिस लगाऊँगी।।
चरखा चलाके छीनूंगी उनकी मशीन गन।
उद्‌ए मुल्को कौम को नीचा दिखाऊँगी।।
मैं अपनी मुल्की बहिनों को ले लेकर अपने साथ।
शराब की दुकान पर धरना बिठाऊँगी।।
जाकर किसी जेल में बटूँगी रामबास।
अपनी सहेली के साथ चक्की चलाऊँगी।।[२]

इस तरह इस गीत को गाकर महिलायें स्वेच्छा से आन्दोलनात्मक कार्यवाहियों में

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—९९

२. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

भाग लेती थीं।

नमक सत्याग्रह और महिलायें

गांधी जी ने जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का जनाह्वान किया, उसके पूर्व उन्होंने वायसराय को एक पत्र लिखकर अपना एक ग्यारह सूत्री माँग पत्र उनके समक्ष रखा था, जो पूरी तरह उचित एवं समीचीन था किन्तु वायसराय उनके पत्र का जब कोई जवाब नहीं दिया तो उन्होंने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा था कि ''मैने मांगी थी रोटी मिला पत्थर''। गांधी जी ने तब अपने चुने हुये ७८ शिष्यों के साथ दाण्डी यात्रा तय कर समुद्र तट पर ०६ अप्रैल १९३० को थोड़ा सा नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया था, वह नमक निर्माण एक संकेत था, वह मुट्ठी भर नमक क्या था? आग की एक चिंगारी थी, जिसकी लपटें सारे देश में व्याप्त हो गयीं। सारे देश के लोगों ने नमक बनाकर नमक कानून का खुला उल्लंघन किया, जिन स्थानों पर नमकीन पानी या मिट्टी के कारण नमक बनाना संभव नहीं था, वहाँ पर लोगों ने अन्य कानूनों को भंग कर सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया।[१]

गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत देश के हर प्रान्त के प्रत्येक जनपद में सत्याग्रह आन्दोलन की एक रूप रेखा तय कर उसी के अनुसार आन्दोलन को शुरू किया गया। इसी क्रम में हमीरपुर जिला कांग्रेस कमेटी ने दीवान शत्रुघ्न सिंह

---

१. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००, पृ० सं० ६२।

को सत्याग्रह आन्दोलन का दायित्व सौंप दिया।

नमक सत्याग्रह का केन्द्र : राठ

नमक सत्याग्रह आन्दोलन के लिए राठ को इसलिए चुना गया क्योंकि राठ में नमक बनाने की पर्याप्त सुविधा थी। वहाँ की मिट्टी में नमक और सोरा बहुत था, साथ ही राठ में बहुत पहले से नमक बनता रहता था। दीवान साहब ने हर तहसील से जत्थेवार नमक बनाने के लिए कार्यकर्ताओं को राठ भेजना शुरू किया।[१]

हमीरपुर जनपद की वीर वनिताओं के नमक सत्याग्रह में सहभागी होने से पूर्व यहाँ पर हमीरपुर के इस आन्दोलन के स्वरूप को समझने के लिये पुरुष सत्याग्रहियों के अनुदाय पर भी एक दृष्टि डालना प्रासंगिक होगा—

पं. बैजनाथ तिवारी और नमक सत्याग्रह

पं. बैजनाथ तिवारी वीरभूमि महोबा के एक प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर थे। उनके नेतृत्व में पचास स्वयं सेवकों का एक जत्था पदयात्रा के साथ महोबा से राठ रवाना हुआ। इस जत्थे का महोबा से राठ के बीच पड़ने वालों गाँवों में जोरदार स्वागत एवं हौसला आफजाई भी हुई। मार्ग में ग्रामवासी इन सत्याग्रहियों का हार्दिक स्वागत करते थे। उन्हें

१. दीवान साहब के पुत्र कर्नल प्रेम प्रताप सिंह, करगवां से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ।

भोजनादि उपलब्ध कराते थे। पं. बैजनाथ तिवारी के जत्थे का पचपहरा, लाड़पुर, कुलपहाड़, सुगिरा, महुआ, पनवाड़ी तथा सैदपुर नामक गाँवों में भाव भीना स्वागत हुआ। राठ में जनपद की सभी दिशाओं से स्वयं सेवकों के जत्थे राष्ट्रीय झण्डा लेकर गीत गाते हुये आने लगे।[१] स्वयं सेवकों का प्रिय झण्डा गीत इस प्रकार था—

कौमी तिरंगे झण्डे ऊँचे रहो जहाँ में,
हाँ तेरी सर बुलन्दी ज्यों चाँद आसमाँ में।
तू मान है हमारा, तू शान है हमारी,
तू जीत का निशां हो, तू जान है हमारी।
हर एक बसर की लब पै जारी है ये दुवायें,
कौमी तिरंगा झण्डा हम शौक से उड़ायें।
आकाश औ जमीं पर हो तेरा बोलबाला,
झुक जाय तेरे आगे हर ताज तख्त वाला।
हर कौम की नजर में तू हो निशां अमन का,
हो ऐसे मुअस्सर सारा तेरा जहाँ हो।
मुश्ताक वे नवाब खुश हो के गा रहा है,
सिर पर तिरंगा झण्डा जलवा दिखा रहा है।।

जनपद के हर क्षेत्र से स्वयं सेवकों के जत्थे राठ आने लगे। राठ में अच्छी खासी

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपतिसहाय रावत, जराखर के पुत्र डा० श्रीकान्त से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

भीड़ एकत्रित हो गयी, जिसे राठ की कांग्रेस ने एक बड़े मकान के शिविर में ठहराया, राठ में हजारों की संख्या में स्वयं सेवक इकट्ठे हो गये थे, उनके भोजनादि के प्रबन्धन में राठ तथा आस—पास के गाँवों से लोगों ने रसद सामग्री पहुँचाकर महती योगदान प्रदान किया। पूरा हमीरपुर जनपद सविनय अवज्ञा आन्दोलनमय हो गया। समग्र जनपद में राजनीतिक उबाल आ गया। आँग्ल सुरक्षा कर्मी गाँवों में घूमने लगे।[१]

उस समय स्वयं सेवकों के जत्थे के जत्थे हाथ में राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे लेकर चारों तरफ घूमने लगे, इस पर पुलिस कर्मी इन स्वयं सेवियों को जहाँ कहीं भी देख लेते, उस समय दरोगा के निर्देश पर वे स्वयं सेवकों के हाथ से झण्डा छीन लेते थे और उनकी भीषण पिटाई करते थे, जिससे कार्यकर्ताओं के शरीर से रक्त की धारायें बहने लगतीं और वे बेहोश तक हो जाते थें। पुलिस उन्हें पकड़कर जेल में बंद कर देती थीं। उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें सजायें दिलवाते थे। सरकार का यह कदम आन्दोलनाग्नि में घी का काम करता था, जनोत्साह में कोई कमी नहीं आती थीं।[२]

सरकार के इस दमन के विरोध में युवा कार्यकर्ताओं के नये जत्थे बनते और आन्दोलनार्थ निकल पड़ते, वे राष्ट्र गीतों को गाते हुये घूम—घूमकर आन्दोलन का नया परिवेश बनाते थे। इस तरह सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अग्रसारण में जनपदीय भूमिका उत्तरोत्तर बढ़ती जाती ।

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।
२. वही।

हमीरपुर जेल में सत्याग्रह

१९३० का सविनय अवज्ञा आन्दोलन देशव्यापी बन चुका था। इसका राष्ट्रीय प्रभाव इतना विशद् था कि देश का कोई भी कस्बा और नगर नहीं बचा था, जहाँ पर नमक कानून तोड़ने का उपक्रम न किया गया हो। हमीरपुर जनपद के प्रत्येक नगर में नमक सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया था। हमीरपुर जेल सत्याग्रहियों से भर गयी थीं। हमीरपुर जेल के अधिकारी सत्याग्रहियों की भीड़ तथा स्वरूप को देखकर बैरकों को दो भागों में बांट दिया था। उन्होंने एक बैरक में जिले के दीवान साहब, भगवानदास बालेन्दु, स्वामी ब्रह्मानन्द, श्रीपति सहाय रावत, देवकी नंदन सुल्लेरे, पं. रामदुलारे, पं. राम सनेही, सेठ चिरंजीलाल तथा बालगोविंद एवं पं. कपिलदेव पाण्डेय जैसे प्रमुख नेताओं को रखा था तथा दूसरी बैरक में अन्य सैकड़ों स्वयं सेवियों को रखा गया था।[१]

यातनायें और सत्याग्रही

जिस समय सत्याग्रहियों को पकड़कर हमीरपुर की जेल में बंद किया गया, उस

---

१. सर्वोदय नेता राम गोपाल दीक्षित, मुस्करा से लिये गये साक्षात्कार आधार पर।

समय भयंकर गर्मी पड़ रही थीं, जून का महीना था। जेल के कर्मचारी सत्याग्रहियों को भीषण गर्मी में भी बैरकों के अन्दर ही शयन हेतु विवश करते थे, बैरकों में बाहर से ताला डाल दिया जाता था, शौचादि का प्रबंध बैरकों के ही अन्दर कर दिया जाता था,[१]

सत्याग्रहियों के शयनादि के लिये मूंज का जो फट्टा तथा कम्बल दिया जाता था, वे बहुत ही घटिया किस्म के होते थे, भोजनादि के लिये लोहे का एक तसला तथा लोहे की एक कटोरी दी जाती थी। इन सत्याग्रहियों के लिये जून में बैरकों के अन्दर सोना दुष्कर हो रहा था। बैरक पूरी तरह से सील बंद जैसे होते थे, हवा का कहीं से भी निकास नहीं था।

कुलपहाड़ के भगवानदास बालेन्दु जी ने सत्याग्रहियों के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि बैरक के अन्दर सोने में बहुत गर्मी लगेगी, इस कारण आज रात से बैरक के बाहर लेटा जाये। स्वामी ब्रह्मानन्द ने बालेन्दु जी के प्रस्ताव का समर्थन किया। जेल बन्द होने से पहले सत्याग्रही नेता अपने सोने वाले कपड़ों के साथ बैरक से बाहर बिस्तर

बिछाकर उस पर लेट गये, जेल के बन्द होने का जब समय आया तो वार्डर बैरक बन्द करने आये, साथ में नायब जेलर और हेडवार्डर भी था। उन्होंने देखा कि सभी सत्याग्रही नेता बैरक से बाहर लेटे हैं। नायब जेलर ने दीवान साहब से कहा कि

---

१. सर्वोदय नेता राम गोपाल दीक्षित, मुस्करा से लिये गये साक्षात्कार आधार पर।

दीवान साहब अन्दर चलकर लेटिये। हम लोगों को बैरक बन्द करना है। दीवान साहब ने नायब जेलर से कहा कि आप इस सम्बन्ध में बालेन्दु जी और स्वामी ब्रह्मानन्द से बात कर लीजिये। नायब जेलर ने बालेन्दु जी तथा स्वामी ब्रह्मानन्द जी से भी कहा कि आप सब लोग अन्दर चल कर लेटिये हमको जेल बन्द करना है। इस पर बालेन्दु जी ने कहा कि हम बैरक के अन्दर नही जायेंगे क्योंकि वहाँ पर गर्मी बहुत लगती है। आज से हम सब बाहर मैदान में ही सोयेंगे।[१]

नायब जेलरे बालेन्दु जी के दृढ़ उत्तर को सुनकर वह बड़े जेलर के पास गया। बड़े जेलर भी सत्याग्रही नेताओं के पास आये और कहा कि आप लोग जेल के अन्दर चलिये। जेल नियमावली में रात को बाहर सोने का नियम नहीं है। आप लोगों को बैरक के अन्दर सोना पड़ेगा। बालेन्दु जी तथा स्वामी बह्मानन्द जी ने बड़े जेलर से कहा कि तुम्हारी जेल नियमावली में नियम हो या नहीं। हम लोग तो रात में बैरक के बाहर मैदान में ही सोयेंगे। बैरक के भीतर बहुत गर्मी लगती है, नींद नहीं आती है। हम लोग चोर—डाकू नहीं है। इस कारण हम लोग जेल से भागेंगे नहीं। हम लोग स्वेच्छा से जेल में आये हैं।

बड़े जेलर ने सत्याग्रही नेताओं से कहा कि मै कानून से बंधा हूँ। मै उससे परे कुछ भी नहीं कर सकता। मुझे आप लोगों के इस आचरण के विरुद्ध कानूनगत

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—७६

कार्यवाही करनी पड़ेगी। पूरी जेल बन्द हो चुकी थी, केवल सत्याग्रही नेताओं की बैरक खुली पड़ी थी। नेता लोग बाहर सोने का सत्याग्रह किये हुये थे, रात्रि के आठ बज रहे थे। बड़े जेलर के लाख समझाने—बुझाने पर भी सत्याग्रही नेता बैरक के भीतर सोने को तैयार नहीं हुये। जेलर ने मजबूर होकर जेल के फाटक पर खतरे की घंटी बजवा दी, एक घण्टे तक घण्टी बजती रही। खतरे की घंटी सुनकर जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक के साथ जेल के फाटक पर पहुँच गये, हमीरपुर जेल को पुलिस ने चारो तरफ से घेर लिया।[१]

कलेक्टर ने दीवान शत्रुघन सिंह से कहा कि दीवान साहब ऐसा तो गांधी जी भी नहीं कहते थे कि जेल का कानून तोड़ा जाये, आप लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं? दीवान साहब ने जिलाधीश से कहा कि मै विवश हूँ । आप इस विषय पर बालेन्दु जी तथा स्वामी ब्रह्मानन्द जी से बात करिये। बालेन्दु जी ने कलेक्टर से कहा कि हम लोग निश्चय कर चुके है कि बाहर ही सोयेंगे। बैरक के भीतर बहुत गर्मी है। आप हमें बाहर सोने दीजिए। इस पर जिलाधीश ने सत्याग्रही नेताओं से कहा कि जेल नियमावली में ऐसा कहीं पर भी उल्लेख नहीं है कि कैदियों को बाहर सोने दिया जाये। आप लोग बैरक के भीतर जाकर सोइये।

जिलाधीश के इतना कहने पर स्वामी ब्रह्मानन्द ने कहा कि हम लोग बैरक के

---

१. प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी रामानुज सिंह चंदेल, हमीरपुर से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

भीतर नहीं सायेंगे। बैरक के बाहर खुली हवा में ही हम लोग सायेंगे। भीतर बहुत गर्मी लगती है। सभी सत्याग्रही नेता अपने—अपने बिस्तरों पर बैरक के बाहर लेटे हुये थे। कलेक्टर ने आदेश दिया कि इन सबको चार—चार सिपाही उठाकर बैरक के अन्दर ले जायें और बैरक बंद कर दें। कलेक्टर के आदेश के अनुपालन में चार—चार सुरक्षा कर्मी एक—एक सत्याग्रही नेता को उठाकर बैरक के भीतर ले गये और बैरक को बंदकर उसमें ताला डाल दिया। स्वामी ब्रह्मानन्द बैरक के अन्दर पहुँचकर बच्चों की तरह नाचते—कूदते हुये कहने लगे हमारा सत्याग्रह सफल हो गया। हम सत्याग्रही अपने आप बैरक के अन्दर तो गये नहीं, हमें तो पुलिस उठाकर बैरक के भीतर ले गयी है।[१]

जेल के भीतर सत्याग्रह करने के बाद जिलाधीश सहित अन्य अधिकारियों को यह डर लगने लगा कि अगर इन सत्याग्रहियों की धारणा को अन्य सत्याग्रही अपनाने लगे तो बैरकों के बाहर सोने की बीमारी अन्य कैदियों को भी लग जायेगी। फलत: सभी सत्याग्रही नेताओं को विभिन्न जेलों में स्थानान्तरित कर दिया गया।

उस समय जेल की नाटकीय यातना केवल पुरुष स्वयं सेवी या सत्याग्रही नहीं झेलता था अपितु हमीरपुर की महिला सेनानियों को भी जेल—मुसीबतों से गुजर कर

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

जाना पड़ता था। तत्कालीन लगभग पचास से अधिक महिला सेनानी जेल गयी थीं और उन्हें भी जेल में अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते थे। उस समय ''बुन्देलखण्ड केसरी'' नामक समाचार पत्र में छपा यह बुन्देलखण्डियों के लिये काव्याह्वान बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रभावी रहता था—

सुनो बुन्देलखण्ड के ज्वान, मिटा दो अन्यायी की शान,

घोर क्रांति संग्राम मचा दो, देश धर्म पर शीश कटा दो।

भारत को आजाद बनाओ, विनाश की ज्वाला धधकाओ,

क्रांति की लेकर नग्न कृपाण, मिटा दो अन्यायी की शान।

ये ही है वीरो का बाना, हंसते ही हंसते मिट जाना।

पीछे पैर कभी न हटाना, प्रण हो ऐसा दिल में ठाना।

यही है मोहन का फरमान, मिटा दो अन्यायी की शान।

हैं होते जो जो अत्याचार, किया है उन पर कभी विचार।

मौदहा और राठ की मार, हो गये है यह जालिम जार।

युवतियों का ये करते अपमान, मिटा दो अन्यायी की शान।।[१]

इस तरह अग्नि धर्मा आचरण का प्रतीक 'बुन्देलखण्ड केसरी' अंग्रेजों के

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

खिलाफ आग उगलता था। वह समाचार पत्र आँग्ल आँखों का किरकिरी था। तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी एवं कर्मचारी 'बुन्देलखण्ड केसरी' समाचार पत्र को फूटी आँखों नहीं देखना चाहते थे किन्तु उनके न चाहने पर भी हर दिन 'बुन्देलखण्ड केसरी' प्रतिदिन कार्यालय में पहुँचकर उनकी छाती में दलिया दलता था। आँग्ल अत्याचार का खुलासा करने वाला वह समाचार पत्र सारे बुन्देल क्षेत्र में बहुत ही लोक प्रिय था। सारे लोग उसे प्रतिदिन पढ़ते थे। उस समाचार पत्र की बुन्देलखण्ड में सर्वाधिक माँग थी।

जब सत्याग्रह आन्दोलन में महिला प्राचुर्य रहा

हमीरपुर जनपद राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य के हर चरण में हम कदम रहा। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में यहाँ के वीरों की भूमिका सराहनीय रही। आजादी के संघर्ष में यहाँ के केवल पुरुष सेनानी ही नहीं अपितु महिला योद्धाओं की भी पहल कम प्रभावी नहीं रहीं। १९३२ के सत्याग्रह आन्दोलन में हमीरपुर जनपद के पाँचों तहसीलों के गाँवों तथा नगरों की ५१ महिलायें अपने पतियों तथा भाईयों के साथ स्वातन्त्र्य समर में कूद पड़ी और क्रूर आँग्ल अत्याचारों के जुल्म को सहन कर संघर्षी सहभागिता की एक नई मिसाल कायम की। दमन की दीवार भी उनके स्वातन्त्र्य संघर्ष के कदमों को रोक नहीं

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

सका, वे आन्दोलन में सदैव अगुवा रहीं।

सत्याग्रह आन्दोलन में महिलायें जब निकलती थीं तो उनके हाथों में तिरंगा झण्डा रहता था और मुँह में भारत माँ का जयघोष, जिसे सुनकर आँग्ल पुलिस महिलाओं के उत्पीड़न का नया इतिहास रचते थे किन्तु महिलायें निरन्तर उनसे रस्सा कसी करती हुई मैदाने जंग जमीं रहती थी। वे उस समय समर शेरनी प्रतीत होती थी। पुलिस कर्मी जब महिलाओं के हाथों से तिरंगा झण्डा छीनने में असफल हो जाते थे तो वे हिंसा पर उतारू हो जाते थे। वे अहिंसक महिला सेनानियों को पीड़ा पहुँचाने के हर उपक्रम को अपनाते थे। पुलिस कर्मी महिला पर लाठी बरसाते थे। जनपद की वीर वनितायें जब घायल हो जाती थीं, तभी वे उन्हें गिरफ्तार करने में सफल हो पाते थे और जेल ले जाकर बंद कर दिया जाता था, किन्तु साहसी महिलायें तब भी हिम्मत नहीं हारतीं थीं।[१]

यदि प्रान्त के जनपदों के महिलाओं की संघर्षी सहभागिता का परितुलन किया जाय तो इसमें कोई दोराय नहीं कि जितनी हम्मीरी महिलायें स्वातन्त्र्य आन्दोलन में कूदी शायद उतनी अन्य जनपद की स्त्रियाँ कम ही स्वाधीनता समर में उतरी होंगीं। इस जनपद की अनेक महिलाओं ने वर्षों जेल जीवन जीया है। जेल में उन्होंने नाना

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

प्रकार की यातनाओं को झेला। वे महिलायें जो प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर रहीं, वे इस प्रकार थीं—

१. रानी राजेन्द्र कुमारी
२. शांति देवी
३. राजाबेटी बहन श्री भाई
४. सुन्दरी देवी
५. गिरजा देवी
६. राजाबेटी पत्नी छोटेलाल
७. किशोरी देवी
८. सावित्री देवी
९. सुविद्या देवी
१०. भारत देवी
११. उर्मिला देवी
१२. जमुना देवी
१३. रामप्यारी देवी
१४. राम देवी
१५. कान्ती देवी[१]

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

१६. भगवती देवी

१७. गुलाब देवी

१८. जानकी देवी

१९. राजाबाई

२०. सरला देवी

२१. पार्वती देवी

२२. रूकमणी देवी

२३. भुवनेश्वरी देवी

२४. मनोरमा देवी

२५. रानी देवी

२६. गिरजा देवी

२७. कस्तूरीदेवी

२८. शिवरानी देवी

२९. जयन्ती देवी

३०. रमा देवी

३१. सरस्वती देवी

३२. उमा देवी

३३. सरयू देवी[१]

---

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

३४. हरबी देवी

३५. राजाबाई ।[१]

इन महिला सेनानियों के अतिरिक्त हमीरपुर जनपद की अनेक वे महिलायें भी राष्ट्र सेवी रही है, जिन्होंने जेल के बाहर से राष्ट्रधर्मी भूमिका निभायी है। उनके योगदान को कम करके आँकना उनके साथ बेमानी होगी। सत्याग्रह आन्दोलन में हमीरपुर जनपद में प्रचुर रूप से महिलाओं ने सहयोग प्रदान किया, तमाम ऐसी अज्ञात स्त्रियां रही हैं जिन्होंने किसी न किसी रूप में अपना यथा संभव अनुदाय प्रदान किया है, किन्तु उस समय उन्हें कलम बंद न किये जाने के कारण वे मसिमेदिनी में स्थान नहीं पा पायी, इसके बावजूद उनके जुझारूपन को भुलाया नहीं जा सकता। सर्वेक्षण काल में गवेषक के संज्ञान में ऐसे अनेक प्रकरण आये हैं।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने वाली प्रमुख महिलायें

गांधी आन्दोलन को यदि भारतीय प्राप्य (आजादी) का समाहार आन्दोलन कहा

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से लेकर स्वाधीनता प्रगति तक हर चरण में हमीरपुर जनपद की संघर्षी सहभागिता सराहनीय रही, जनपदीय जांबाजी में केवल पुरुष पुरोधाओं का ही प्राचुर्य नहीं रहा। रानी राजेन्द्र कुमारी, भुवनेश्वरी देवी, किशोरी देवी, सरयू देवी, उर्मिला देवी एवं रामप्यारी देवी जैसी वीर महिलाओं के अतिरिक्त यहाँ की अन्य अनेक महिलाओं ने स्वातन्त्र्य समर में शानदार भूमिका निभायी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने वाली कुछ प्रमुख महिला सेनानी इस प्रकार थी—

कस्तूरी देवी

हमीरपुर जनपद के उरई (जालौन) छोर को छूती उस पवई नामक गाँव की धरती में कस्तूरी देवी का जन्म सन १९०५ ई० में हुआ था, जहाँ का परिवेश स्वातन्त्र्य धारणा से परे था, कस्तूरी देवी के पिता घपलू थे। इनकी शिक्षा अधिक नहीं थीं, ये अल्पशिक्षित थीं। हमीरपुर के प्रसिद्ध सेनानी एवं सरीला के शूर बिहारीलाल विश्वकर्मा से इनकी लगभग सन १९२०ई० में शादी हो गयी।[१]

बिहारीलाल विश्वकर्मा एक प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य शूर, साहित्यकार एवं एक अच्छे गीतकार थे। बिहारीलाल विश्वकर्मा एक समर्पित राष्ट्र सेवी सेनानी थे। इनका गांधी

---

१. दरयाब सिंह, बाबू बिहारी लाल विश्वकर्मा का जीवन परिचय, हमीरपुर, १९६७, पृ. सं. ०३।

आन्दोलन, प्रजा आन्दोलन एवं लोक सेवा में महत्वपूर्ण योगदान रहा। रियासती आन्दोलन में इनकी अगुवायी सराहनीय रही। बिहारीलाल विश्वकर्मा पहले सरीला राज्य में रियासती कर्मचारी थे। कस्तूरी देवी ने बिहारी लाल विश्वकर्मा की राष्ट्रधर्मी अवधारणा को अग्रोन्मुख करने में सदैव अग्रणी भूमिका निभायी।

पति से प्रेरणा

बिहारी लाल विश्वकर्मा एक उच्चकोटि के देश धर्मी सेनानी थे। कस्तूरी देवी अधिक पढ़ी लिखी नही थीं। वे जब ससुराल आयीं तो उन्हें पति के घर में एक अलग प्रकार का परिवेश मिला। बिहारीलाल ने उनके अन्तस में सुप्त पड़ी राष्ट्रानुराग की अवधारणा को जाग्रत किया।

बिहारीलाल विश्वकर्मा सामन्ती विचारधारा के प्रबल विरोधी थे, वे रियासती कर्मचारी होने के बावजूद उसकी नीतियों के पक्षधर नहीं थे। विश्वकर्मा ने सरीला स्टेट की नीतियों से सहमत न होने के कारण रियासती सेवा से त्याग पत्र दे दिया।[१] और देश भक्ति की भावना को आत्मसात् कर आन्दोलन में कूद पड़े। गांधी आन्दोलन के दूसरे चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन से जब हमीरपुर जनपद पूरी तरह से आन्दोलित था, भला ऐसे में एक राष्ट्रपरायण पुरुष कैसे शान्त रहता ? विश्वकर्मा

---

१. दरयाब सिंह, बाबू बिहारी लाल विश्वकर्मा का जीवन परिचय, हमीरपुर, १९६७, पृ. सं. ०५।

जी भी जनपद के सत्याग्रह आन्दोलन में उतर पड़े।

सरीला एक रियासत थी, जहाँ पर स्वातन्त्र्य समर का शुभारम्भ सुगम नहीं था किन्तु बिहारीलाल रियासती दमन से डरे नहीं, १९३२ में बिहारी लाल विश्वकर्मा को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तहत गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें धारा १७ (१) तथा धारा १८८ के अन्तर्गत छः माह की सजा देकर हमीरपुर जेल भेज दिया गया। वे जब सजा काटकर सरीला आये तो उन्होंने अपनी पत्नी को पुरोधत्व प्रेरणा प्रदान की।

हमीरपुर जनपद से उस समय एक समाचार पत्र सत्याग्रही निकलता था। इस साप्ताहिक पत्र के प्रकाशन में बिहारीलाल विश्वकर्मा का पूरा सहयोग रहता था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत विश्वकर्मा सत्याग्रहियों को सत्याग्रह का प्रशिक्षण देते थे। बिहारीलाल विश्वकर्मा के पीछे पुलिस पड़ी हुयी थी। जनपदीय नेताओं की परामर्श पर उस समय प्रमुख सेनानियों के छद्म नाम रखे गये। विश्वकर्मा

thdkxr uke lz flg FkkA blhuke lsfcgkjhyky fo'odekZt s Hkh x;A [1]

कस्तूरी देवी की चार साल के पुत्र के साथ जेल यात्रा

बिहारीलाल विश्वकर्मा की पहल तथा प्रभावी निर्देशन में सरीला में समय—समय

---

१. महिला सेनानी कस्तूरी देवी के पुत्र धर्मवीर विश्वकर्मा से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

पर जुलूस तथा सभाओं का आयोजन होता रहता था। कस्तूरी देवी ने झण्डा आन्दोलन के अन्तर्गत स्मरणीय सहयोग प्रदान किया। वे राठ में ध्वज संचलन करते समय पकड़ी गयीं। वे अपने चार साल के धर्मवीर विश्वकर्मा नामक पुत्र के साथ जेल गयीं। कस्तूरी देवी को दिसम्बर १९३२ में धारा १४७ तथा धारा १७ (१) के अन्तर्गत छः छः माह की सजा तथा पच्चीस रुपयों का अर्थ दण्ड दिया गया। कस्तूरी देवी को प्रारम्भ में पन्द्रह दिनों तक हमीरपुर जेल में रखा गया तत्पश्चात उन्हें फतेहगढ़ जेल स्थानान्तरित कर दिया गया। उनके साथ उनका चार वर्षीय पुत्र धर्मवीर भी जेल में रहा।[१]

सरीला का ऐतिहासिक जुलूस, रियासती दमन तथा महिलायें

सरील में उस समय महिपाल सिंह शासक थे, बिहारीलाल विश्वकर्मा ने सरीला रियासत में प्रजा मण्डल की स्थापना की थी, विश्वकर्मा के निर्देशन में मार्च १९३९ में सरीला में एक सभा का आयोजन हुआ, जिसमें बेगार प्रथा पर करारी चोट गयी। रियासत के नरेश ने सरीला में स्थापित प्रजा मण्डल के संगठन को न केवल समाप्त करने की नीति बनायी वरन् राजा ने बिहारीलाल विश्वकर्मा को समाप्त करने की योजना को भी अन्तिम संरजाम दिया।[१]

---

१. महिला सेनानी कस्तूरी देवी के पुत्र धर्मवीर विश्वकर्मा से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

इसके बावजूद बाबू बिहारी लाल विश्वकर्मा ने जुलूस तथा सभाओं के सिलसिले को बन्द नहीं किया। वरन् उन्हीं के नेतृत्व में १४ मई १९३९ को सरीला में एक विशाल जुलूस निकला, जो रियासत के दमन तथा बेगार के विरोध में एक सत्याग्रह था।

इस जुलूस को समाप्त करने को लेकर राजा ने सत्याग्रहियों के ऊपर भीषण लाठी चार्ज कराया, जिसमें छिबौली निवासी सत्याग्रही दल सिंह विश्वकर्मा शहीद हो गये। इस जुलूस में पचास से अधिक महिला सेनानियों ने सहभागिता निभायी। इस आयोजन में कस्तूरी देवी एवं नन्हू देवी सहित अनेक महिलायें शामिल हुयीं। उस अमानुषिक लाठी चार्ज में नन्हू देवी को मर्मान्तक चोटें पहुँची, जिससे वे मरणासन अवस्था में पहुँच गयीं।[२]

रियासती दमन के बावजूद सरीला में जुलूसों का क्रम थमा नहीं, रियासती रोक होने के बाद भी बाहर से सरीला में जत्थे आते रहे और जुलूसों तथा सभाओं का सिलसिला शुरू रहा रियासती उत्पीड़न भी जारी रहा, लाठी चार्ज भी चलता रहा, रियासत और राष्ट्रराहियों के मध्य के इस संघर्ष में खेड़ा के मातादीन नामक सत्याग्रही बुरी तरह घायल हुए।

---

१. महिला सनानी कस्तूरी देवी के पुत्र धर्मवीर विश्वकर्मा से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२. वही।

इस तरह से आजादी के पूर्व जहाँ बाबू बिहारीलाल विश्वकर्मा का भारत के मुक्ति संग्राम में अनवरत अनुदाय रहा, वहीं इनकी सच्ची सहधर्मिणी कस्तूरी देवी का आजादी के संघर्ष में कम योगदान नहीं रहा। कस्तूरी देवी को जनपद की प्रमुख क्रांति नेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ—साथ बीरा, गोहाण्ड, खेड़ा, अमूद, बंडवा, छिबौली तथा पवई जैसे जुझारू गाँवों की अनेक वीर महिलाओं का सानिध्य प्राप्त रहा। कस्तूरी देवी यावत् जीवन राष्ट्रसेवी रहीं। उनका पूरा परिवार राष्ट्र परायण रहा। आजादी के बाद स्वातन्त्र्योत्तर भारत में भी कस्तूरी देवी अपनी संघर्षी सहभागिता से सन्तुष्ट रहीं। वे अपने जीवन के साढ़े आठ दशकों में कभी भी राष्ट्रवादी धारणा से विमुख नहीं रहीं। उनके साढ़े छः दर्शकों के दुर्धर्षी योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। अन्ततः इस राष्ट्र धर्मी महिला सेनानी का ०६ फरवरी १९९१ को निधन हो गया।[१]

रमा देवी अवस्थी

हमीरपुर जनपद के दूर दराज के ऐसे अनेक गाँव हैं, जहाँ की सोंधी माटी में सांस्कृतिक इतिहास की अनेक अनछुयी पृष्ठ—परतें समाहित हैं। उन्हीं गांवों में कबरई के निकट अवस्थित एक परसाहा गाँव है, जिसकी गौरवशाली यादों में रमा देवी

---

१. महिला सेनानी कस्तूरी देवी के पुत्र धर्मवीर विश्वकर्मा सरीला से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

अवस्थी नामक एक वीरांगना आज भी रमी है। इसी गांव में १९०२में रमा का जन्म हुआ था। वहाँ के लोगों को क्या पता था कि दुलार—प्यार में पली में वह लाड़ली बेटी एक दिन स्वातन्त्र्य समर की लौह महिला बन जायेगी।

रमा देवी का मौदहा निवासी द्वारिका प्रसाद अवस्थी से विवाह हो गया। द्वारिका प्रसाद स्वयं एक प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी थे। वे अपने समय के एक जीवट व्यक्ति थे। उनका स्वाधीनता आन्दोलन में प्रमुख योगदान रहा। वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अग्रणी सत्याग्रही रहे। १९३२ में उन्हें धारा १७(ए) के अन्तर्गत सत्याग्रह करते हुये गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें ०६ माह की सजा दी गयी, ये स्वभाव से क्रांतिकारी एवं अंग्रेज विरोधी थे। ये मौदहा से प्रतिदिन मसगाँव जाते थे और वहाँ पर कामता प्रसाद विश्वकर्मा से आवश्यक डाक लेकर रोजाना कानपुर पैदल जाते थे और शाम को वापस घर आते थे। यह कार्य इनकी दिन चर्चा में शामिल था।[१]

द्वारिका प्रसाद एक निडर सेनानी थे, जिसका प्रभाव इनकी पत्नी पर पड़ना स्वाभाविक था। द्वारिका प्रसाद जेल से छूटने पर पुनः जेल यात्रा पर गये । आँग्ल सरकार इनकी कट्टर शत्रु थी। ये अपनी पत्नी तथा दो पुत्रों के साथ भी जेल गये।

द्वारिका प्रसाद का जेल जीवन बहुत ही कठोर एवं दुर्गम रहा। इनके साथ एक

---

१. रमा देवी अवस्थी के नत दामाद उमाशंकर त्रिपाठी एडवोकेट, मौदहा (हमीरपुर) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

ओर जहाँ जेल में अमानवीय व्यवहार हुआ, वहीं सरकार ने इनके मकान को भी जब्त कर लिया। इनका जेल जीवन निरन्तर अव्यवस्थित होने के कारण दुष्कर होता गया। द्वारिका प्रसाद जेल में ही क्षय रोग के शिकार हो गये। इन्हें जेल में सूखा नमक खाने में दिया जाता था, जिसके कारण ये तपेदिक के शिकार हो गये। अर्थाभाव के कारण इनको चिकित्सीय सुविधा न मिल सकी, जिसके कारण इनकी कम उम्र में ही फतेहगढ़ जेल में मृत्यु हो गयी।

द्वारिका प्रसाद ब्रिटिश काल में पहले न्यायाधीश के पद पर कार्यरत थे किन्तु उस अन्याय परक शासन में अपनी आत्मा की आवाज को आत्मसात कर मजिस्ट्रेट के पद से इस्तीफा देकर आँग्ल अन्यायी शासन के विरोध में आ गये थे। द्वारिका प्रसाद की पत्नी रमा देवी अवस्थी, पुत्री सभ्यता अवस्थी ने जेल में सहयात्री बन कर स्वातन्त्र्य संघर्ष में इनका पूरा साथ दिया था।[१]

रमादेवी अवस्थी अवस्थी एक वीर महिला थी। इनको अपने पति से ही देश भक्ति की प्रेरणा मिली थी। रमा देवी ने सभी गांधी आन्दोलनों में बढ़ चढ़कर भाग लिया, रमा देवी एक प्रमुख क्रांतिकारिणी महिला थी। मौदहा के पश्चिमी तरौस के चंदा कुआँ के सामने इनका आवास था, जहाँ आग्नेयास्त्रों का कारखाना था, उसी

---

१. रमा देवी अवस्थी के नत दामाद उमाशंकर त्रिपाठी एडवोकेट, मौदहा (हमीरपुर) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

कारखाना के साथ लगभग सौ मीटर की इनके मकान में एक सुरंग भी थी। इसी मकान में इनके पास दीवान शत्रुघ्न सिंह , स्वामी बह्मानंद, मन्नीलाल गुरूदेव तथा रानी राजेन्द्र कुमारी आती थीं।

रामगोपाल गुप्त उर्फ गोपाल भाई द्वारिका प्रसाद मिश्र के शिष्य थे। गोपाल भाई भी एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी सेनानी थे। रमा देवी अवस्थी के पुत्र तथा पुत्री भी स्वातन्त्र्य सेनानी थे। इनके बड़े पुत्र काशी प्रसाद अवस्थी भी स्वातन्त्र्य क्षेत्र में अपने माँ—बाप के पदगामी रहे। काशी प्रसाद अवस्थी आजन्म अविवाहित रहे। इनके खून में राष्ट्रवाद की भावना व्याप्त थी। इन्हें स्थानीय पुलिस के कोप का कई बार शिकार होना पड़ा। काशी प्रसाद ने सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत कई बार जेल यात्रा की। काशीप्रसाद अवस्थी ने जेल यात्रा के दौरान जेल के अन्दर कई बार जेलरों तथा अंग्रेज अधिकारियों को पीटा, जिसके कारण इनको हमेशा आंग्ल पुलिस के कोप का शिकार होना पड़ा। ये १६ अगस्त १९४२ से ७ जनवरी १९४५ तक नजर बंद रहे। १९४५ में जेल से छूटने के बाद इन्हें व्यावहारिक जीवन में जूझना पड़ा। इस वीर सेनानी का १९५८ में निधन हो गया।[१]

---

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १३६।

सभ्यता अवस्थी

रमा देवी का पूरा परिवार राष्ट्रवादी था। इनके पति,पुत्र तथा पुत्री ने देश के लिये सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यह अवस्थी परिवार जब जेल में था तो ब्रिटिश सरकार ने इनकी सारी सम्पत्ति को जब्त कर लिया था, जेल से छूटने के बाद इन्हें किसी ने अपने घर में शरण नहीं दी थी, इनके सभी परिचित सम्बंधी पुलिस के आतंक से बहुत भयभीत थे। रमादेवी का पूरा परिवार महीनों खुले आसमान के नीचे रहा।

सभ्यता अवस्थी रमा देवी की इकलौती पुत्री थी किन्तु इनके रग—रग में राष्ट्रवाद रमा था। रामगोपाल गुप्त एवं उनके साथी क्रांतिकारी मौदहा के पास सरकार विरोधी अभियान के अन्तर्गत रेल की पटरियां उखाड रहे थे, इस दल के साथ सभ्यता अवस्थी भी थी। किसी भेदिये ने पुलिस को सूचना दे दी, जिस पर वहाँ पुलिस पहुँच गयी। इस पर वह क्रांतिकारी दल वहाँ से भाग गया। पुलिस ने जब सभ्यता अवस्थी को पकड़ना चाहा तो उसने पुलिस से टक्कर ली। उसने पुलिस पर तब तक फायर किया जब तक कि उसके पास अन्तिम कारतूस समाप्त नहीं हो गया।[१]

सभ्यता पुलिस के पकड़ में नहीं आना चाहती थी, इसलिए सभ्यता अवस्थी पास में ही बह रहे श्याम नाले में कूद गयीं। उस समय सभ्यता अवस्थी आठ माह का गर्भ

---

१. रमा देवी अवस्थी के नत दामाद उमाशंकर त्रिपाठी एडवोकेट, मौदहा (हमीरपुर) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

भी धारण किये हुए थीं। सभ्यता अवस्थी की नाले में कूदने के बाद वहीं पर उसकी मृत्यु हो गयी। इस तरह सभ्यता भी स्वातन्त्र्य वेदी में अपने अनुदाय की एक समिधा समर्पित कर अमर होता हो गयी। [१]

सुविद्या देवी

बुन्देलखण्ड (उ.प्र.)के जनपदों में झांसी एक ऐसा जनपद है, जिसे अग्निधर्मा संस्कृति का साक्षी माना जा सकता है, इसने आजादी की संघर्ष—वेदी में अपने यहाँ की अनगिनत आहुतियाँ दी हैं। इसके हर गाँव में स्वातन्त्र्य शूरमाओं के गौरव का एक अलग इतिहास समाहित है। झांसी के पास ककरबई गाँव ने भी रण राँगण में एक ऐसी लाड़ली को भेजा, जिसने अल्पकाल में स्वातन्त्र्य आयुधी की धारणा को नयी दिशा दी। ककरबई के अयोध्या प्रसाद खरे के घर १९०८ में सुविद्या देवी का जन्म हुआ था। इनकी १४ वर्ष की उम्र में चुरवा निवासी सुदर्शन भाई से शादी हो गयी थी। इन्हें ससुराल में ही शौहर से शौर्य की शिक्षा मिली।

सुदर्शन भाई बालकाल से ही निडर एवं साहसी थे। इन्होंने कुलपहाड़, मेरठ, दिल्ली तथा बनारस के गांधी आश्रमों में शानदार सहयोग प्रदान किया। सुदर्शन भाई की बुन्देलखण्ड के प्रमुख पत्र ''बुन्देलखण्ड केशरी'' के संचालन में केन्द्रीय भूमिका

---

१. रमा देवी अवस्थी के नत दामाद उमाशंकर त्रिपाठी एडवोकेट, मौदहा (हमीरपुर) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

रही। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी सुदर्शन भाई की सहभागिता उल्लेखनीय रही। ये १४ मार्च १९३३ को करगवाँ के एक मंदिर में गिरफ्तार कर लिये गये। इनका भारत छोड़ो आन्दोलन में भी अच्छा सहयोग रहा।

सुविद्या देवी को अपने पति से ही स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागी होने का प्रोत्साहन मिला। अंग्रेज सरकार ने सुविद्या देवी को झण्डा सत्याग्रह के अन्तर्गत १९३२ में गिरफ्तार किया गया। इन्हें फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७ (१) के अन्तर्गत तीन माह की सजा तथा दस रुपयों का अर्थ दण्ड मिला।[१]

सुविद्या देवी को जब जेल की सजा मिली, उस समय छः माह का सुबोध चंद्र बालक इनकी गोद में था, ये तब भी सहर्ष जेल गयीं। सुविद्या देवी को स्वातन्त्र्य संघर्ष काल में रानी राजेन्द्र कुमारी, कान्तीदेवी, रानी देवी तथा सरजू देवी का सामीप्य व सहयोग मिला। ये अपने पति सुदर्शन भाई की तरह निर्भीक एवं साहसी थीं। इनके जीवन के तीन दशक राष्ट्र के लिये समर्पित रहे। इस वीर महिला की १९४४ में मृत्यू हो गयी।

गायत्री देवी

राठ से लगभग पन्द्रह किमी. की दूरी पर जराखर नामक एक जुझारू गाँव है,

---

१. डा० राजीव त्रिपाठी, एक अज्ञात सैनिक, राठ जूनियर चैम्बर स्मारिका, राठ १९९८।

इसी से कुछ दूरी पर टोला रावत नामक एक और गाँव है, जहाँ की महिला सेनानी गायत्री देवी का भी स्वतत्रंता संग्राम में अच्छा योगदान रहा है। इन्हें जराखर की राजा बेटी, शांति देवी तथा मगरौठ की रानी राजेन्द्र कुमारी तथा अपने पति गेंदाराम लोधी से संघर्षी प्रेरणा मिली और राष्ट्र प्रेमी बन गयी।

इन्हें झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत जनवरी १९३३ में कैद किया गया। गायत्री देवी को धारा १७ (१),(२) सी. एल.ए. १८ (१) प्रेस एक्ट के तहत छ:छ: माह की कड़ी कैद की सजा दी गयी, साथ ही दस—दस रुपयों का जुर्माना भी किया गया, अर्थदण्ड न दे पाने पर इन्होने एक माह की अतिरिक्त सजा भोगी। इस तरह गायत्री देवी का भी स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय सहयोग रहा, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।[१]

निष्कर्ष

गांधी काल का आजादी हेतु अगला संघर्षी चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन था, जो १९३०—३४ तक चला। सारा देश गांधी आन्दोलन से अनुप्राणित हो उठा, ऐसे में भला वीर प्रसूता धरती के रूप में विश्रुत बुन्देलखण्ड उस पुण्यधर्मी आचरण के क्षेत्र में कैसे चुप रहता ? यहाँ के जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा का गांधी आन्दोलनों में

---

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १४२।

सहभागी ग्राफ बहुत ऊँचा रहा, गांधी जी के अहिंसात्मक संग्राम में केवल पुरुष सेनानियों की ही अहम् भूमिका नही रही अपितु महिला सेनानियों की भी स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रभावी पहल रही।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत रानी राजेन्द्र कुमारी ने हमीरपुर एवं महोबा जनपद में नमक सत्याग्रह आन्दोलन को सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया। उनके साथ में पुरुष स्वयं सेवियों के साथ—साथ बड़ी संख्या में महिला सहयोगी भी थीं। राठ तथा आसपास की महिला सत्याग्रहियों ने रानी के साथ कदम से कदम मिलाकर सहयोग प्रदान किया। उस समय रानी साहिबा ब्रिटिश सरकार के शराब घरों तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देती थी। राठ में सत्याग्रह कार्यक्रम उत्कर्ष पर रहा।

रानी राजेन्द्र कुमारी का कुलपहाड़ आन्दोलन में योगदान किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने महिला सेनानियों के साथ उक्त आन्दोलन में जिस निडरता का परिचय दिया, उस समय उनके उस कदम के सभी कायल थे।

बुन्देलखण्ड के कुलपहाड़ में आयोजित पुलिस बहिष्कार आन्दोलन अपने ढंग का एक अनोखा आन्दोलन था, जिसे बुन्देल क्षेत्र के लोग आज भी इस प्रकार गुनगुना उठते है—

बहिष्कार को भऔ है, यही शान्त संग्राम,
ब्रिटिश पुलिस में दर्ज है, कुलपहाड़ कौ नाम।

गांधी जी द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अनुसार हम्मीर धरती की वीरांगनाओं ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़—चढ़कर हिस्सा लिया। यहाँ की महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में अधोगान करती निडरता के साथ निकल पड़ती थीं—

जो कुछ पड़ेगी मुझ पै मुसीबत उठाऊँगी,
खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी।

यदि प्रान्त के जनपदों के महिला संघर्षी— ग्राफ की गवेषण कर अन्य जनपदों से परितुलन किया जाय तो इसमें कोई दोराय नहीं कि हम्मीरी धरती की जितनी वीर महिलायें यहाँ आन्दोलन में कूदीं, शायद ही उतनी अन्य जनपद की महिलाओं ने इतनी संख्या में सिरकत की हो। इस तथ्य की पुष्टि बुन्देल क्षेत्र से प्राप्त अभिलेखों तथा गवेषक को सर्वेक्षण से हुई है।

छठवां अध्याय

भारत छोड़ो आन्दोलन और महिलायें

भारत छोड़ो आन्दोलन और महिलायें

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष–वेदी में वैसे तो हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक के अनेक शूरों ने अपनी–अपनी संघर्षी समिधायें अर्पित कर बलिदानी इतिहास के अमर होता हो गये थे किंतु १८५७, १९१५ तथा १९४२ के सशस्त्र संग्राम में राष्ट्र वीरों ने भारत के मुक्ति यज्ञ में जितनी अधिक आत्माहुतियाँ दी हैं, उतनी अन्य किसी आयुधी अवसर में आत्मोत्सर्ग नहीं हुआ ।१९४२ का स्वातन्त्र्य समर स्वाधीनता प्राप्ति का समाहार संघर्ष था । यह एक लोक युद्ध था, जिसमें आम लोगों की सहभागिता थी ।

१९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में हमीरपुर जनपद की भी पुरोधत्व प्रतिभागिता प्रभावी रही । इसके पहले कि हमीरपुर के सामरिक सहयोग में महिला प्रतिभागिता का यहाँ विवेचन किया जाय, गांधी जी के अगस्त प्रस्ताव तथा हमीरपुर जनपद के पुरुष सेनानियों के अनुदाय का भी यहाँ पर उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।

गांधी जी ने २६ अप्रैल १९४२ को अपने हरिजन पत्र में पहली बार अंग्रेजों भारत छोड़ो के आह्वान को कलम की नोक में उतारा । उन्होंने अंग्रेजों से कहा कि वे भारत छोड़कर चले जायें, इसी में उनका तथा भारत का कल्याण निहित है ।[१]

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५, पृ०सं०—११५

अंग्रेज हठ

अंग्रेजों ने न तो गांधी जी के इस आह्वान पर जरा भी ध्यान दिया, न ही कांग्रेस की कोई बात सुनी । इस पर ८ अगस्त १९४२ को कांग्रेस की महासमिति ने अंग्रेजों! भारत छोड़ो के प्रस्ताव पर अपनी मोहर लगा दी । उस समय गांधी जी ने अपने ऐतिहासिक उद्‌बोधन में कहा कि—पूर्ण गतिरोध, हड़ताल और समस्त अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग करके प्रत्येक सत्याग्रही अहिंसा के दायरे में चरम सीमा तक जाने में स्वतंत्र है । सत्याग्रही मरने के लिये बाहर जायें, जीने के लिये नहीं । राष्ट्र का उद्धार केवल उसी अवस्था में होगा जबकि लोग मृत्यु को ढूँढ़ने तथ उसका सामना करने के लिये बाहर निकलेंगे । हमारा नारा है ''करो या मरो ।'' इस तरह गांधी जी उस दिन डेढ़ घण्टा अनवरत् बोलते रहे ।

कांग्रेस ने सन् बयालीस के स्वातन्त्र्य समर को सफल बनाने के लिये एक जन अपील भी निर्गत की थी । उस पर्चे का शीर्षक था — ''आजादी की लड़ाई को कैसे सफल करें ।''सोलह — सूत्रीय अपील इस प्रकार थी ।[१]

१. महात्मा गांधी तथा अन्य नेताओं की गिरफ्तारी की खबर मिलते ही दिन भर हड़ताल रखी जाय । हड़ताल में व्यापारी, छात्र, वकील, मुख्तार, मजूदर, गाड़ीवान, रिक्शा चालक,

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८५,पृ०स० १०।

सरकारी नौकरी करने वाले, जमींदार और किसान आदि भाग लें । दिन भर की हड़ताल के बाद शाम को सभा की जाय । उसमें अखिल भरतीय कांग्रेस समिति की बैठक में रखा जाने वाला कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव पढ़कर सुनाया जाये ।

२. कार्यकर्ता गाँव—गाँव में जायें और महात्मा गांधी एवं अन्य नेताओं के आदेश ग्रामवासियों को सुनायें एवं उन्हें हर प्रकार के बलिदान करने को तैयार करें।

३. प्रत्येक नगर एवं गांव में सभायें की जायें और जुलूस निकाले जायें । जुलूसों में आजादी के नारे लगाये जायें और सभाओं में लोगों को बताया जाये कि आजादी क्या है ? यदि सरकार सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबंध लगाती है तो उसका उल्लंघन किया जाये ।

४. वकील और मुख्तार अपना काम करना छोड़ दें और कार्यक्रम की सफलता के लिये काम करें ।

५. छात्र स्कूल कालेज जाना छोड़कर आंदोलन में कूद पड़ें । छात्रों से बहुत कुछ आशा है और यह आशा की जाती है कि वे उसे पूरी करेंगे ।[१]

६. पुलिस भाईयों से अपील है कि वे इस लड़ाई में लगे हुए लोगों पर गोली

---

१ शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८५,पृ०स० १०।

न चलायें या लाठी चलाकर उन्हें तितर—बितर न करें ।

७. कार्यकर्ताओं को लाठियों या गोलियों से डरना नहीं होगा । इनका डटकर सामना करना होगा । वे पीछे न हटें और कभी भी अहिंसा का मार्ग न छोड़ें एवं हिंसात्मक काम न करें ।

८. लोग चौकादारी एवं यूनियन टैक्स देना बंदकर दें । चौकीदारों तथा दफादारों से अपनी नौकरी छोड़कर आन्दोलन में सम्मिलित होने का अनुरोध है ।

९. पुलिस के जवान और जेल के वार्डरों से अनुरोध है कि वे सरकारी नौकरी छोड़ दें । सरकार उनसे ऐसा—ऐसा कुकर्म करायेगी, जिससे देश को भारी हानि होगी। उन्हें कांग्रेस कर्मियों पर लाठी और गोली चलाने को बाध्य किया जायेगा । इस पाप से बचने के लिये उन्हें नौकरी तुरन्त छोड़ देनी चाहिये, यदि हमारे सभी पुलिस भाई अपनी नौकरी छोड़ देंगे, तो उससे सरकार को भारी हानि होगी ।[१]

१०. सरकारी नौकरी वालों से अनुरोध किया जाता है कि वे त्याग पत्र दे दें ।

११. रेल कर्मियों, स्टीमर पर काम करने वालों और जमशेदपुर तथा वैसे अन्य कारखानों के मजदूरों से अनुरोध किया जाता है कि वे अपनी नौकरी छोड़ दें ।

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८५,पृ०स० १०।

१२. कांग्रेस की पुकार पर जो त्याग पत्र देंगे, उन्हें स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पूरे वेतन पर फिर नियुक्त कर लिया जायेगा, जिन लोगों की जमीन जायदाद सरकार जब्त कर लेगी, उन्हें स्वतंत्रता के बाद लौटा दिया जायेगा ।[१]

१३. गाँवों में आंदोलन में सहायता देने के लिये और जानमाल की रक्षा के लिये पंचायतें गठित की जायें ।

१४. आजादी की लड़ाई से संबंधित सूचनाएँ लोगों को बराबर मिलती रहें, इसका प्रबंध किया जाना चाहिये ।

१५. सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय झण्डे फहराये जायें । पुलिस से हथियार छीनकर उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखा जाय । सरकारी कार्यालय बंद कर दिये जायें और कर्मचारियों आदि को यह कहकर आश्वस्त कर दिया जाये कि स्वतंत्रता के बाद उन्हें फिर काम पर बुला लिया जायेगा ।

१६. छिपकर काम करने से सत्याग्रह आंदोलन में कमजोरी आती है और उसके परिणाम नहीं होते । इसलिये सभी कार्यक्रम पहले जनता के सामने रखे जायें और उसके बाद उनके अनुसार कार्यवाही शुरू की जाये ।[२]

---

१. शंकर दयाल सिंह, भारत छोड़ों आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, १९८५,पृ०स० ११।

२. वही पृ०सं० १२।

इस तरह यदि इस सोलह सूत्रीय कार्यक्रम पर एक दृष्टि डाली जाये तो यह सुस्पष्ट होने में कोई संदेह नहीं रह जाता है कि १९४२ के आन्दोलन की विस्तृत रूपरेखा बन चुकी थी ।

भारतीय आजादी के स्वातन्त्र्य समर के १९४२ के लोक युद्ध में हमीरपुर जनपद का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यहां के शीर्ष नेताओं ने पूरी निष्ठा के साथ अगस्त क्रांति को अन्तिम सरजांम दिया।[१] दीवान शत्रुघ्न सिंह को ब्रिटिश सरकार अपना सबसे बड़ा विरोधी और शत्रु समझती थी, हालांकि आंग्ल सरकार ने उन्हें अगस्त –संग्राम के पूर्व ही गिरफ्तार कर लिया था किन्तु इससे यहाँ का अगस्त संघर्ष रुका नहीं, यहाँ के अन्य रणवीरों ने इस लोक युद्ध में शानदार भूमिका निभायी।

अगस्त आन्दोलन और महोबा का क्रांतिकारी सम्मेलन

अगस्त आन्दोलन को एक अच्छे मुकाम पर पहुँचाने की दृष्टि से रामगोपाल गुप्त ने ११ अगस्त १९४२ को जिले भर के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को महोबा के क्रांति सम्मेलन में सम्मिलित होने की सूचना दीं। गुप्त जी ने उस सम्मेलन में शामिल कार्यकर्ताओं को बम्बई कांग्रेस महा समिति के भारत छोड़ों प्रस्ताव तथा गांधी गिरफ्तारी

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

से भी अवगत कराया। उन्होंने सहभागी स्वयं सेवियों से कहा कि आप सब अगस्त क्रांति में पूरी तरह से कूद पड़े तथा गांधी जी के ''करो या मरो'' जैसे मंत्र—सूत्र को आत्मसात कर अगुवा बनें। गुप्त जी ने श्री भाई से कहा कि आपको अन्त तक गिरफ्तार नहीं होना है और भारत छोड़ो आन्दोलन की अगुंवाई कर उसे सफलता प्रदान करना है। महोबा के क्रांति—सम्मेलन में बहुत सारे कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था।[१]

गोपाल भाई के कहने पर श्री भाई तुरन्त महोबा से पैदल राठ चल दिये।

महोबा में गिरफ्तारियाँ

कांग्रेस के द्वारा अगस्त क्रांति के प्रस्ताव के पारित होते ही सरकार सचेत हो गयी थी। ०९ अगस्त १९४२ के पूर्व ही गोरों ने सारे देश में गिरफ्तारियों के लिये वारण्ट निर्गत कर दिये थे। सभी कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को बंदी बनाये जाने के लिए सभी जनपदों के जिलाधीशों को आदेश प्रेषित कर दिये गये थे। हमीरपुर में भी कांग्रेसियों को कैद किए जाने के आदेश आ चुके थे। महोबा में क्रांति—सम्मेलन सम्पन्न होने के बाद जैसे ही जनपद के प्रमुख नेता क्रांति—कार्य के लिए जनपद भर में फैलने वाले थे कि उसी समय पुलिस ने कांग्रेस कार्यालय में अचानक छापा मारकर सभी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया।

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

इतना ही जनपद भर में जहाँ भी कोई भी कार्यकर्ता मिला, पुलिस ने उसे कैद कर लिया। प्रमुख कांग्रेसी नेताओं का तो बंदी से बचने का कोई प्रश्न नहीं उठता था। इस स्थिति में यह एक विकट समस्या बन गयी थीं की १९४२ के लोक युद्ध का नेतृत्व कौन करे? श्री भाई गिरफ्तारी से इसलिए बच गये थे कि राठ की पुलिस समझ रही थी कि श्रीपति सहाय रावत महोबा की क्रांतिकारी बैठक में ही गिरफ्तार हो गये होंगे, साथ ही उसे श्रीभाई के राठ आगमन की सूचना भी नहीं मिल सकी।[१]

श्रीभाई तथा पं. परमानन्द दीवान साहब के राठ वाले मकान में १९४२ की अगस्त क्रांति के सम्बन्ध में वार्ता कर ही रहे थे कि वहाँ अचानक पुलिस दल आ पहुँचा। पं. परमानन्द उसी मकान में गिरफ्तार कर लिये गये। श्री भाई मकान के पीछे के दरवाजे से भाग निकले। वे राठ से करगँवा पहुँचे। पुलिस ने पं. परमानन्द को कैद कर हमीरपुर कारागार में बंद कर दिया। श्री भाई के सामने एक समस्या यह थी कि उन्हें क्रांति—कार्य में मदद देने के लिए कार्यकर्ता ही नहीं बचे थे,सभी कांग्रेसी पुलिस द्वारा पकड़ लिये गये थे।[२]

१९४२ में अगस्त क्रांति के पूर्व ही जिले के लगभग प्रमुख कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिए गये थे, श्रीभाई ही मूल रूप से बचे थे। वे जिले के १९४२ के लोकयुद्ध

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही ।

का संचालन कर रहे थे। श्रीभाई भूमिगत होकर आन्दोलन को अपना नेतृत्व प्रदान कर रहे थे। उन्होने राठ—तहसील पर कब्जा करने की योजना बनायी, जो उनके अनुभवहीन साथियों की असावधानी वश विफल हो गयी,

इधर ब्रिटिश सरकार ने श्री भाई की गिरफ्तारी का वारण्ट निर्गत कर दिया था। उन पर डेढ़ हजार रुपयों का इनाम घोषित किया गया था। उनकी चल—अचल सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी थी। पुलिस ने श्री भाई के मकान के सारे सामान की कुर्की कर ली थी। उनके घर खाना बनाने के लिये बर्तन तक नहीं बचे थे। खेती भी बंद करवा दी थी। गाय भैंस तथा बैलों को भी कुर्क कर उनकी नीलामी करा दी थी। उनका सारा परिवार घर में ही कैदियों की तरह रहता था। श्रीभाई के सारे महत्वपूर्ण लोग जेल में कैद थे।[१]

युवा संगठन की रूपरेखा

श्रीपति सहाय रावत १९४२ में जिस समय फरारी हालत में थे, उस समय बरसात का मौसम था, सभी नदियाँ तथा नाले उफान पर थे, उस समय श्री भाई के पास युवा वीर हरनाथ सिंह यादव आये। उन्होने श्री भाई से कहा कि युवा संगठन के सम्बन्ध में हमें दिशा निर्देश प्रदान करें। श्रीपति सहाय रावत ने यादव का एतद्

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

विषयक मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात् बरातीलाल तथा लक्ष्मीप्रसाद ने भी युवा संगठन के सम्बन्ध में रावत जी से विचार—विमर्श किया। खेड़ा शिलाजीत निवासी बरातीलाल तथा जमखुरी निवासी लक्ष्मीप्रसाद के उत्साह को देखकर श्रीभाई ने भयंकर बरसात की परवाह न कर उनके साथ खेड़ा शिलाजीत गये।[१]

श्रीभाई पं. विश्वनाथ के घर स्थित मंदिर में रुके। ये तीनों युद्धवीर मंदिर की छत पर पहुँचे ही थे तभी वहाँ पुलिस दल आ पहुँचा। बरातीलाल ने श्रीभाई से कहा कि मंदिर के नीचे दरवाजे पर पुलिस खड़ी है, अब आपको गिरफ्तारी से कैसे बचाया जाय, अंधेरी रात्रि थी, मूसलाधार वर्षा हो रही थी, श्रीभाई को जैसे ही पता चला कि पुलिस आ गयी है। वे तुरन्त मंदिर के पीछे की ओर से छत से कूद गये। उसके बाद उनके दोनों मित्रों ने भी छत से छलांग लगा दी।

श्रीभाई तथा उनके साथी खेतों में लगी तारों की बैरीकेटिंग तथा बरसात से लोहा लेते हुये आगे बढ़ने लगे। वे सभी खेड़ा शिलाजीत के पश्चिम दिशा में अवस्थित बरौली गाँव की तरफ चल दिये। उन्हें रास्ते में उफनाती हुई पण्डवाहा नदी मिली। श्री भाई ने कहा पण्डवाहा तुम जराखर के मैदान से नि:सृत हुई है और मैं भी जराखर से निकला हूँ। मुझे पार लगा दे। इतना कहकर श्रीभाई नदीं में कूद पड़े, उनके दोनों साथियों ने भी श्रीभाई का अनुगमन किया, भयानक अंधेरी रात्रि थी, कुछ भी दिखायी

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

नही पड़ रहा था। उन तीनों साथियों ने राष्ट्र निष्ठा की नाव में बैठकर पौरुष की पतवार से उस पण्डवाहा नदी को पार कर लिया, उन्होंने पण्डवाहा तथा परमेश्वर दोनों को धन्यवाद दिया। [१]

वे तीनों साथी पुनः बरौली गाँव की ओर चल दिये। भीषण बरसात में पानी से लबालब भरे खेतों में चलना जूतों सहित उनके लिए दूभर हो रहा था, इस कारण वे तीनों मित्र नंगे पैर चलने लगे। खेड़ा शिलाजीत से बरौली लगभग तेरह—चौदह किमी. दूरी पर अवस्थित है। वे समस्त मुसीबतों को झेलते हुये बरौली के निकटवर्ती गाँवों तक पहुँचे, दाहिनी ओर इस्लामपुर था। उन्हें बरौली के पहले एक और अवरोध से जूझना पड़ा, गाँव के पहले एक बरसाती नाला उफनाता हुआ बह रहा था, उसके तीव्र बहाव को पार करना सुगम नही था। उन तीनों मित्रों ने हिम्मत करके उस नाले को भी पार किया। [२]

बरातीलाल तथा लक्ष्मी प्रसाद (अड्ढर) ने श्रीभाई को बरौली के बहादुर के मकान में ले गये। बहादुर चुरहरे ने रात्रि में बिना किसी डर के उन्हें अपने घर में ठहराया। उनके भोजनादि का प्रबंध किया; निरन्तर चलने तथा नदी—नाला को पार करने के कारण श्रीभाई अस्वस्थ हो गये थे। उन्हें बुखार आ गया था। वे तीनों मित्र दिन

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

२. वही।

भर बरौली के बहादुर के घर में ही रहे, शाम होते ही श्रीभाई अपने मित्रों के साथ मगरौठ की राह पकड़ी, वहाँ से मंगरौठ तीन मील अर्थात लगभग पाँच कि.मी. की दूरी पर था। वे तीनों साथी मंगरौठ पहुँच गये। उस समय दीवान साहब जेल में थे। श्रीभाई को चुरवा निवासी सुदर्शन भाई तथा वीरा निवासी सुखलाल भाई जैसे दो देश भक्त दोस्त मगरौठ में मिल गये। उन्होंने श्रीभाई को दीवान साहब के मकान के ऊपरी हिस्से में ठहरा दिया, वहाँ पर श्रीभाई की तबियत और भी खराब हो गयी। बरातीलाल तथा अड्ढ़र मगरौठ से अपने–अपने गाँव चले गये।[१]

श्रीभाई को मगरौठ में बुखार के साथ–साथ अतिसार हो गया। उन्हें दस्त लगने के कारण बहुत कमजोरी हो गयी। वहाँ पर श्रीभाई को तेरह लंघन (उपवास) हुए, कोई वैद्य मिल नहीं सका, साथ ही पुलिस उनके पीछे पड़ी हुई थी। श्रीभाई को दीवान साहब के यहाँ वर्षो से सेवारत एक ढीमर बुढ़िया ही जानती थी। वह श्रीभाई के प्रति सहानुभूति रखती थी। एक दिन श्रीपति सहाय रावत (श्रीभाई) की तबियत इतनी खराब हो गयी कि श्रीभाई को स्वयं महसूस होने लगा कि अब मेरा शरीर छूटने वाला है, वे मरणासन्न अवस्था में पहुँच गये। श्रीभाई की बीमारी की खबर पाकर जराखर से सुखलाल भाई आ पहुँचे। श्रीभाई दीवान साहब के बड़े पुत्र तेज प्रताप सिंह उर्फ बच्चा जी के निजी कक्ष में ठहरे थे। सुखलाल भाई श्रीपति सहाय रावत की चारपाई के

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

निकट खड़े होकर रोने लगे। उस समय श्रीभाई के पास सुखलाल भाई के अतिरिक्त और कोई नहीं था। उन्होंने सुखलाल भाई से कहा कि यदि मेरी मृत्यु हो जाये तो तुम मुझे बेतवा में प्रवाहित कर देना।

श्रीभाई से यह सुनकर सुखलाल भाई की आँखों से अश्रुधारा निकल पड़ी, तभी श्रीभाई को अचानक यह आभास हुआ कि जैसे अन्दर से यह आवाज हो रही हो कि तुम्हें अभी नहीं मरना है, इससे श्रीभाई के स्वास्थ्य–चिन्तन को एक नया आयाम मिला। उनका मनोबल बढ़ गया। श्रीभाई का ज्वर तथा अतिसार अपने आप ही ठीक हो गया और श्रीभाई पर ''कर भला तो हो भला'' की कहावत चरितार्थ हुई। ईश्वर ने राष्ट्र सेवी श्रीभाई की रक्षा की। श्री भाई ने इसे परमेश्वर की कृपा माना। वे धीरे–धीरे स्वस्थ होने लगे।[१]

श्रीपति सहाय रावत एक सच्चे स्वातन्त्र्य सेनानी थे। उन्हें लोक लगाव था। उनके मित्र उनके प्रति सहिष्णु थे। उनकी बीमारी के समाचार को पाकर उन्हें देखने उरई क्षेत्र के फरार कांग्रेसी कार्यकर्ता भी मगरौठ गये। एक दिन ग्रामपुर तहसील उरई के राष्ट्र भक्त कुँवर रघुराज सिंह भी उनके पास आये। वे भारी बरसात के बावजूद नाव द्वारा बेतवा पार कर श्रीभाई के पास मगरौठ पहुँचे। उन्होंने श्रीभाई से मिलकर उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि मै और आप कहीं अन्यत्र चले, जहाँ पर स्वस्थ होकर

---

१. सर्वोदय नेता रामगोपाल दीक्षित, मुस्करा से लिए गये साक्षात्कार के आधार पर।

१९४२ के स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए ठोस कदम उठायें, हालांकि श्रीपति सहाय रावत १९४२ के लोक युद्ध के लिए महोबा क्रांति सम्मेलन के आयोजन के बाद अपनी अस्वस्थता में भी शान्त नहीं बैठे, १९४२ के लोक संग्राम के लिए लगातार लोक चेतना को लौह रूप प्रदान करते रहे, युवाओं को बराबर प्रोत्साहित करते रहे, युवा संगठन की पृष्ठभूमि बनाते रहे। रघुराज सिंह ने श्रीभाई के समक्ष म.प्र. के टीकमगढ़ में कुछ दिनों के प्रवास का प्रस्ताव रखा।[१]

रघुराज सिंह ने कहा कि टीकमगढ़ में मेरे रिश्तेदार रहते है, वह क्षेत्र म.प्र. में है, इसलिए पुलिस द्वारा गिरफ्तारी का कोई भय नहीं रहेगा, उन दोनों ने टीकमगढ़ प्रवास के लिए प्रस्थान किया। वे मगरौठ में सुदर्शन तथा सुखलाल भाई से मिलकर धगवाँ में भोजनकर टोला खंगारन तथा ककरबई होते हुये केरोखर पहुँचे। केरोखर में मझगँवा निवासी उदित नारायण सिंह की जमींदारी थी, जिसके मझगँवा निवासी एवं समर्पित स्वातन्त्र्य सेनानी पं. भगवानदास तिवारी प्रबंधक थे।

पं. भगवानदास तिवारी कलेक्टर साहब के नाम से भी जाने जाते थे। इनका सत्याग्रह संघर्ष में शानदार सहयोग था। इन्हें सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत १९३२ में हमीरपुर के जिला कलेक्टर का चार्ज छीनने का दायित्व दिया गया था, जिसे उन्होंने निभाया भी था। उन्होंने अंग्रेज कलेक्टर से कहा था कि आप कुर्सी से हटे,

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

हमें चार्ज दें, हम स्वतंत्र भारत के कलेक्टर है। इस पर कलेक्टर ने पुलिस बुलाकर उन्हें गिरफ्तार करा दिया। भगवानदास तिवारी को नीम के पेड़ से बांधकर हमीरपुर कोतवाली में इतना पीटा गया था कि वे लहू—लुहान हो गये थे। उनकी हमीरपुर जेल में महीनों चिकित्सा हुई थी, तब कहीं जाकर वे स्वस्थ हुये थे। श्रीभाई तथा रघुनाथ सिंह दोनों भगवानदास तिवारी के पास केरोखर में रुके, जहाँ उन्हें विश्राम तथा शान्ति दोनों मिली।

भगवानदास तिवारी ने टीकमगढ़—यात्रा के लिए उन दोनों को एक ऊँटनी उपलब्ध करा दी थी। श्रीभाई तथा रघुराज सिंह दोनों ने ऊँटनी से टीकमगढ़ के देवराहों गाँव के लिए अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वे दोनों केरोखर से चलकर बीरपुरा होते हुए तुरकालहचूरा होकर जा रहे थे कि बीरपुरा गाँव के काशीप्रसाद महतो के युवा पुत्र ने श्री भाई को पहचान लिया। उसने श्रीभाई से कहा कि मैने आपको जराखर के राजनैतिक सम्मेलन में देखा था, मुझे आपकी फरारी हालत की भी जानकारी है, सूर्यास्त होने वाला है, यह आपका ही घर है। आप रात्रि में यहीं पर विश्राम कीजिए। श्रीभाई ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी दूर मुझे कोई पहचान लेगा।[१]

श्रीभाई ने अनुनय—विनयकर किसी तरह उस युवा से छुट्टी पा ली और अपनी ऊँटनी बढ़ा दी, वे जैसे ही आगे बढ़े, उन्हें सीला गाँव की एक महिला ने पहचान

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

लिया और ऊँटनी के सामने रास्ता रोककर खड़ी हो गयी। उसने कहा कि श्रीपति भैया अब रात हो गयी ,कहाँ जा रहे हो? इस पर श्रीभाई ने पूँछा कि तुम कौन हो, मै तुम्हें पहचान नही पाया। उसने कहा कि मै जराखर के नंदराम शर्मा की बहन हूँ। इस उत्तर को सुनकर श्रीभाई को स्मरण हो आया। उन्होंने उससे कहा कि बहन मैं जरूरी कार्य से जा रहा हूँ। इतना कहकर श्रीभाई ने अपनी ऊँटनी बढ़ा दी किन्तु उनके ह्रदय में उस बहन के प्रति करुणा और आदर भाव तो था ही।[१]

वे दोनों तुरकालहचूरा पहुँचे, जहाँ पर मझगँवा के उदित नारायण सिंह की जमींदारी थी, उनका वहाँ डेरा था, जिसमें उनका एक चौकीदार रहता था। संयोगवश उस दिन उस डेरा में पुलिस का दीवान भी आ गया था। श्रीभाई ने उस चौकीदार से कहा कि तुम दीवान को अपने घर ले जाओ। उससे कहो कि इस डेरा में मझगँवा के ठाकुर ठहरे हैं, जगह नहीं है। चौकीदार ने श्रीभाई के सुझावानुसार कार्य किया।

श्री भाई तथा रघुराज सिंह दोनों डेरा में निश्चिन्तता पूर्वक सोये किन्तु यह निश्चित कर लिया था कि प्रात: अंधेरे में ही डेरा छोड़ देना है ताकि गाँव वाले तथा पुलिस के व्यक्ति उन्हें पहचान न पायें। कुँवर रघुराज सिंह तथा श्रीभाई तुरका लहचूरा के डेरा में रात्रि विश्राम कर खंदरका, जतारा, बम्हौरी होते हुये देवराहो गाँव पहुँचे, उन्हें मार्ग में विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। श्री भाई ने देवराहों में एक माह तक

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। रघुराज सिंह के रिश्तेदार अतिरूप सिंह श्रीभाई से जराखर के राजनैतिक सम्मेलन से ही परिचित थे। वहाँ की प्रकृति के अनुदान से श्रीभाई को बहुत लाभ हुआ। उसके बाद दोनों लोग स्वगृह की ओर प्रस्थान किया, मऊरानीपुर में श्रीभाई तथा रघुराज सिंह विछुड़ गये।[१]

चार माह की फरारी हालत के बाद श्रीभाई अपने गाँव जराखर पहुँचे, जहाँ पर उनके परिवारीजनों ने घेर लिया और बहुत देर तक कुशल क्षेम पूँछते रहे। ब्रिटिश सरकार ने श्रीभाई को जिंदा या मुर्दा पकड़ने वाले को डेढ़ हजार रुपयों के इनाम की घोषणा की थी, जिस पर घर वापस आने पर उनकी पत्नी ने श्रीभाई से कहा कि इस समय आपके सभी दोस्त जेल में बंद है, यदि किसी द्रोही ने लालचवश आपको मार दिया तो हम लोग बरबाद हो जायेंगे, अत: आप या तो जेल जाइये या फिर दूसरे प्रान्त को कूच कर जाईये। श्रीभाई पत्नी की परामर्श पर नागपुर पहुँच गये, उन्होने वहाँ पर मेहेर आश्रम में मेहेर बाबा के दर्शन किए, उनसे स्वातन्त्र्य प्राप्ति के लिए आशीर्वाद माँगा, जिस पर मेहेर बाबा ने स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा की और श्रीभाई से कहा आज से तुम्हारे सम्बन्ध में मेरी जिम्मेदारी है, अब तुम्हें फरार रहने की आवश्यकता नहीं है। उन्होने श्रीभाई से कहा कि नागपुर से हमीरपुर के कलेक्टर को तारकर देना कि मैं अमुक तारीख को हमीरपुर पहुँच जाऊँगा। श्रीभाई नागपुर से जराखर आ गये।

वे मझगँवा थाने जाकर अपने दोस्त दरोगा हलीम के समक्ष पहुँचकर अपने

---

१. डा० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५,

आपको उसके हवाले कर दिया, वे अपने को हलीम के हाथों गिरफ्तार करवाकर उसे पारितोषिक तथा प्रशंसा दोनो दिलाना चाहते थे। उन्हें हमीरपुर जेल भेज दिया गया, जहाँ पर उन्हें अनेक कांग्रेसी मित्र मिले। श्री भाई को हमीरपुर जेल में केशव नारायण निगम, शंभूनाथ शुक्ल, नंद किशोर, हरनाथ सिंह यादव,श्री दयाल सक्सेना,खरेलाल कोश्टा, अनंत प्रसाद दुबे, दीनदयाल तिवारी एवं रज्जब अली आजाद जैसे अनेक स्वातन्त्र्य सेनानी मिले, जिन्हें सरकार ने १९४२ के लोक युद्ध के पूर्व ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। श्रीभाई, सुदर्शन भाई, सुखलाल भाई तथा उनके कुछ अन्य मित्रों ने १९४२ के स्वातन्त्र्य संग्राम का शिलान्यास कर दिया था। श्रीभाई हमीरपुर जेल से उन्नाव जेल भेजे गये, जहाँ पर उन्हें लाल बहादुर शास्त्री जैसे समर्पित शीर्ष सेनानी का सानिध्य मिला।[१]

भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने वाली प्रमुख महिलायें

१९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में हमीरपुर एवं महोबा जनपद के अनेक शूरों ने बढ़—चढ़कर भाग लिया, हालाँकि इस लोक युद्ध के पूर्व ही जनपद के प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानियों को कैद कर जेल में डाल दिया गया था किन्तु फिर भी जो शेष

---

१. महान स्वातन्त्र्य सेनानी श्रीपति सहाय रावत, जराखर से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

कांग्रेसी कार्यकर्ता थे, उन्होंने पूरे उत्साह के साथ १९४२ के अगस्त युद्ध में भाग लिया। यहाँ के युद्धवीरों की पत्नियाँ संघर्ष में पीछे नहीं रहीं। दीवान शत्रुघ्न सिंह की धर्म पत्नी रानी राजेन्द्रकुमारी तो इस क्षेत्र की सर्वमान्य क्रांतिकारिणी थी। उनके साथ अनेक महिला सेनानियों ने पूरे मनोयोग से संग्राम में सिरकत की।

१९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में सहभागी होने वाली अनेक ऐसी भी महिलायें रही है, जिन्होंने स्वातन्त्र्य संघर्ष में जेल के बाहर से पूरा सहयोग दिया है, उनका कम योगदान नहीं रहा, यह तथ्य शोध सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है। १९४२ के आन्दोलन में जिन महिलाओं ने अग्रणी भूमिका निभायी, वे इस प्रकार थीं।[१]

भुवनेश्वरी देवी

भुवनेश्वरी देवी उस जुझारू कस्बे की बेटी थी, जिसका रण क्षेत्र में एक अलग स्थान रहा है। भुवनेश्वरी देवी बुन्देलखण्ड के प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी भगवानदास बालेन्दु अरजरिया की बहन तथा महोबा निवासी, नाथूराम तिवारी की धर्म पत्नी थी। नाथूराम तिवारी भी एक स्वातन्त्र्य योद्धा थे। इनका स्वाधीनता आन्दोलन में स्मरणीय योगदान रहा। भुवनेश्वरी देवी को अपनी भाभी किशोरी देवी अरजरिया तथा भाई

१. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी, कुलपहाड़ से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

वालेन्दु जी अरजरिया से स्वातन्त्र्य समर की प्रेरणा मिली थी। इन्हें रानी राजेन्द्र कुमारी का सानिध्य प्राप्त हुआ था। इन्होंने १९४२ के भारत छोड़ों आन्दोलन में भाग लिया, जिसके कारण भुवनेश्वरी देवी को भारतीय प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ की अन्तर्गत दो माह का कठोर कारावास मिला।[१]

भुवनेश्वरी देवी के पति नाथूराम तिवारी एक जुझारू सेनानी थे। ये जीवन के सान्ध्यकाल में बहुत ही संयमित एवं कठोरव्रती रहे। भुवनेश्वरी देवी के स्वातन्त्र्य संघर्ष को भुलाया नहीं जा सकता।

रामप्यारी देवी

रामप्यारी देवी वीरभूमि झांसी में पैदा हुई थीं, इसलिए उन्हें बालजीवन में वीरता की बाल घुट्टी पीने को मिल गयी थी, जिसके कारण उनमें शौर्य—संस्कारों का विकसित होना स्वाभाविक था। रामप्यारी देवी रतनलाल विद्यार्थी जैसे वीर योद्धा की पत्नी थीं। इन्हे पति रतनलाल विद्यार्थी तथा रानी राजेन्द्र कुमारी से स्वतन्त्रता संग्राम में सहभागी होने की प्रेरणा मिली थीं। गांधी आन्दोलनों में रामप्यारी देवी की भूमिका सराहनीय रही। इन्होंने स्वातन्त्र्य आन्दोलन का अलख जगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। रामप्यारी देवी ने १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में पूरी तन्मयता के साथ

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १७५।

भाग लिया, जिसके कारण इन्हें भारतीय प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ के अन्तर्गत छः माह का कारावास मिला।[१]

रामप्यारी देवी यावत जीवन संघर्षी रहीं। इस वीर महिला सेनानी का २७ फरवरी १९९४ को निधन हो गया। इनका राष्ट्रधर्मी अनुदाय स्मरणीय रहेगा।

श्रीमती सैय्यद

हमीरपुर के स्वातन्त्र्य धर्मी कस्बों में राठ एक ऐसा कस्बा है, जिसने रणभूमि में अनेक रणवीरों को भेजा। मकबूल अहमद भी राठ के एक वीर सेनानी थे, जिनका स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सराहनीय योगदान रहा। इनकी पत्नी सैय्यद का भी स्वातन्त्र्य क्षेत्र में प्रशंसनीय सहयोग रहा। इनकी पत्नी सैय्यद ने गांधी आन्दोलन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। श्रीमती सैय्यद ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भी प्रतिभागिता दर्ज की। इन्हें भारतीय प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ (५) के अन्तर्गत एक वर्ष की सख्त कैद तथा पचास रुपयों के जुर्माना की सजा मिली। इस तरह श्रीमती सैय्यद की स्वातन्त्र्य धर्मी पहचान को नकारा नहीं जा सकता।

---

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १९२।

कान्ती देवी

कान्ती देवी अनघौरा निवासी राम प्रसाद खंगार की पुत्री थी। इनका वृंदावन वर्मा के साथ अर्न्तजातीय विवाह हुआ था, वर्मा अनुसूचित जाति के थे। ये भवानी सोनकर के पुत्र थे। वर्मा बहुत ही जीवट के व्यक्ति थे। इन्होंने १९३९, १९४१ तथा १९४२ में जेल यात्रायें की थीं। इनकी पत्नी कान्ती देवी भी वीर महिला थी। कान्ती देवी ने भी गांधी आन्दोलनों में अग्रणी भूमिका निभायी थी। ये १९३२ में दो बार तथा १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में एक बार जेल गयीं।[१]

कांन्तिदेवी को जेल में बहुत यातनायें दी गयी थीं, इनका १९४२ के भारत छोड़ों आन्दोलन में भी शानदार सहयोग रहा।

करमालती देवी

हमीरपुर जनपद के गाँवों में मुस्करा ब्लाक के निकट मसगाँव एक ऐसा गाँव है, जिसने स्वाधीनता आन्दोलन में अपने यहाँ से कई सेनानियों को सहभागी बनाया। मसगाँव के रणवीरों ने स्वातन्त्र्य समर में पूरे मनोयोग से सिरकत की। यहीं की करमालती देवी भी एक वीर महिला हुई है, जिनके राष्ट्र सेवी आचरण को भुलाया

---

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १३५।

नहीं जा सकता। करमालती देवी ने १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में आगे बढ़कर भाग लिया। इन्हें भारतीय प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ के अन्तर्गत जेल की सजा मिली।[१]

इस तरह यदि देखा जाये तो १९४२ के स्वातन्त्र्य संघर्ष में अनेक महिलायें शामिल हुयी, जिनके समवेत प्रयासों को विस्मृत नहीं किया जा सकता। यहाँ का १९४२ का समय ऐसा था, जबकि यहाँ के शीर्ष पुरोधा सरकार द्वारा १९४२ के लोक संग्राम के पूर्व ही सीकचों के अन्दर कर दिये गये थे, ऐसे में उस रिक्त आन्दोलन की भरपायी महिला सेनानियों ने यथेष्ट रूप में की, जिसे उनके स्मरणीय योगदान के रूप में देखा जा सकता है। १९४२ के अगस्त युद्ध में हमीरपुर तथा महोबा जनपद की अनेक महिला सेनानियों ने अग्रणी प्रतिभागिता दर्ज करायी।

निष्कर्ष

१९४२ का स्वातन्त्र्य समर स्वाधीनता प्राप्ति का समाहार संघर्ष था। यह एक लोक युद्ध था, जिसमें आम लोगों की सहभागिता थी। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में हमीरपुर जनपद की भी पुरोधत्व प्रतिभागिता प्रभावी रही। यहाँ के शीर्ष नेताओं ने पूरी निष्ठा के साथ अगस्त क्रांति को अन्तिम सरंजाम दिया, हालांकि हमीरपुर एवं महोबा जनपद के महत्वपूर्ण कांग्रेसी नेताओं को सरकार ने अगस्त क्रांति

---

१. एस०पी० भट्टाचार्य (सम्पादक),स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, लखनऊ, सूचना विभाग उ०प्र० १९६३, पृ०सं० १३४।

के पूर्व की गिरफ्तार कर लिया था किन्तु इससे यहाँ का अगस्त—संघर्ष रुका नहीं, यहाँ के अन्य रणवीरों तथा वीरांगनाओं ने इस लोकसंघर्ष में शानदार भूमिका निभायी।

अगस्त आन्दोलन को एक अच्छे मुकाम पर पहुँचाने की दृष्टि से रामगोपाल गुप्त ने ११ अगस्त १९४२ को जिले भर के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को महोबा के क्रांति सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये आहूत किया। उन्होंने सहभागी स्वयंसेवियों से कहा कि आप सब अगस्त क्रान्ति में पूरी तरह से कूद पड़े तथा गांधी जी के 'करो या मरो' जैसे मंत्र को आत्मसातकर आजादी के आयुध में अंगार बन जायें। रामगोपाल गुप्त ने श्रीपति सहाय रावत से कहा कि आपको अन्त तक गिरफ्तार नहीं होना है आपको भारत छोड़ो आन्दोलन की अगुवायी कर उसे साफल्य प्रदान करना है।

१९४२ के लोक युद्ध में यहाँ के शूरों की पत्नियाँ संघर्ष में पीछे नहीं रहीं,दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी तो इस क्षेत्र की सर्वमान्य क्रांतिकारिणी महिला थीं। उनके साथ अनेक महिलाओं ने पूरे मनोयोग से संघर्षी सिरकत की। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में सहभागी होने वाली अनेक ऐसी भी महिलायें रहीं हैं, जिन्होंने स्वातन्त्र्य संघर्ष में जेल के बाहर से पूरा सहयोग दिया है। उनका स्वातन्त्र्य समर में कम योगदान नहीं रहा।

यह तथ्य शोध सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है। यहाँ का १९४२ का समय ऐसा था जब हमीरपुर एवं महोबा जनपद के चोटी के नेता सरकार द्वारा १९४२ के लोक संग्राम के पूर्व ही सीकचों के अन्दर कर दिये गये थे, ऐसे में उस रिक्त आन्दोलन की भरपायी महिला सेनानियों ने यथेष्ट रूप में की, जिसे उनके स्मरणीय योगदान के रूप

में देखा जा सकता है। १९४२ के अगस्त युद्ध में हमीरपुर तथा महोबा जनपद की अनेक महिला सेनानियों ने अग्रणी प्रतिभागिता दर्ज करायी।

इस तरह से १९२० से १९४७ तक गांधी आन्दोलनों में हमीरपुर एवं महोबा जनपद की सैकड़ों महिलाओं ने जुझारू सहयोग प्रदान किया। जेल रिकार्ड तथा शोध सर्वेक्षाण की रिर्पोट से यह तथ्य सुस्पष्ट होता है की यहाँ कि वीर महिलायें प्रान्त के किसी भी जनपद की महिलाओं से संघर्षी सहयोग की दृष्टि से पीछे नहीं है। सरकारी आँकड़ों में भले यहाँ की वीर महिलाओं की संख्या पचास के आस–पास हो किन्तु शोध–गवेषणा से यह तथ्य उजागर हुआ है कि यहाँ की अनेक महिलाओं ने जेल के बाहर से आजादी के संघर्ष में अग्रणी अनुदय प्रदान किया है, इस तरह की वीर महिलायें शताधिक हुई है।

इस तरह अन्ततः कहा जा सकता है कि हमीरपुर तथा महोबा जनपद की वीर महिलायें आयुधी अनुदान में पीछे नही रही। उनके संघर्षी प्रतिभाग को भुलाया नहीं जा सकता।

सातवां अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

वैसे तो अंग्रेजों ने भारत के अर्थांगन में १६ वीं सदी में ही व्यापारिक—बिसात बिछाकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के माध्यम से सियासी गोंटे चलना प्रारम्भ कर दिया था और वे डेढ़ सदी की लगातार चालबाजी की चालों से १७५७ में मुगल सल्तनत को मात देकर भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डालने में सफल हो गये थे। १७५७ के बाद से ही यहाँ आँग्ल विरोधी बयार बहने लगी थी किन्तु वह तीन बार १८५७, १९१५ तथा १९४२ में तरस्विता की तूफान में तब्दील हुयी, तब कहीं जाकर आँग्ल सत्ता की चूँलें हिलीं किन्तु भारतीय स्वातन्त्र्य समर के आलोक में इस मत की पुष्टि होती है कि १९२० के पूर्व स्वाधीनता युद्ध लोक युद्ध नहीं बन सका था।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधी प्रवेश आन्दोलन की जन प्रवेशिका बन गया था, सत्य और अहिंसा पर आधारित उनका सामरिक नूतन निनाद लोकानुगामी हो गया। उनके सत्याग्रह आन्दोलन में असहयोग, सविनय अवज्ञा, व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा करनाफरमानी जैसे अहिंसक साधन समाहित थे।

भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) की सतत् सहभागिता रही है। संघर्षी स्वरूप चाहे हिंसक रहा हो या अहिंसक, दोनों ही प्रकार के रणाह्वानों में यहाँ के रणबाँकुरों ने बढ़—चढ़कर भाग लिया है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर के प्रारम्भिक तरस्वी—तेवर हिंसात्मक रहे है। पं० परमानन्द यहाँ के एक ऐसे पुरोधा रहे है, जिन्होने न केवल हम्मीरधरा के समरांगण में क्रांति—निनाद किया अपितु उन्होंने

विदेशों में भी जाकर अपने पौरुष का परचम फहराया।

दीवान शत्रुघ्न सिंह, श्रीपतिसहाय रावत, भगवानदास बालेन्दु अरजरिया तथा मन्नीलाल गुरूदेव जैसे युवा वीरों को पं० परमानन्द का सानिध्य मिला और ये भी पुरोधत्व की पंक्ति मे शामिल हो गये। हमीरपुर के पुरुष सेनानियों का जहाँ स्वातन्त्र्य संघर्ष में शानदार योगदान रहा है, वहीं यहाँ की वीर महिलायें इस क्षेत्र में कम नहीं रही हैं। रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में हमीरपुर की अनेकों महिला सेनानियों ने सत्याग्रह आन्दोलन में प्रभावी भूमिका निभायी है, यदि यह कहा जाय कि इस जनपद की जितनी अधिक वीरांगनायें रही है, उतनी बुन्देलखण्ड (उ०प्र०) के किसी अन्य जनपद में नहीं हुयीं तो इसमें कोई अतिशयोंक्ति नहीं होगी। आशारानी व्होरा जैसी स्वनामधन्य कई महिला लेखिकाओं की कृतियों एवं दीवान शत्रुघ्न सिंह के अभिनन्दन ग्रन्थ तथा गवेषक के सर्वेक्षण से इस तथ्य की पुष्टि हुयी है।

असहयोग आन्दोलन के स्थगन के बाद स्वातन्त्र्य संघर्षी आन्दोलन को धक्का लगा, गांधी जी ने असहयोग कार्यक्रम को दो भागों में बाँटा था। पहला— निषेधात्मक कार्यक्रम तथा दूसरा रचनात्मक कार्यक्रम। रचनात्मक नीति में एक कांग्रेस के झण्डा तले राष्ट्रीय संगठन का बिन्दु भी था। इस कार्यक्रम के तहत कांग्रेस ने झण्डा सत्याग्रह की अनुमति प्रदान की थी।

राष्ट्रीय तिरंगा देश की शान एवं सम्मान का प्रतीक था। गोरी सरकार भारतीय राष्ट्रीय तिरंगे के प्रचार—प्रसार तथा आरोहण को फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहती थी। १९२३ में सारे देश में जब तिरंगे का प्रचार प्रारम्भ हुआ, जगह—जगह ध्वज संचलन हुआ, उसमें सारे देश की सहभागिता दृष्टव्य थी। बुन्देलखण्ड के पुरुषों ने ही नही अपितु अनेक महिला सेनानियों ने भी खुलें दिल और मन से झण्डा सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

ब्रिटिश सरकार राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को फहराना अपराध मानती थी, झण्डा फहराने वाले के पीछे पुलिस का पहरा रहता था, सरकार उसकी चोर डाकुओं की तरह निगरानी रखती थी, साथ ही वह झण्डा भी छीन लेती थी, उस समय हमीरपुर जनपद में ध्वज युद्ध के विविध उपाय अपनाये जाते थे। कांग्रेसी स्वयंसेवक अपनी टोपियों, कुर्तों एवं मकानों पर झण्डे लगाते थे, कोई भी कार्यकर्ता बिना झण्डे एवं बैज के बाहर नही निकलता था, झण्डे का विस्तार निरन्तर बढ़ता ही जाता था, हर तरह के उत्सवों एवं त्योहारों तथा बारातों में झण्डा लगाया जाने लगा। झण्डे द्वारा जनता में स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत होने लगी।

सारे जनपद की महिलायें झण्डा जुलूस में सक्रिय हो गयीं। वे, राठ, मौदहा, हमीरपुर, कुलपहाड़ तथा महोबा के कार्यालय से झण्डे लेकर झण्डा गायन करती हुई

ध्वज जुलूस निकालती थीं। हमीरपुर एवं महोबा जनपद की वीर महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के निर्देशन में दल बनाकर जिस समय तिरंगा झण्डा लेकर समवेत गान करती हुयी राठ तहसील एवं अन्य स्थानों पर निकलती थी तो उस समय उन पर पुलिसिया प्रकोप कहर बनकर टूट पड़ता था, किन्तु वह महिला दल डरता नहीं था।

गंगादेवी, राजाबेटी, शांतिदेवी, किशोरी देवी, भुवनेश्वरी देवी, गोमती देवी तथा भारतपुत्री सहित अनेक जुझारू महिलाओं ने झण्डा सत्याग्रह में प्रभावी योगदान प्रदान किया। ये महिलायें सचमुच बहुत ही निडर सेनानी थीं इस तथ्य की पुष्टि गवेषक को सर्वेक्षण के समय हुई।

कांग्रेस के अधिवेशनों में सम्पूर्ण देश का प्रतिनिधित्व होता था, उसमें हर प्रान्त के प्रतिनिधि सहभागी होते थे। संयुक्त प्रान्त (उ०प्र०) इस क्षेत्र में कभी पीछे नहीं रहा। इस प्रान्त के जुझारू मण्डल (बुन्देलखण्ड) से हमेशा अनेक प्रतिनिधि कांग्रेस के लगभग हर अधिवेशन में भाग लेते थे, उस सहभागिता में महिलाओं की भी प्रतिभागिता रहती थी, बुन्देलखण्ड के जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा का स्वातन्त्र्य संघर्षी ग्राफ सदैव ऊँचा रहा है, यहाँ की अनेक वीर महिलाओं ने कई अवसरों पर अपने जौहर का खुलासा किया है।

कांग्रेस के कई अधिवेशनों में हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिला सेनानियों

ने भी अपनी प्रभावी उपस्थिति अंकित करायी है। दिसम्बर १९२१ में बिहार में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित होना था, उस अधिवेशन की अध्यक्षता का दायित्व चितरंजन दास को सौंपा गया था, दीवान शत्रुघ्न सिंह उस समय जेल में बन्द थे। उस समय कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व रानी राजेन्द्र कुमारी पर था, दीवान साहब की अनुपस्थिति में उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनका स्थानापन्न नही हो पा रहा था।

गया कांग्रेस अधिवेशन में रानी राजेन्द्र कुमारी सहभागी हुयीं, उनके साथ चौका सौरा गाँव के अजीत सिंह, करगँवा के जगन्नाथ नाई तथा श्रीपति सहाय रावत भी गये। गया कांग्रेस में रानी राजेन्द्र कुमारी को भारत वर्ष की प्रमुख महिला नेत्रियों के दर्शन हुये थे, इससे रानी साहिबा के राजनैतिक विश्लेषण की सूझबूझ को नया आयाम मिला। उन्हें वहाँ पर अन्य महिला सेनानियों का भी सानिध्य मिला।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हमीरपुर एवं महोबा की वीर महिलायें स्वातन्त्र्य क्षेत्र के किसी भी आयोजन में सहभागिता को लेकर पीछे नहीं रही।

रानी राजेन्द्र कुमारी को भुवनेश्वरी देवी, राजा बेटी, रुक्मिणी देवी तथा भगवती देवी शुक्ला ने हर महिला मण्डल की सभा एवं अन्य सम्मेलनों में प्रतिभागी बनकर

पूरा साथ दिया, ये सारे तथ्य गवेषक के समक्ष भौतिक सर्वेक्षण के समय प्राप्त हुए।

भारतीय स्वातन्त्र्य समर में बुन्देल क्षेत्र (उ०प्र०) के हमीरपुर एवं महोबा जनपद की सांग्रामिक सहभागिता कम महत्वपूर्ण नहीं रही, उस संघर्ष को प्रखर एवं प्रभावी बनाने में जनपदीय राजनैतिक सम्मेलनों ने उपयोगी उपादान की भूमिका निभायी। हमीरपुर एवं महोबा जनपद में उस समय कई राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुए थे जिनमें रणाह्वान की रणनीति को अमली जामा पहनाया गया था।

सम्मेलनों में चोटी के नेताओं की उपस्थिति जहाँ उन्हें साफल्य प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाती थी, वहीं सामारिक सहभागिता को सोने में सुहागा मिल जाता था। हमीरपुर, महोबा एवं झांसी के राजनैतिक सम्मेलनों में केवल पुरुष सेनानियों एवं स्वयंसेवियों की ही प्रतिभागिता नहीं रहती थी, अपितु महिला सेनानी भी बढ़ चढ़कर भाग लेती थीं। इन राजनैतिक सम्मेलनों में प्रमुखनेत्री रानी राजेन्द्र कुमारी, किशोरी देवी, उर्मिला देवी, सरस्वती देवी, भुवनेश्वरी देवी तथा सरयूदेवी का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा।

जराखर के विशाल राजनैतिक सम्मेलन के साफल्य में जहाँ जराखर एवं क्षेत्र के आबालवृद्ध का प्रचुर सहयोग रहा, वहीं हमीरपुर एवं महोबा जनपद की महिला सेनानियों की भूमिका कम स्तुत्य नहीं रही।

रानी राजेन्द्र कुमारी की महिला टीम में राठ क्षेत्र की उर्मिला देवी, भगवती देवी शुक्ला, पार्वती देवी, रामप्यारी देवी, कान्ती देवी, जमुना देवी, शिवरानी देवी, सरस्वती देवी, कस्तूरी देवी, जनक दुलारी, शांति देवी, राजा बेटी एवं गोमती देवी का तथा कुलपहाड़ की किशोरी देवी एवं महोबा की भुवनेश्वरी देवी तथा सरयू देवी पटेरिया का भी सम्मेलन में वरेण्य योगदान रहा।

इस तथ्य की पुष्टि जराखर के राजनैतिक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रमुख क्रांतिवीर श्रीपतिसहाय रावत के स्वागत भाषण से होती है। श्री भाई ने अपने उद्बोधन में उन महिला कार्यकर्त्रियों की भी भूरि–भूरि प्रशंसा की, जिन्होने सम्मेलन की सफलता को अन्तिम संरजाम देने में अहर्निश मेहनत की थी। इससे स्पष्ट होता है कि राजनैतिक सम्मेलनों में महिला सेनानियों की केन्द्रीय भूमिका रही।

गांधी काल का आजादी हेतु अगला संघर्षी चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन था, जो १९३०–३४ तक चला। सारा देश गांधी आन्दोलन से अनुप्राणित हो उठा, ऐसे में भला वीर प्रसूता धरती के रूप में विश्रुत बुन्देलखण्ड उस पुण्यधर्मी आचरण के क्षेत्र में कैसे चुप रहता ? यहाँ के जनपदों में हमीरपुर एवं महोबा का गांधी आन्दोलनों में

सहभागी ग्राफ बहुत ऊँचा रहा, गांधी जी के अहिंसात्मक संग्राम में केवल पुरुष सेनानियों की ही अहम् भूमिका नही रही अपितु महिला सेनानियों की भी स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रभावी पहल रही।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत रानी राजेन्द्र कुमारी ने हमीरपुर एवं महोबा जनपद में नमक सत्याग्रह आन्दोलन को सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया। उनके साथ में पुरुष स्वयं सेवियों के साथ–साथ बड़ी संख्या में महिला सहयोगी भी थीं। राठ तथा आसपास की महिला सत्याग्रहियों ने रानी के साथ कदम से कदम मिलाकर सहयोग प्रदान किया। उस समय रानी साहिबा ब्रिटिश सरकार के शराब घरों तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देती थी। राठ में सत्याग्रह कार्यक्रम उत्कर्ष पर रहा।

रानी राजेन्द्र कुमारी का कुलपहाड़ आन्दोलन में योगदान किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने महिला सेनानियों के साथ उक्त आन्दोलन में जिस निडरता का परिचय दिया, उस समय उनके उस कदम के सभी कायल थे।

बुन्देलखण्ड के कुलपहाड़ में आयोजित पुलिस बहिष्कार आन्दोलन अपने ढंग का एक अनोखा आन्दोलन था, जिसे बुन्देल क्षेत्र के लोग आज भी इस प्रकार गुनगुना उठते है–

बहिष्कार को भऔ है, यही शान्त संग्राम,

ब्रिटिश पुलिस में दर्ज है, कुलपहाड़ कौ नाम।

गांधी जी द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अनुसार हम्मीर धरती की वीरांगनाओं ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़—चढ़कर हिस्सा लिया। यहाँ की महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में अधोगान करती निडरता के साथ निकल पड़ती थीं—

जो कुछ पड़ेगी मुझ पै मुसीबत उठाऊँगी,

खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी।

यदि प्रान्त के जनपदों के महिला संघर्षी— ग्राफ की गवेषण कर अन्य जनपदों से परितुलन किया जाय तो इसमें कोई दोराय नहीं कि हम्मीरी धरती की जितनी वीर महिलायें यहाँ आन्दोलन में कूदीं, शायद ही उतनी अन्य जनपद की महिलाओं ने इतनी संख्या में सिरकत की हो। इस तथ्य की पुष्टि बुन्देल क्षेत्र से प्राप्त अभिलेखों तथा गवेषक को सर्वेक्षण से हुई है।

परिशिष्ट

महिला सेनानी -सूची

क्र०	नाम एवं पति का नाम	पता	जेल यात्रा का विवरण
१	श्रीमती रानी राजेन्द्र कुमारी पत्नी श्री दीवान शत्रुघ्न सिंह	ग्राम— मगरौठ थाना— जरिया जिला—हमीरपुर	सन १९३० में ढाई वर्ष के बच्चे के साथ छः माह के लिये जेल गयी। सन् १९३२ में भारतीय दण्ड सहिंता की धारा १४३/१८८ व २१ आर्डीनेन्स के अन्तर्गत एक वर्ष कैद और साठ रुपये जुर्माने की सजा पायी। सन् १९३३ में कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) क्रिमिनल ला० के अन्तर्गत २८.८.१९३३ को छ:माह की कैद और पचास रुपये जुर्माने की सजा पायी। सन् १९३४ में फौजीदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा ८७ के अन्तर्गत छः माह कैद और सौ रुपये जुर्माने की सजा पायी।
२	श्रीमती उमा देवी पत्नी श्री सुमेरा	ग्राम—बिहूनी खुर्द थाना— मुस्करा जिला— हमीरपुर	सन् १९३२ के कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में ५५ आर्डीनेन्स १७(१) क्रि०ला० एमिण्डमेन्ट एक्ट व १४३ आई.पी. सी. के अन्तर्गत १७.

			११.१९३२ से छ: माह सख्त कैद व दस रुपये जुर्माना की सजा पायी, ये १८.१२.१९३२ में हमीरपुर जेल से फतेहगढ़ जेल स्थानान्तरित हुयी।
३	श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी श्री लक्ष्मी नारायण कोष्ठा	नगर—राठ थाना—राठ जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ के राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले में भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३,४८ और फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७ (१) तथा १८(१) के अन्तर्गत छ: माह कैद और दस रुपये जुर्माना की सजा पायी।
४.	श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी श्री लक्ष्मण प्रसाद	नगर—राठ जिला—हमीरपुर	सन् १९३३ में धारा १४३ के अन्तर्गत १ वर्ष कैद और पच्चीस रुपये जुर्माना की सजा पायी। सन् १९३३ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) १८(१) के अन्तर्गत छ: माह कैद और दस रुपये जुर्मानि की सजा हुयी।
५.	श्रीमती कस्तूरी देवी	ग्राम—मसगांव थाना—मुस्करा जिला—हमीरपुर	सन् १९४२ में भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ के अन्तर्गत छ: माह के लिये जेल गयी।

६.	श्रीमती कस्तूरी देवी पत्नी श्रीबिहारी लाल विश्वकर्मा	ग्राम—सरीला थाना—सरीला जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७ (१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३ के अन्तर्गत छः माह कैद और पच्चीस रुपये की सजा पायी।
७.	श्रीमती कान्ती देवी पत्नी श्री सूरत सिंह	ग्राम—गौरहारी थाना—पनवाड़ी जिला—महोबा	ये १७(१) क्रिमिनल ला० तथा १४३ आई. पी.सी. के अन्तर्गत २६.४.१९३३ से छः माह कैद व पच्चीस रुपये जुर्माना की सजा पायी।
८.	श्रीमती कान्ती देवी पत्नी श्री सरल सिंह	ग्राम—गौरहारी थाना—पनवाड़ी जिला—महोबा	इन्होंने भारतीय कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१)१८(१) के अन्तर्गत सन १९३३ में छैः माह कैद व पच्चीस रुपये जुर्माना की सजा पायी।
९.	श्रीमती कान्तीदेवी पत्नी श्री वृन्दावन वर्मा	नगर—राठ थाना—राठ जिला—हमीरपुर	इन्होंने १९३२ में राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले में दो बार तथा सन १९४१ के व्यक्ति सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में एक वर्ष के लिये जेल गयी।
१०.	श्रीमती किशोरी देवी अरजरिया पत्नी श्री भगवान दास	ग्राम—कुलपहाड़ थाना—कुलपहाड़ जिला—महोबा	इन्होने १८८ ताजेराते हिन्द १७ क्रिमिनल ला० के अन्तर्गत १४.४.१९३२ से छैः माह की कैद की सजा मिली व दस रुपये

	अरजरिया		जुर्माना की सजा पायी।
११.	श्रीमती गंगा देवी पत्नी श्री उदयभान	ग्राम—गोहाण्ड जिला—हमीरपुर	इन्होने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अन्तर्गत १७(१)(२) सी.एल.ए. तथा १८(१) प्रेस एक्ट में २१.१.१९३३ से छः माह कैद मिली व दस रु० जुर्माना भी जमा हुआ।
१२.	श्रीमती गंगादेवी पत्नी श्री बोरेलाल लोधी	हमीरपुर	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत आठ माह कैद और दस रु० जुर्माना भी जमा हुआ।
१३.	श्रीमती गिरजा देवी पत्नी श्री नन्थू लोधी	ग्राम— अतरौली थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में ५५ आर्डीनेन्स की धारा १७(१) में इल्जाम सं० १४३ आई.पी.सी. के अन्तर्गत १६.११.१९३२ को छः माह कैद व दस रुपये जुर्माना की सजा मिली।
१४.	श्रीमती गिरजा देवी पत्नी श्री भवानीदास लोध	ग्राम—टोलारावत थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत सन् १९३२ में तीन माह कैद और दस रु० जुर्माना की सजा हुयी।

१५	श्रीमती गुलाबी पत्नी श्री बैजनाथ	ग्राम—बीरा थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ को राष्ट्रीय आन्दोलन में छः माह सरल कैद व दस रु० जुर्माने की सजा पायी। २ सन् १९३३ के कांग्रेस आन्दोलन में २५.२.१९३३ की १७(१) क्रिजिनल ला० तथा १८ (१) एवं १४३ आई.पी.सी. के अन्तर्गत प्रत्येक अपराध में छः माह की सरल कैद और चौबीस रु० जुर्माना ये ३०.३.१९३३ को हमीरपुर जेल से फतेहगढ़ जेल स्थानान्तरित हुयी।
१६.	श्रीमती गोमती पत्नी श्री गेंदाराम	थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	सन् १९३३ के कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेने के कारण छः माह कैद की सजा पायी।
१७.	कु० गोमती देवी पिता श्री जल्ला	ग्राम—खोड़ा शिलाजीत थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ फौजदारी कानून संशो० अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत छः माह कैद और दस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
१८.	श्रीमती गोमती पत्नी श्री सरल सिंह	ग्राम—इटैलिया थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में फौजदारी कानून संशो० अधि० की धारा १७(१) और १४३ आई.पी.सी. के अन्तर्गत चौदह माह कैद तथा पन्द्रह रुपये जुर्माने की सजा पायी।
१९.	श्रीमती यमुना पत्नी श्री हरीदास	नगर—राठ थाना—राठ	सनृ १९३२ के कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा

		थाना—राठ जिला—हमीरपुर	१७(१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३ के अन्तर्गत चौदह माह कैद और पन्द्रह रुपये जुर्माना की सजा पायी।
२०	श्रीमती जानकी पत्नी श्री अयोध्या	ग्राम—बण्डवा थाना—मुस्करा जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ की कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत छः माह कैद व दस रु० जुर्माने की सजा पायी।
२१	श्रीमती जैकुमारी पिता श्री राम प्रसाद	थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के भाग लेने के कारण फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) को अन्तर्गत तीन माह कैद और दस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
२२	श्रीमती धौरी पत्नी श्री माखन लोधी	थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३ के अन्तर्गत चौदह माह कैद और पन्द्रह रुपये जुर्माने की सजा पायी।
२३	श्रीमती भगवती शुक्ला पत्नी श्री शम्भूनाथ शुक्ला	ग्राम—सैदपुर थाना—राठ जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७ (१) के अन्तर्गत ५.४.१९३२ को छः माह कैद और तीस रुपये जुर्माने की सजा हुयी। तथा सन् १९३३ में भी उक्त धराओं के अन्तर्गत

			पायी।
२४	श्रीमती भारत पुत्री श्री रामनाथ	थाना—कुलपहाड़ जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत तीन माह कैद और दस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
२५	श्रीमती भारती उर्फ कसिया पत्नी श्री मोती लाल	थाना— पनवाड़ी जिला—महोबा	सन् १९३३ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३ के अन्तर्गत छः माह कैद की सजा पायी।
२६	श्रीमती भुवनेश्वरी देवी पत्नी श्री नाथूराम तिवारी	नगर—महोबा थाना—महोबा जिला—महोबा	सन् १९३३ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३ के अन्तर्गत तीन माह कैद की सजा पायी। तथा सन् १९४२ में भी उक्त धराओं में दो माह की सजा पायी।
२७	श्रीमती सैय्यद पत्नी श्री मकबूल अहमद	नगर—राठ थाना—राठ जिला— हमीरपुर	भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ (५) के अन्तर्गत एक वर्ष कैद और पच्चास रुपये जुर्माने की सजा पायी।

२८	श्रीमती मनोरमा देवी पत्नी पुन्नदेव शर्मा	ग्राम—कनकुआं थाना—महोबकण्ठ जिला —महोबा	सन् १९३२ में भारतीय दण्ड संहिता की धारा १८८ (२) के अन्तर्गत तीन माह कैद और पच्चीस रुपये जुर्माने की सजा पायी। तथा सन् १९३३ में १७(१) तथा १८(१) व १४३ आई.पी.सी. में २५.२.१९३३ को छः माह की कड़ी कैद व बीस रुपये जुर्माने की सजा हुयी।
२९	श्रीमती मालती देवी पत्नी श्री सूरज सिंह खंगार	ग्राम—गौरहारी जिला—महोबा	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत एक वर्ष के लिये जेल गयी।
३०	श्रीमती रमानी देवी पत्नी श्री भीखा सिंह	थाना—मुस्करा जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ में छः माह कैद और दस रुपये जुर्माने की सजा पायी। सन् १९३३ में फिर कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में एक वर्ष कैद और पच्चीस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
३१	श्रीमती राजा बेटी पत्नी श्री आनन्दी लोधी	ग्राम—जराखर थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	सन् १९३३ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) (२) क्रिमिनल ला० और १८(१) क्रिमिनल ला० तथा १४३ आई.पी. सी. के अन्तर्गत छः—छः माह की कैद तथा दस रुपये जुर्माना की सजा हुयी।
३२.	श्रीमती राजा बेटी	ग्राम—जराखर	सन् १९३२ के कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले

	पत्नी श्री छोटेलाल लोधी	थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४८ के अन्तर्गत ५.४.१९३२ को छः माह सख्त कैद व दस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
३३.	श्रीमती राजा बाई पत्नी श्री फकीरा	ग्राम—इटैलिया थाना—जरिया जिला—हमीरपुर	१९४१ के व्यक्ति सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ (५) १२१ के अन्तर्गत ५.४.१९४१को छः माह कैद व सौ रुपये जुर्माना की सजा हुयी।
३४.	श्रीमती रानी देवी पत्नी श्री रामदुलारे	ग्राम—गौरहारी थाना—पनवाड़ी जिला—महोबा	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १८८ ताजेराते हिन्द व १७ क्रिमिनल ला० के अन्तर्गत १४.४.१९३२ को छः माह कैद और पच्चीस रुपये जुर्माना की सजा पायी। उसी वर्ष भारतीय दण्ड संहिता की धारा १८८/१४५ के अन्तर्गत छः माह के लिए पुनः जेल की सजी काटी।
३५.	श्रीमती रानी देवी पत्नी श्री मातादीन	ग्राम—गौरहारी थाना—पनवाड़ी जिला—महोबा	सन् १९३२ में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा १७(१) के अन्तर्गत एक वर्ष कैद की सजा पायी।
३६.	श्रीमती रमा देवी	नगर— मौदहा	सन् १९३२ में राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले

	पत्नी श्री द्वारिका प्रसाद अवस्थी	थाना—मौदहा जिला—हमीरपुर	में १४३ आई०पी०सी० और १७(१) सी.एल.ए. क्रिमिनल ला० एमिण्डमेन्ड के अन्तर्गत छ: माह का कठोर कारावास व पच्चीस रुपया जुर्माना हुआ।
३७.	श्रीमती रामाप्यारी देवी पत्नी श्री रतनलाल विद्याथी	नगर—राठ थाना— राठ जिला—हमीरपुर	सन् १९४१ के कांग्रेस आन्दोलन में छ: माह कैद की सजा पायी। सन् १९४२ में भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा २९ के अन्तर्गत फिर छ: माह की सजा पायी।
३८.	श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी श्री पं० मोतीलाल	ग्राम—सुगिरा थाना—कुलपहाड़ जिला—महोबा	सन् १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सिलसिले के १७(१)सी.एल.ए. में १२.५.१९३२ को तीन माह कैद की सजा। सन् १९३३ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में छ: माह की कैद की सजा हुयी।
३९.	श्रीमती शान्ती देवी पत्नी श्री पतिसहाय रावत	ग्राम—जराखर थाना—मझगवां जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सिलसिले में भारतीय दण्ड संहिता की धारा १८८/१४३ के अन्तर्गत छ: माह कैद दस दिन कारावास की सजा पायी।
४०.	श्रीमती शान्ती देवी पत्नी श्री पाल शास्त्री	ग्राम—गरोखी जिला—हमीरपुर	सन् १९३२ से भारतीय दण्ड संहिता की धारा १४३/१२८ के अन्तर्गत छ: माह कैद और पच्चास रुपये जुर्माने की सजा पायी।

४१.	श्रीमती शिवदेवी पिता श्री फकीरे	थाना—सुमेरपुर जिला—हमीरपुर	सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण सन् १९३२ के छः माह की कैद पच्चीस रुपये जुर्माने की सजा पायी।
४२.	श्रीमती शिवरानी देवी पत्नी श्री अमर सिंह लोधी	ग्राम—बण्डवा थाना—मुस्करा जिला—हमीरपुर	सन् १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा ३८ (५) के अन्तर्गत २८.१.१९४१ के छः माह कैद और पच्चास रुपये जुर्माने की सजा पायी।
४३.	श्रीमती सरजू देवी श्री विश्वेश्वर दयाल		१. सन् १९३० के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा १२९ के अन्तर्गत छः माह कैद की सजा पायी। २. सन १९३२ के भारतीय दण्ड संहिता की धारा १८८ के अन्तर्गत एक माह कैद और सौ रुपये जुर्माने की सजा हुयी। ३. सन् १९३३ में १७(१) क्रिमिनल ला० प्रेस एक्ट के तहत १६.४.१९३३ को छः माह की सख्त कैद व दस रुपये जुर्माने की सजा हुयी।

साक्षत्कार सूची

१. श्रीमती भगवती देवी शुक्ला

पत्नी श्री शम्भूनाथ शुक्ला

ग्राम सैदपुर थाना राठ, हमीरपुर

२. श्रीमती जानकी देवी

पत्नी अयोध्या

ग्राम बण्डवा थाना मुस्करा, हमीरपुर

३. श्रीमती कस्तूरी देवी पत्नी बिहारी लाल

ग्राम सरीला थाना जरिया, हमीरपुर

४. श्रीमती राजा बेटी पत्नी छोटेलाल लोधी

ग्राम जराखर, थाना मझगवां, हमीरपुर

५. श्रीमती रानी राजेन्द्र कुमारी पत्नी दीवान शत्रुघ्न सिंह

ग्राम मगरौठ, थाना जरिया, हमीरपुर

६. श्रीमती सरला देवी पत्नी बैजनाथ

ग्राम अमूद थाना जरिया, हमीरपुर

७. श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी झण्डूलाल

ग्राम मसगांव थाना मुस्करा, हमीरपुर

८. श्रीमती पार्वती देवी पत्नी रामसेवक चौबे

ग्राम इस्लामपुर थाना जरिया, हमीरपुर

९. श्रीमती उमा देवी पत्नी सुमेरा

ग्राम बिहूनी खुर्द थाना मुस्करा, हमीरपुर

१०. श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी लक्ष्मी नारायण कोष्टा

नगर राठ—हमीरपुर

११. श्रीमती राजा बेटी पत्नी आनन्दी लोधी

ग्राम जराखर थाना मझगवां,हमीरपुर

१२. श्रीमती गुलाब पत्नी बैजनाथ

ग्राम बीरा थाना जरिया, हमीरपुर

१३. श्रीमती रमा देवी पत्नी द्वारिका प्रसाद अवस्थी

कस्बा थाना मौदहा, हमीरपुर

१४. श्रीमती सावित्री देवी पत्नी श्री पं. भगवानदास

ग्राम मझगंवां थाना मझगवां, हमीरपुर

१५. श्रीमती गंगादेवी पत्नी श्री उदयभान

ग्राम खेड़ा शिलाजीत थाना जरिया, हमीरपुर

१६. श्रीमती राजाबाई पत्नी श्री फकीरा नाई

ग्राम इटैलियागंज थाना जरिया, हमीरपुर

१७. श्रीमती शिवरानी देवी पत्नी श्री अमर सिंह

ग्राम बण्डवा थाना मुस्करा, हमीरपुर

१८. श्रीमती किशोरी देवी अजरिया पत्नी भगवानदास बालेन्दु

ग्राम व थाना कुलपहाड़, महोबा

---

१९. श्रीमती ओमकुमारी देवी बहू प. मोतीलाल

ग्राम सुगरा थाना कुलपहाड़,महोबा

२०. श्रीमती सरजूदेवी पत्नी श्री विश्वेश्वरदयाल पटेरिया

नगर व थाना—महोबा

२१. श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी श्री मण्टीलाल

ग्राम जैतपुर थाना कुलपहाड़,महोबा

२२. श्रीमती रुकमणी देवी पत्नी श्री पठ् मोतीलाल

ग्राम जैतपुर थाना कुलपहाड़, महोबा

२३. श्रीमती भुवनेश्वरी देवी

पत्नी नाथूराम तिवारी

ग्राम—महुवा बांध (जैतपुर) महोबा

२४. श्रीमती रामधारी देवी पत्नी

रतनलाल विद्यार्थी

नगर व नगर राठ (हमीरपुर)

२५. श्रीमती सुविधा देवी पत्नी

सुर्दशन प्रसाद खरे

ग्राम पुरवा थाना राठ, हमीरपुर

२६. श्रीमती शान्तीदेवी पत्नी श्री श्रीपत सहाय रावत

ग्राम जराखर थाना, हमीरपुर

सन्दर्भ-ग्रंथ

हिन्दी सन्दर्भ—ग्रंथ

1. व्होरा, आशारानी, महिलायें और स्वराज, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९८८.

2. गुप्ता, विश्वप्रकाश, मोहिनी, स्वतन्त्रता संग्राम और महिलायें, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन, १९९९.

3. डॉ० भवानीदीन (संपादक), समरगाथा, महोबा, बसंत प्रकाशन १९९५.

4. डॉ० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती है, भरुवा सुमेरपुर, सन्दर्शिता, २००१.

5. डॉ० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, कानपुर,साहित्य रत्नालय, १९९८.

6. मिश्र, पं० द्वारिकेश (संपादक), अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन—समिति, १९८३.

7. बादल, श्याम सुन्दर (संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंथ, राठ, जी०आर०वी० इं०का०, १९६०.

8. सिंह, दरयाव, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, बाबू बिहारीलाल विश्वकर्मा, सरीला, १९६७.

9. प्रभात कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि०वि०, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, २०००.

10. शर्मा, डॉ०एस० के०, डॉ० उर्मिला, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, १९९९.

बघेल रामसिंह, शहीद परिचय माला ५, ग्वालियर, नई सड़क, १९८५.

गुप्त, मन्मथनाथ, भूले बिसरे क्रांतिकारी, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९७६.

गुप्त, मन्मथनाथ, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स, १९८६.

खत्री, रामकृष्ण, शहीदों की छाया में, हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा, १९८३.

मिश्र, कन्हैयालाल, उ०प्र० स्वाधीनता संग्राम की झलकियां लखनऊ, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, १९७२.

राय, (डॉ०),सत्या, भारत में राष्ट्रवाद, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय १९८७.

सुन्दरलाल, भारत में अंग्रेजी राज, प्रथम तथा द्वितीय खण्ड नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, १९८२.

सिंह, अयोध्या, भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली, मैकमिलन कम्पनी, १९८७.

शुक्ला चिन्तामणि, गांधी युगीन स्वतंत्रता संग्रामों में उ०प्र० का योगदान, मथुरा, राष्ट्रीय प्रेस, १९८८.

सरल, श्री कृष्ण, क्रांति कथायें, उज्जैन, बलिदान भारती दशहरा मैदान, म०प्र०, १९८५.

वर्मा, शिव, संस्मृतियाँ, दिल्ली, निधि प्रकाशन, १९८५.

सिंह शंकर दयाल, भारत छोड़ो आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत

सरकार, १९८५.

ताराचन्द, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, प्रथम, द्वितीय,तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, १९७७,१९८२,१९८२,१९८४.

उपाध्याय, विश्वमित्र, शचीन्द्रनाथ सान्याल और उनका युग, नई दिल्ली, प्रगतिशील जन प्रकाशन, १९८३.

अंग्रेजी सन्दर्भ ग्रंथ—सूची

1- Gupta, Manmath Nath, They lived Dangerously. Hyderabad, Hindi Prachar, Shabha, 1983.

2- Majumdar, R.C.History of freedom movement, part -1] Culcutta, firlma K.L. Ganguli street, 1977.

3- Rizvi, S.A.A. freedom struggle in U.P. Part- 1 & 5. Lucknow Pub. Deptt U.P. 1957.

4- Sharma, S.R. Freedom movement, Delhi, B.R. Publishing Corporation 1988.

5- Singh Balwant I.A.S. U.P., Distt.Gazetteers Hamirpur, Govt. of U.P. Allahabad 1988.

स्मारिका, पत्र, पत्रिकायें, पाण्डुलिपियाँ एवं अन्य रिपोर्ट्स

१. अग्रवाल, डोरीलाल एवं अन्य (संपा० मण्डल) स्मारिका, आगरा, शहीद भगत सिंह स्मारक समिति, ४,५,६, अप्रैल १९८६।

२. अवस्थी राजेन्द्र (संपा०) साप्ताहिक हिन्दुस्तान, स्वाधीनता दिवस विशेषांक, दिल्ली हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, १७ से २३ अगस्त १९८६।

३. चतुर्वेदी, पं० बनारसीदास एवं अन्य (संपादक मण्डल), स्मारिका, आगरा, शहीद भगत सिंह स्मारक समिति, ९, १० अप्रैल १९८५।

४. गणेश मंत्री, (कार्यकारी संपादक), धर्मयुग (सम्पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम भाग—दो), बम्बई, टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, १४ से २० अगस्त १९८८।

५. रावत्, श्रीपति सहाय, महान स्वतन्त्रता सेनानी, हस्त लिखित अप्रकाशित अभिलेख, जराखर, हमीरपुर।

६. पटेरिया, विश्वेश्वरदयाल, स्वातन्त्र्य सेनानी, हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख, महोबा।

७. अग्रवाल, अनिल कुमार (प्र० संपा०) अमर उजाला आगरा, १५ अगस्त, १९८९।

सेनानी चित्रावलि
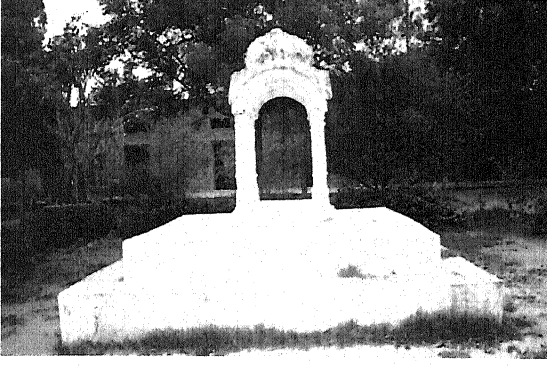
महात्मा गांधी के मूर्ति सम्मान का प्रतीक : गांधी स्मारक

प्रमुख महिला स्वातन्त्र्य सेनानी किशोरी देवी अरजरिया
कुलपहाड़

महिला स्वातन्त्र्य सेनानी :
सरस्वती देवी मसगाँव

महिला स्वातन्त्र्य सेनानी
उर्मिला देवी कोष्ठा, राठ

महिला सेनानी : सरयू देवी

राजाबाई पत्नी फकीर चन्द्र भाई
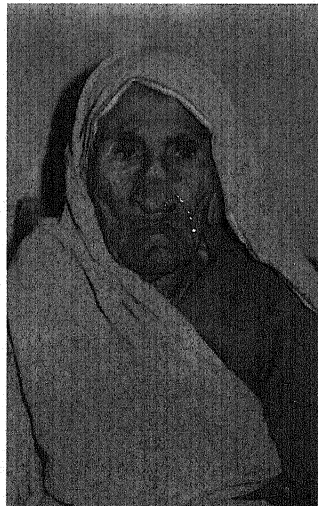
महिला स्वातन्त्र्य सेनानी :
गंगादेवी
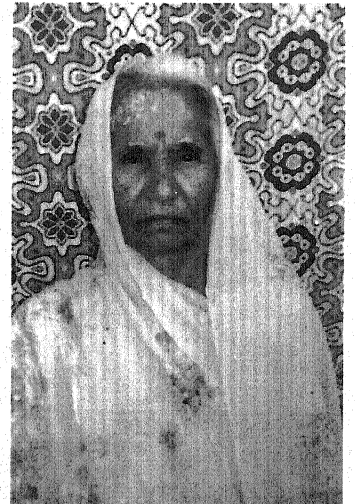
एक समर्पित महिला स्वातन्त्र्य
सेनानी रामप्यारी देवी
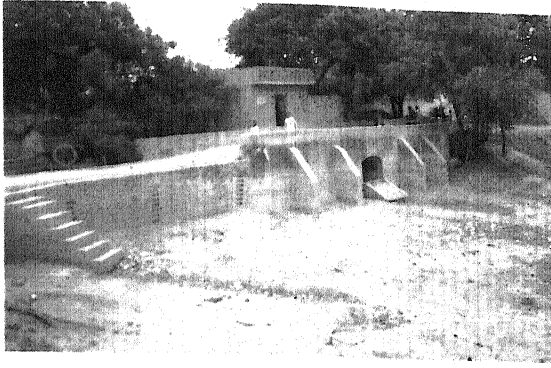
दीवान साहब की यादों का गवाह मगरौठ का एक स्थल
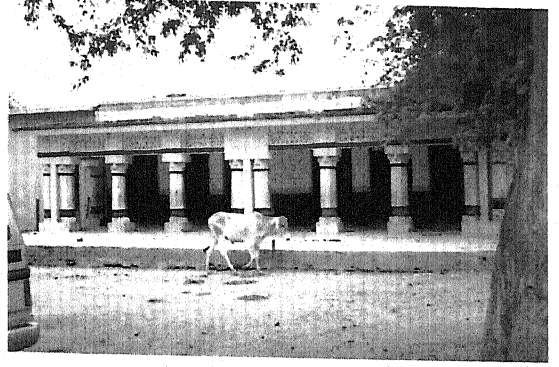
मगरौठ का नारायण घर

महिला सेनानी उर्मिला देवी के सम्मान का प्रतीक :स्वतंत्रता के रजत वर्ष का ताम्रपत्र

मगरौठ के गौरवशाली ध्वंशावशेष , एक झलक

मगरौठ का वह भवन जहां पर दीवान शत्रुघ्न सिंह का जन्म हुआ था।
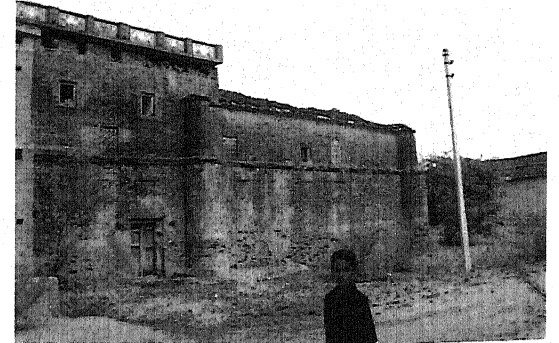
महान स्वातन्त्र्य शूरमा दीवान साहब के मगरौठ भवन का दृश्य

कुलपहाड़ का बालेन्दु जी का वह भारती भवन जो स्वातन्त्र्य संघर्ष के शीर्ष शूरों का स्थल रहा ।

बुन्देलखण्ड के सारिणी रानी राजेन्द्र कुमारी की समाधि का एक दृश्य।

बुन्देलखण्ड केसरी दीवान शत्रुघ्न सिंह, मगरौठ द्वारा निर्मित जयपथ प्रकाश मन्दिर; जिसका आज कोई पुरसाहाल नहीं है।
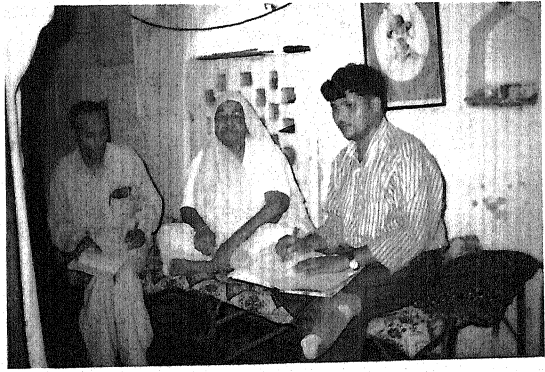
प्रमुख क्रांतिनेत्री किशोरी देवी अरजरिया, कुलपहाड़ के साथ गवेषक सत्यप्रकाश गुप्ता और लालचन्द्र अनुरागी।
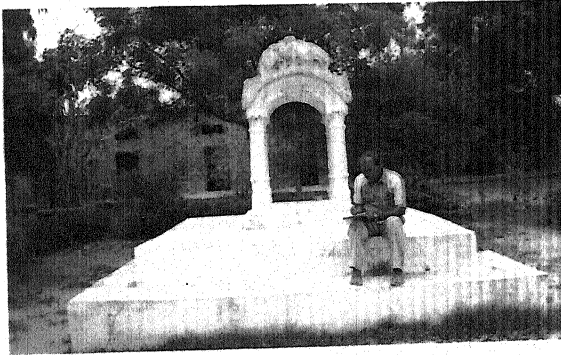
गांधी सम्मान का प्रतीक : मगरौठ का गांधी स्मारक

दीवान साहब तथा रानी साहिबा
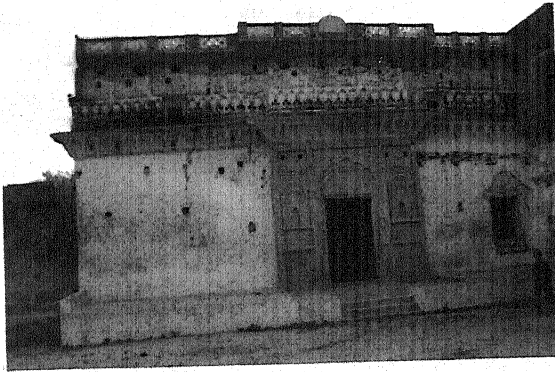
मगरौठ के भवन का एक और दृश्य
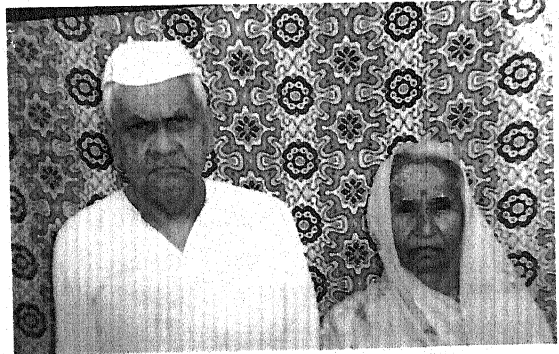
स्वातन्त्र्य शूर रतनलाल विद्यार्थी अपनी दम्पत्ति रामप्यारी देवी के साथ

महिला मण्डल में स्वातन्त्र्य सेनानी बिहारीलाल विश्वकर्मा की वीरांगना पत्नी कस्तूरी देवी

मगरौठ के पुरावैभव का प्रतीक, एक ध्वंशावशेषी दृश्य

बुन्देलखण्ड की शेरनी
रानी राजेन्द्र कुमारी
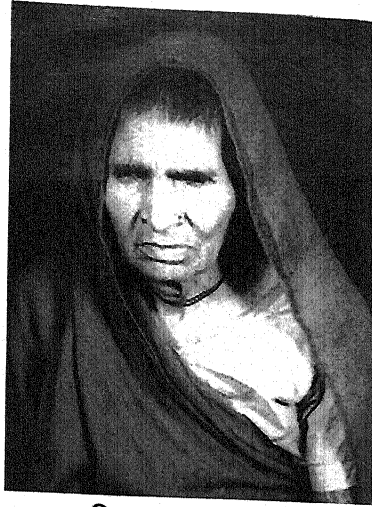
महिला स्वातन्त्र्य सेनानी
गुलाब देवी पत्नी बैजनाथ
लोधी

मगरौठ से तीन किमी0 दूर उरई
रोड पर अवस्थित महान स्वातन्त्र्य
शूरमा दीवान शत्रुघ्न की प्रतिमा

मगरौठ के भवन का वह
भोजनालय, जहां पर रानी राजेन्द्र
कुमारी भोजन बनाती थीं।
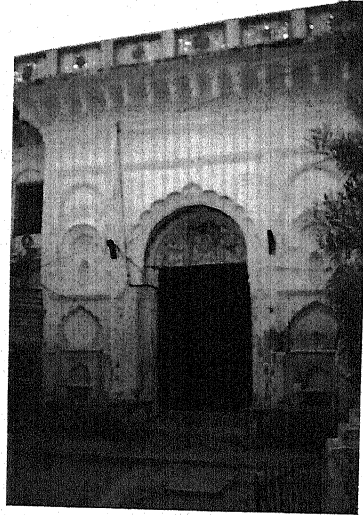
वह मकान जहां पर स्वातन्त्र्य चेता
भगवानदास बालेन्दु अरजरिया का जन्म
[illegible]
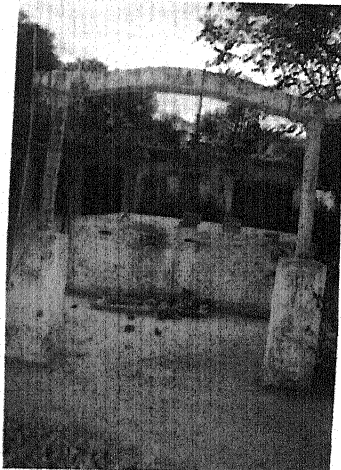
रानी राजेन्द्र कुमारी की समाधि का
एक और दृश्य

स्वातन्त्र्य सेनानी लक्ष्मीप्रसाद कोष्ठा